जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

स्थापित - 1906

सितम्बर 2024, पृष्ठ : 52, मूल्य 6:00 रूपये

मिथ्यात्व, आडंबर, आरंभ - समारंभ,
विलासिता भौतिकतारूपी दुर्गुणों के स्थान पर
समभाव, समत्व, वीतरागता, सद्वाणी सत्कर्म को
जीवन में अपनाना श्रेष्ठकर है।
इसे ही प्रभु ने आत्म - कल्याण का मार्ग बताया है।

आईए! इन पद चिन्हों पर चलकर
स्व कल्याण – पर कल्याण की भावना के साथ जिनशासन की शोभा को दीप्तिमान करें।

आगमज्ञाता, प्रज्ञा महर्षि श्रमणसंघ के भावी अनुशास्ता

युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज सा.

आपके 58वें जन्मदिवस - 5 अक्टूबर 1967 की हार्दिक - हार्दिक बधाईयाँ...!

!! श्री महावीराय नमः !!

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110001

भामाशाह श्रीमान रसिकलाल माणिकचन्द जी धारीवाल सांस्कृतिक हॉल

(पूर्णतया वातानुकूलित)

सहर्ष आपको सूचित किया जा रहा है कि जैन कॉन्फ्रेंस के मुख्यालय जैन भवन, नई दिल्ली में नव - निर्मित

भामाशाह श्रीमान रसिकलाल माणिकचन्द जी धारीवाल सांस्कृतिक हॉल (पूर्णतया वातानुकूलित)

शुभ विवाह, जन्म दिवस आदि पारिवारिक एवं अन्य आयोजनों के लिए उपलब्ध है।

सामाजिक संस्थाएँ, श्रीसंघ व **Corporate Houses** आदि भी धार्मिक, सामाजिक व सेमिनार आदि कार्यक्रमों के लिए सम्पर्क कर सकते हैं ।

कार्यक्रम आयोजन हेतु उपलब्ध सुविधायें :-

- नई दिल्ली के शालीन, आदर्श वातावरण के बीच **4500 Sq. Ft.** क्षेत्रफल में निर्मित।
- पूर्णतया सुसज्जित, वातानुकूलित व सुविधापूर्ण परिसर।
- कार पार्किंग की सुव्यवस्थित सुविधा उपलब्ध।
- हॉल की बुकिंग के साथ 2 वातानुकूलित कमरे उपलब्ध कराए जाएंगे।
- पूर्णतया सुरक्षित व पारिवारिक माहौल की अनुभूति ।
- भोजन आदि के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध ।

सहयोग राशि :-

24 घंटे की बुकिंग के लिए 61000/- रुपये की सहयोग राशि
(समय : रात्रि 12:00 बजे से अगले दिन रात्रि 12:00 बजे तक), दूसरे दिन के लिए विशेष छूट।

8 घंटे की बुकिंग के लिए 41000/- रुपये की सहयोग राशि
(समय : प्रातः 6 बजे से दोपहर 2 बजे तक तथा सायं 4 बजे से रात्रि 11 बजे तक)

-: ध्यानार्थ :-

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों व प्रान्तीय अध्यक्षों की अनुशंसा पर धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों हेतु विशेष छूट प्रदान की जाएगी ।

जैन कॉन्फ्रेंस सदस्य 20 प्रतिशत तक की छूट का लाभ उठा सकते हैं ।

स्थानकवासी जैन समाज के सामान्य परिवार भी छूट का लाभ उठा सकते हैं ।

-: विशेष :-

जैन भवन परिसर में स्थित जैन भोजनशाला में नाश्ता, शुद्ध सात्विक (लहसुन, प्याज़ व जिमीकंद रहित) भोजन के अलावा चाय, कॉफी, पानी व स्नैक्स आदि उपलब्ध।

जैन भवन में लगभग 30 ए. सी. कमरे उपलब्ध ।

!! अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र !!

व्हाट्सएप्प नम्बर : 9019731906 लैण्डलाइन नम्बर : 011 - 23363729 / 23365420

Email.: aissjc1906@gmail.com

* नियम व शर्तें लागू

!! कृष्णा ग्राफिक्स - 9717360488 !!

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 68 | अंक - 09 | सितम्बर - 2024 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक

अतुल जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल

संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560

एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

सम्पादकीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	09
अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	10
जैन नीति के मूल तत्व	- आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.	11-13
आचारांग सूत्र	- युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.	14-15
संसार पार करने का सेतू	- उपाध्याय मुनि श्री कन्हैयालालजी म.सा.	16-18
जैन श्रमण संघ	- उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.	19-20
श्री मदनलालजी म.सा.	- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	21-23
आहार शुद्धिःएक दृष्टि	- प्रवर्तक श्री गणेशमुनिजी म.सा.	24-26
मांसाहार का निषेध	- तत्वचिंतक श्री उत्तमुनिजी म.सा.	27-28
तत्त्वार्थ सूत्र	- प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.	29-30
महान युग पुरुष अमरमुनि...	- पू. डॉ. श्री वरूणमुनिजी म.सा.	31-34
श्रमण संघ के हित में सोचें	- श्री दिनेश भलगट जैन, चेन्नई	35-36
श्रमण संघ के भावी...	- श्री नेमीचंद दलाल जैन, बैंगलोर	37-38
संविधान बनाने में जैनों का योगदान	- साभार सोशल मीडिया	38
ऐंद्रजालिक गुण सौरभ	- श्री संजीव जैन, करनाल	39-40
सादगी सरलता की...	- श्री राजेश भागचंद डुंगरवाल जैन, लातूर	41
हानिकारक है : जायकेदार...	- श्री पदमचंद गांधी जैन, जयपुर	42-43
समाचार प्रकाश		45-50
शोक समाचार		50

अस्वीकरण : समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
03.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
04.	श्री प्रकाश बुरड़ जैन, बैंगलोर	98456 71449
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
06.	श्री जसवंत जैन, नई दिल्ली	98104 35108
07.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
08.	श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा	94141 13056
09.	श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
10.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
11.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
12.	श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत	98251 35744

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-24

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई 98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन
श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली 98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई 98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत 98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे	98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर	93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई 98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर	98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद	92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई	98842 21003
श्री सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई	94440 66089
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर	98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली	98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर	78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली	98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता	98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना	70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे	98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई	98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी	87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर	94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली 98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष
श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली 98104 35108

जीवन प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे	98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे	98903 01635

मानव सेवा योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर	93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर	98452 21302

जीव दया योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत	70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई	98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर	83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर	94480 81348

वैय्यावच्च योजना
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	98220 31788

अल्पसंख्यक योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर	98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर	92149 63701

विहारधाम योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती	98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर)	98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री
श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर	98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद	92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली	93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना	98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर	98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत	98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49443
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747
श्री गणेश ओसवाल जैन, पुणे	99218 79613

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

-: आवश्यक सूचना :-

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, समस्त योजना अध्यक्ष एवं मंत्रीजी, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री, समस्त प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री आदि से नम्र निवेदन है कि जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ गतिविधियों के जो भी समाचार हों, वे आपके द्वारा अथवा आपके अधिकृत पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक महीने की 30 तारीख तक समस्त जानकारी के साथ संक्षिप्तः रूप से भिजवाने का श्रम करें, अधिकृत रूप से प्रेषित सामग्री को जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ प्रमुखता दी जायेगी।

– सम्पादक मण्डल : जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	**रु. 1000/-**
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता 12 वर्ष	रु. 1000/-

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह

व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 70197 31906 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पदम चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर	99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे	88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर	99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर	93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद	95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई	99403 25649
श्री श्रेयांस जैन, लुधियाना	98557 99909
श्री अंश रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 93861
श्री नितिन राय जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री लोकेश धाकड़ जैन, उदयपुर	98280 50143
श्री विकास जैन, सूरत	93770 41606
श्री दिनेश हंसमुख बंबकी जैन, दापोली	94223 82620
श्री अंकित अनिल संचेती जैन, नासिक	83800 00208
श्री प्रितेश प्रदीप गादिया जैन, शिरूर	98229 82244
श्री वैभव तातेड़ जैन, इन्दौर	98264 81900
श्री सागर प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	90289 59000

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री मुकेश बाबेल जैन, बैंगलोर	98444 13227
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद	98851 85598
श्री आशीष रांका जैन, चेन्नई	98400 85846
श्री कुणाल जैन, लुधियाना	99140 14010
श्री सुमित जैन, करनाल	98124 75000
श्री पुनीत जैन, गाज़ियाबाद	95013 67207
श्री पानिल पोखरणा जैन, उदयपुर	97722 67444
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम	94245 29556
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद	98258 08580
श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर	98865 02636
श्री लोकेश जैन, दिल्ली	98682 03098
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर	94250 64243
श्री केतन दुग्गड़ जैन, पुणे	98605 56838
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर	98455 53001
श्री सुभाष डंक जैन, हुबली	99002 69151

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर	96118 28888
श्री नीलेश कांकरिया जैन, वाघोली	97672 94085
श्री विनय जैन, लुधियाना	95010 03864

राष्ट्रीय युवा संगठन मंत्री :

श्री राकेश बोहरा जैन, बैंगलोर	98443 27580
श्री मुकेश जैन, लुधियाना	98156 09170
श्री गौरव कोठारी जैन, वडगांवशेरी	90284 43181

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर	98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर	98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर	98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर	98861 84743

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी	98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक	95412 12000

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली	98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा	94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर	89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर	89705 60900

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक	98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु	98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब	88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा	92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश	87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली	99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान	94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश	94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र	94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे	79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात	93745 44138

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक	98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु	98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब	99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा	94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश	93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली	98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान	94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश	98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र	92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे	93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत	93745 44139

सम्पादकीय

जिनवाणी से पुष्पित हो श्रमण संघ !

E-mail: ajvk1973@gmail.com

- अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस

आदरणीय पाठकगण-आत्मप्रिय बंधुओं,

सादर जय जिनेन्द्र !

दिनांक 18 सितम्बर को श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर, युग प्रधान आचार्य भगवन् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. का पावन जन्मोत्सव हम सभी खूब धर्म-ध्यान और हर्षोल्लास के साथ सादगीपूर्ण कार्यक्रमों के साथ देशभर में मनाया।

आचार्यश्रीजी 36 गुणधारी, ध्यान के प्रणेता है। भगवान महावीर के ध्यान मार्ग की साधना करने वाले ऐसे साधक है, जिन्होंने भगवान की वाणी को जन-जन तक पहुंचाने के साथ ही तीर्थंकरों का साधना मार्ग भी जन-जन तक पहुंचाया। आपश्रीजी श्रमण संघ ही नहीं अपितु समस्त धर्म संघ के सिरमौर है। आचार्य भगवन के नेतृत्व में लाखों साधकों ने ध्यान पद्धति को सीखा व जीवन में अपनाया।

आचार्यश्रीजी ने भारतीय धर्मों में (मुक्ति की अवधारणा-विशेष जैन धर्म सदर्भ में) विषय पर पाँच वर्षों तक शोध किया तथा उन्हें पी.एचडी की उपाधि मिल गई। उनके अध्यात्म का मुख्य विषय ध्यान है।

मुनि दीक्षा के पश्चात आप उस मार्ग पर अग्रसर हुए जो आपको अभीष्ट था। वह मार्ग था साधना का, संघ सेवा का, मानवता के कल्याण का और आत्म साक्षात्कार का। आपने अपने संयमी जीवन में अप्रमत्त भाव से स्वाध्याय और ध्यान साधना का संबल लेकर भारत की आर्य परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखा है। आपको अपने दादा गुरु आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्मा राम जी महाराज की ध्यान साधना की परम्परा को जन-जन तक पहुंचाकर उसे एक आध्यात्मिक आंदोलन का रूप प्रदान करने का श्रेय प्राप्त है।

आपको 9 जून, 1999 में अहमदनगर में श्रमण संघ के आचार्य सम्राट के पद से विभूषित किया गया। इतने उच्च पदों को प्राप्त कर आपने कहा मैं श्रमण संघ के अविचल और मंगल के लिए समर्पण भाव से कार्य करूंगा। आप अब तक इस कार्य में सलंग्न हैं और श्रमण संघ आपके कुशल नेतृत्व में उत्तरोत्तर उन्नति के शिखरों पर है। आपने आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्मारामजी म.सा. के समस्त साहित्य का पुनः प्रकाशन करवाकर जैन साहित्य की मंजूषा को भर दिया। आपकी उत्कृष्ट भावना है कि लोग अध्यात्म साधना के साथ-साथ स्वाध्याय प्रेमी भी बनें। आचार्य भगवन के चरणों में कोटिशः नमन ! जिनशासन देव से प्रार्थना है कि आचार्यश्रीजी स्वस्थ रहे, दीर्घायु हो व श्रमण संघ का इसी प्रकार नेतृत्व करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस का मार्गदर्शन करते रहें।

दिनांक 05 अक्टूबर को हम सभी देशभर में युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. का जन्मदिवस सादगीपूर्ण वातावरण में हर्षोल्लास के साथ मनाएंगे।

स्वर्णिम दिवस 3 फरवरी 1982 को पुणे स्थित नेहरू स्टेडियम में आपके सांसारिक जीवन से संयमित जीवन की ओर प्रवेश का दिन था। गुरुदेव आचार्य पूज्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. ने आपको संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, मराठी, अंग्रेजी इत्यादि भाषाओं का ज्ञान अर्जन करवाया। अर्जित ज्ञान को अपने प्रवचनों के माध्यम से जनता तक पहुंचाने की वाक कला भी आपने गुरुदेव से ही सीखी। आपके कवित्व एवं व्यक्तित्व में आचार्य आनंदऋषिजी म.सा. के अनेक गुणों की झलक दिखलाई प्रतीत होती है आप मधुर वक्ता मिलनसार मधुर कंठ के धनी रहे हैं।

आपके द्वारा प्रमुख साहित्य संपादन निम्न हैः आनंद स्वर लहरिया, गीत-आनंद की सरगम, गीत-आनंद के स्वर, गीत-सुमिरन जिनेश्वर का, प्रवचन-गुरु आनंद प्रसादी, दोहे -आनंद स्त्रोत महक, थोकड़े इत्यादि प्रमुख रहे हैं।

आपके जन्मदिवस के इस अवसर पर संपूर्ण संघ, समाज और जैन कॉन्फ्रेंस परिवार यही भावना रखता है कि आप स्वस्थ और प्रसन्न तो रहे ही साथ ही जिनवाणी को अपने मुखारविंद से पल्लवित एवं सुवासित करें और श्रमण-श्रमणी संघ को नई ऊंचाइयों की ओर ले जाएं। ❖❖

अध्यक्षीय उद्गार

साधु जीवन का श्रृंगार है 'समाचारी'

E-mail : rjachallani@gmail.com

- आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

आदरणीय पाठकगण, सादर जय जिनेन्द्र !

अभी कुछ दिन पूर्व ही हम सबने पर्युपासना का महान पर्व पर्युषण सानन्द सम्पन्न किया। इस महापर्व पर हम सबने यथाशक्ति जप-तप-दान-सेवा से अपनी आत्मा को प्रसन्न करने का कार्य किया है। वहीं संवत्सरी पर अहोभाव से भरकर परस्पर क्षमायाचना भी की। यह सब क्यों किया? क्योंकि यह सारी क्रियाएं ज्ञान-दर्शन, तप-चारित्र के साथ जुड़ी हुई हैं।

आज के युग में चरित्र निर्माण की सर्वाधिक आवश्यकता है। स्मरण रहे हमारे युग प्रधान आचार्य ध्यानयोगी महान तपस्वी पू. गुरुदेव डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. जो आज हमारे सबसे बड़े आदर्श हैं, वे सभी साधकों, त्यागात्माओं को एक ही आग्रह करते हैं कि प्रत्येक भव्य आत्मा श्रमण संघ की समाचारी से जुड़ी रहे। अपने चरित्र, अपनी निर्मल चर्या से उदाहरण बनकर जन-जन को सद्मार्ग के मंगल पथ पर आगे बढ़ने को प्रेरित करें।

परम पूज्य आचार्य भगवन् का यह संदेश जैनत्व के सर्वोदयी आचार-पथ का आरोहण करने की प्रेरणा है। इस पर समस्त महान संतों, पूज्या साध्वीजी म. और सभी श्रावक-श्राविकाओं को दृढ़ रहने की आवश्यकता है।

हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि सम्पूर्ण देश में इन दिनों चातुर्मास गतिमान है। समस्त पूज्य संत-साध्वीजी म.सा. इन चातुर्मासों में अपनी प्रेरणा, प्रवचन प्रभावना और ज्ञान-ध्यान से श्रावक-श्राविकाओं में धर्म प्रेरणा भरने का कार्य कर ही रहे है। वहीं कुछ स्थानों पर ऐसी गतिविधियाँ भी देखने-सुनने में आ रही हैं जो चिन्तनीय भी है और समाचारी के विरुद्ध भी हैं। कुछ स्थानों पर स्थानकवासी धर्म परम्परा के विरुद्ध आडम्बरों से जुड़े हुए कार्य हो रहे हैं। कहीं श्रमण संघ के सर्वोच्च शिखर को अनदेखा करते हुए जय-जयकार तक लगाने में कोताही की जा रही है। यह सब देखकर मन को बड़ा दुःख होता है। क्योंकि हमारी परम्परा केवल और केवल आत्मवादी गुणधर्मी, सरलमार्गी परम्परा है। इसमें ज्ञान-ध्यान, तप-दान सेवा के अतिरिक्त पापाश्रव को पनपाने वाली किसी भी गतिविधि को स्थान नहीं। जो मन-वचन-काया से संवर साधना में आत्मशुद्धि में बाधा उपस्थित करती हो।

यहाँ मेरी सभी श्रमण संघ प्रेमी महान आत्माओं से एक ही प्रार्थना है कि हम अपने अनुशासन, एकता, संवाद और समन्वय को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए जिस मंगल प्रेरणा से भगवान् महावीर ने हमें जोड़ा है, उस पर ध्यान दें, उस समाचारी पर ध्यान दें जो श्रमण संघ की स्थापना के समय **'एक संघ-एक आचार्य-एक समाचारी'** के निर्णय के साथ सम्पन्न हुई थी।

उस समाचारी ने ही हमारी मान-प्रतिष्ठा को सदैव कायम रखा है। हमारे बड़े-बड़े महापुरुष ये कहा करते थे कि **'जहां समाचारी नहीं वहां साधुत्व भी नहीं।'** इस चेतावनी को यदि हम विनम्रतापूर्वक स्मरण में रखेंगे तो हमारी यश-कीर्ति से कोई खेल नहीं सकता। हमारी मान-प्रतिष्ठा और हमारी एकता को तोड़ने का काम कोई भी शक्ति नहीं कर सकती।

अन्त में इतना ही निवेदन करूंगा कि हम स्वयं को देखें और स्वयं को ही सुधारें। हमारे ज्ञान-ध्यान पर, स्वाध्याय पर, परस्पर स्नेह पर हम जितना अधिक ध्यान देंगे, उतना ही हमें यश प्राप्त होगा, मान प्राप्त होगा और प्रभु कृपा से, गुरु कृपा से जो हमारा लक्ष्य है, वह भी हमें सहज प्राप्त होगा।

हमारे आचरणों में विनम्रता, पवित्रता भी आएगी और हम एक लोकतांत्रिक नागरिक की तरह सर्व साधारण समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे। जैनत्व का सार ही यही है कि हम राष्ट्र धर्म से लेकर आत्म धर्म तक सफलता प्राप्त करें। यह सफलता हमें तभी प्राप्त होगी जब हम समाचारी अनुसार अपना आचरण बनाए रखकर हर कसौटी पर खरे सिद्ध होंगे।

यही निवेदन करते हुए मैं यदि कुछ ऐसा कह गया हूँ जो किसी को चुभ रहा हो तो मैं हृदय से क्षमायाचना करते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूँ। ❖❖

जैन नीति के मूल तत्व

- आचार्य सम्राट पू. श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.

उपरोक्त सामान्य और विशिष्ट नीति के सिद्धान्तों को भली भांति हृदयंगम करने के लिए यह अधिक उपयोगी होगा कि जैन नीति अथवा भगवान महावीर की नीति के मूल आधारभूत तत्वों को इनके हार्द को समझ लिया जाय।

जैन नीति के मूल तत्व हैं, पुण्य, संवर और निर्जरा। ध्येय है-मोक्ष और आस्रव, बन्ध तथा पाप अनैतिक तत्व हैं। जैन नीति का सम्पूर्ण भवन इन्हीं पर टिका हुआ है।

पाप अनैतिक है, पुण्य नैतिक, आश्रव अनैतिक है, संवर नैतिक, बंध अनैतिक है, निर्जरा नैतिक। इस सूत्र के आधार पर ही सम्पूर्ण जैन नीति को समझा जा सकता है।

पाप और पुण्य शब्दों का प्रयोग तो संसार की सभी नीति और धर्म परम्पराओं में हुआ है। सभी ने पाप को अनैतिक बताया और पुण्य की गणना नीति में की है। यह बात अलग है कि उनकी पाप पुण्य की परिभाषाओं में अन्तर है। इनकी परिभाषाएँ उन्होंने अपनी-अपनी परम्पराओं में बँधकर की है, किन्तु आस्रव संवर और निर्जरा ये जैन नीति के विशेष शब्द हैं। इनका अर्थ समझ लेना अभीष्ट होगा।

आस्रव का नीतिपरक अभिप्राय है-वे सभी क्रियाएँ, जिनको करने से व्यक्ति का स्वयं का जीवन दु:खी हो, समाज में अव्यवस्था फैले, आतंक बढ़े, उग्रवाद पनपे, समाज के, देश के, राष्ट्र, राज्य और संसार के अन्य प्राणियों का जीवन उत्पीड़ित व दु:खी हो जाय, वे कष्ट में पड़ जाये।

जैन-नीति ने आस्रवों के प्रमुख पाँच भेद माने हैं -

(1) मिथ्यात्व (गलत धारणा)

(2) अविरति (आत्मानुशासन का अभाव)

(3) प्रमाद (जागरूकता का अभाव असावधानी)

(4) कषाय (क्रोध, मान, कपट, लोभ आदि मानसिक संक्लेश) और -

(5) अशुभ योग (मन, वचन, काव्य की निन्य एवं कुत्सित वृत्तियां)

दूसरी अपेक्षा से भी पाँच प्रमुख आस्रव हैं - **(1)** हिंसा **(2)** मृषावाद-असत्य भाषण **(3)** चौर्य **(4)** अब्रह्म-सेवन और **(5)** परिग्रह। स्पष्ट है कि यह सभी आस्रव अनैतिक हैं, समाज एवं व्यक्ति के लिए दु:खदायी हैं, अशांति, विग्रह और उत्पीड़न करने वाले हैं। इन आस्रवों को-अनैतिकताओं को अनैतिक प्रवृत्तियों को रोकना, इनका आचरण न करना, संवर है - नीति है, सुनीति है।

हिंसा आदि पाँचों आस्रवों को पाप भी कहा जाता है, इसीलिए पाप अनैतिक है। किसी का दिल दुखाना, शारीरिक -मानसिक चोट पहुँचाना, झूठ बोलना, चोरी करना, धन अथवा वस्तुओं का अधिक संग्रह करना आदि असामाजिकता है, अनैतिकता है।

आज समाज में जो विग्रह, वर्ग-संघर्ष, अराजकता आदि पनप गये हैं, इनका मूल कारण उपरोक्त अनैतिक आचरण और व्यवहार ही है। एक ओर धन के ऊँचे अम्बार और दूसरी ओर निर्धनता एवं अभाव की गहरी खाई ने ही वर्ग संघर्ष और असन्तोष को जन्म दिया है, जिसके कारण देश में, संसार में विप्लव उठ खड़ा हुआ है।

इस पाप रूप अनैतिकता के विपरीत अन्य व्यक्तियों को सुख पहुँचाना, अभावग्रस्तों का अभाव मिटाना, रोगी आदि की सेवा करना, समाज में शान्ति स्थापना के कार्य करना, धन का अधिक संग्रह न करना, कटु शब्द न बोलना, मिथ्या भाषण न करना, चोरी, हेरा-फेरी आदि न करना पुण्य है, नैतिकता है, नीतिपूर्ण आचरण है।

धर्म शास्त्रों के अनुसार बंध का अभिप्राय है-अपने ही किये कर्मों से स्वयं ही बंध जाना; किन्तु नीति के सन्दर्भ में इसका अर्थ विस्तृत है, व्यक्ति अपने कार्यों के जाल में स्वयं तो फँसता ही है, दूसरों को भी फँसाता है। जैसे मकड़ी जाला बुनकर स्वयं तो उसमें फँसती ही है, किन्तु उसकी नीयत मच्छरों को उस जाल में फँसाने की होती है और फँसा भी लेती है।

इसी तरह कोई व्यक्ति झूठ-कपट का जाल बिछाकर, लच्छेदार और खुशामद-भरी मीठी-मीठी बातें बनाकर अन्य लोगों को अपनी बातों में बहलाता है, भुलावा देकर उन्हें वाग्-जाल में फँसाता है, उन्हें वचन की डोरी से बाँधता है, जकड़ता है तो उसके ये सभी क्रिया-कलाप, वाग्जाल बंधन

रूप होने से जैन नीतिशास्त्रः एक परिशीलन नीतिशास्त्र के दृष्टिकोण से निर्जरा है - ऐसे वागू-जालों में किसी को न फँसाना, झूठ-कपट और लच्छेदार शब्दों में किसी को न बाँधना और यदि पहले कषाय आदि के आवेग में किसी को इस प्रकार बंधन में ले लिया हो तो उसे वचनमुक्त कर देना, साथ ही स्वयं भी उस बंधन से मुक्त हो जाना।

इसी बात को हेमचन्द्राचार्य ने इन शब्दों में कहा है -

आस्रवो भवहेतु स्याद् संवरो मोक्ष कारणम् ।
इतीयमार्हती दृष्टिरन्यदस्या प्रपंचनम् ।।

- वीतराग स्रोत -

(आस्रव भव का हेतु है और संवर मोक्ष का कारण है। दूसरे शब्दों में आस्रव अनैतिक है तथा संवर नैतिक है। यह आर्हत (अरिहंत भगवान तथा उनके अनुयायियों की) दृष्टि है और सब इसी का विस्तार है।)

जैन दृष्टि के इन मूल आधारभूत तत्वों के प्रकाश में अब हम तीर्थंकर महावीर की नीति को समझने का प्रयास करेंगे।

श्रमण और श्रावक : तीर्थंकर के अनुयायियों का वर्गीकरण श्रमण और श्रावक इन दो प्रमुख वर्गों में किया जा सकता है। इन दोनों ही वर्गों के लिए आचरण के स्पष्ट नियम निर्धारित कर दिये गये हैं। पहले हम श्रमणों को ही लें।

श्रमणाचार में नीति : श्रमण के लिए स्पष्ट नियम है कि वह अपना पूर्व परिचय-गृहस्थ जीवन का परिचय श्रावक को न दे। सामान्यतया श्रमण अपने पूर्व जीवन का परिचय श्रावकों को देते भी नहीं; किन्तु कभी-कभी परिस्थिति ऐसी उत्पन्न हो जाती है कि परिचय देना अनिवार्य हो जाता है, अन्यथा श्रमणों के प्रति आशंका हो सकती है।

इसे एक दृष्टान्त से समझिये -

भगवान नेमिनाथ के शिष्य छह मुनि थे-अनीकसेन आदि। यह छहों सहोदर भ्राता थे, रूप-रंग, वय आदि में इतनी समानता थी कि इनमें भेद करना बड़ा कठिन था। दो-दो के समूह में वह छहों अनगार देवकी के महल में भिक्षा के लिए गये। देवकी के हृदय में यह शंका उत्पन्न हो गयी कि ये दो ही साधु मेरे घर भिक्षा के लिए तीन बार आये हैं। जबकि श्रमण नियम से एक दिन में दो बार भिक्षा के लिए नहीं जाता।

देवकी की इस शंका को मिटाने के लिए साधुओं ने अपना पूर्व-परिचय दिया जोकि उस परिस्थिति में अनिवार्य था।

इसीलिए भगवान ने साधु के लिए उत्सर्ग और अपवाद-दो मार्ग बताये हैं। उत्सर्ग (सामान्य) मार्ग में तो पूर्व-परिचय साधक देता नहीं, लेकिन अपवाद मार्ग (विशेष परिस्थिति) में यदि परिस्थिति उत्पन्न हो जाए तो दे सकता है। यह अपवाद -मार्ग जैन साध्वाचार में नीति का द्योतक है।

इसी प्रकार केशी श्रमण ने जब गौतम गणधर से भगवान पार्श्वनाथ की सचेलक और भगवान महावीर की अचेलक धर्म-नीति के भेद के विषय में प्रश्न किया तो गणधर गौतम का उत्तर नीति का परिचायक है। उन्होंने बताया कि सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित्र-तप की साधना ही मोक्षमार्ग है। वेष तो लोक प्रतीति के लिए होता है।

इसी प्रकार के अन्य दृष्टान्त श्रमणाचार सम्बन्धी दिये जा सकते हैं, जो सीधे व्यावहारिक-नीति अथवा लोकनीति से सम्बन्धित हैं।

अब हम भगवान महावीर की नीति विशिष्ट नीति का वर्णन करेंगे, जिस पर अन्य विचारकों ने बिल्कुल भी विचार नहीं किया है और यदि किया भी है तो बहुत कम किया है।

भगवान महावीर की विशिष्ट नीति : भगवान महावीर की विशिष्ट नीति के मूलभूत प्रत्यय हैं-अनाग्रह, यातना, समता, अप्रमाद, उपशम आदि।

अनाग्रह नीति : अनाग्रह का अभिप्राय है-अपनी बात का, धारणा का आग्रह न करना। भगवान महावीर तथा अन्य सभी तीर्थंकरों और भगवान महावीर के सभी अनुयायियों-श्रमण साधुओं की यह नीति रही है कि वे जिज्ञासु के सामने सत्य-तथ्य खोलकर रख देते हैंय तर्क, हेतु, आगम, प्रमाण आदि से वस्तु तत्व को समझा देते हैं; किन्तु जिज्ञासु से वह आग्रह नहीं करते कि उनकी बातों को स्वीकार कर ही ले। स्वीकार करना अथवा न करना, वे उस जिज्ञासु के विवेक पर छोड़ देते हैं।

इसीलिए भगवान महावीर ने एक सूत्र दिया -

पन्ना समक्खिए धम्मं ।

अपनी प्रज्ञा से धर्म की समीक्षा करो।

धर्म को समझने के बाद जब कोई उसे स्वीकार करने के लिए भगवान महावीर से पूछता है तो वे एक ही उत्तर देते हैं -

अहासुहं देवाणुप्पिया !

देवानुप्रिय, तुम्हें जैसा सुख हो, वैसा करो।

धार्मिक जगत में अनाग्रह की यह नीति जितनी महत्वपूर्ण है, उतनी ही लौकिक जगत में भी है। आग्रह से व्यक्ति दबाव का अनुभव करता है, वह समझता है कि उसे अनुचित दबाया जा रहा है फिर उसके मन में इस क्रिया की प्रतिक्रिया होती है, विरोधी भाव उत्पन्न होते हैं, विग्रह के बीज पड़ते हैं, परस्पर मन-मुटाव होता है। धीरे-धीरे बढ़कर यह परिवार और समाज में विश्रृंखलता उत्पन्न करता है।

आज संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, भाई-भाई में विरोध हो रहा है, इस सबके मूल में आग्रह ही है और यदि आग्रह हठाग्रह अथवा कदाग्रह बन जाए तब तो स्थिति और भी विषम हो जाती है। आज संसार के सभी औद्योगिक देश दबाव समूहों (Pressure Groups) से संत्रस्त हैं। ये समूह अनुचित रूप से घोर आग्रहपूर्ण ढंग से दबाव द्वारा अपने हक (Arrogation) माँगते हैं। उनकी यह नीति दुर्नीति है। यदि आज संसार भगवान महावीर की अनाग्रह की नीति अपना ले तो संसार में सुख-शांति की सरिता बहने लगे।

अनेकांत नीति : अनेकांत किसी भी वस्तु को सभी दृष्टिकोणों से जानने की, विचार करने की नीति है। बहुत से लोग केवल अपने ही दृष्टिकोण से किसी घटना, तथ्य या वस्तु को देखते हैं और दूसरे के दृष्टिकोण की अवहेलना कर देते हैं। इसका परिणाम पारस्परिक विद्वेष के रूप में आता है। बहू पति पर अपना अधिकार मानती है, वह सास के अधिकार को भूल जाती है। यदि वह अनेकांत नीति का आश्रय ले, सभी के अधिकारों को स्वीकार करें तो पारिवारिक शांति कायम रहे।

यही बात वर्ग-संघर्ष के लिए है। समाज, देश अथवा राष्ट्र का एक वर्ग अपने ही दृष्टिकोण से सोचता है, उसी को उचित मानता है तथा अन्यों के दृष्टिकोण को अनुचित। वह उनके दृष्टिकोण का आदर नहीं करता, इसी कारण पारस्परिक संघर्ष होता है।

आर्य स्कन्दक[1] ने भगवान महावीर से पूछा-लोक शाश्वत है या अशाश्वत, अन्तसहित है या अन्तरहित?

लोक शाश्वत भी है और अशाश्वत भी। यह सदाकाल से रहा है, अब भी है और भविष्य में भी रहेगा, कभी इसका नाश नहीं होगा। इस अपेक्षा से यह शाश्वत है। साथ ही इसमें जो द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की अपेक्षा परिवर्तन होता है, उस अपेक्षा से अशाश्वत भी है।

इसी प्रकार भगवान ने स्कन्दक के सभी प्रश्नों के उत्तर दिये।

इस अनेकांत नीति से प्राप्त हुए उत्तरों से स्कन्दक सन्तुष्ट हुआ।

यदि भगवान अनेकांत नीति से उत्तर न देते तो स्कंदक भी संतुष्ट न होता और सत्य का भी अपलाप होता। सत्य यह है कि वस्तु का स्वभाव ही ऐसा है। वस्तु स्थिर भी रहती है उसी क्षण उसमें काल आदि की अपेक्षा परिवर्तन होते भी रहते हैं।

आज का विज्ञान भी इस तथ्य को स्वीकार कर चुका है, तभी आइन्सटीन आदि वैज्ञानिकों ने अनेकांत नीति की सराहना की है, भगवान महावीर की अनुपम देन माना है और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए इसे बहुत उपयोगी स्वीकार किया। आइन्स्टीन का Theory of Relativity तो स्पष्ट सापेक्षवाद अथवा अनेकांत ही है।

यतना नीति : यतना का अभिप्राय है - सावधानी। नीति के संदर्भ में सावधानी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है। भगवान ने बताया कि सोते-जागते, चलते, उठते, बैठते, बोलते-प्रत्येक क्रिया को यतनापूर्वक[2] करना चाहिए।

सावधानीपूर्वक व्यवहार से विग्रह की स्थिति नहीं आती, परस्पर मन-मुटाव नहीं होता, किसी प्रकार का संघर्ष नहीं होता।

यतना का एक अर्थ है - यत्नपूर्वक, सावधान - एलर्ट - चीकन्ने होकर कार्य करो। दूसरा अर्थ है - यतना - उस कार्य में विवेक एवं संयम रखो, अपने आप पर सेल्फ कन्ट्रोल - आत्मनियंत्रण करके काम करो।

❖❖

साभार :- !! आचारांग सूत्र - 1 !!

'सत्थपरिण्णा' पढमं अज्झयणं' : पढमो उद्देसओ

'शस्त्रपरिज्ञा' प्रथम अध्ययन : प्रथम उद्देशक

- युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.

अस्तित्व बोध :

सुयं में आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं -
इहमेगेसिं णो सण्णा भवति । तं जहा -
पुरत्थिमातो वा दिसातो आगतो अहमंसि,
दाहिणाओ वा दिसाओ आगतो अहमंसि,
पच्चत्थिमातो वा दिसातो आगतो अहमंसि,
उत्तरातो वा दिसातो आगतो अहमंसि,
उड्ढातो वा दिसातो आगतो अहमंसि,
अहेदिसातो वा आगतो अहमंसि,

अन्नतरीतो दिसातो वा अणुदिसातो वा आगतो अहमंसि।

एवमेगेसिं णो णातं भवति-अत्थि मे आया उववाइए, णत्थि मे आया उववाइए, के अहं आसी, के वा इओ चुओ पेच्चा भविस्सामि।

१ : आयुष्मन् ! मैंने सुना है। उन भगवान् (महावीर स्वामी) ने यह कहा है - यहां संसार में कुछ प्राणियों को यह संज्ञा (ज्ञान) नहीं होती। जैसे -

"मैं पूर्व दिशा से आया हूँ, अथवा दक्षिण दिशा से आया हूँ अथवा पश्चिम दिशा से आया हूँ अथवा उत्तर दिशा से आया हूँ अथवा ऊर्ध्व दिशा से आया हूँ अथवा अधो दिशा से आया हूँ अथवा किसी अन्य दिशा से या अनुदिशा (विदिशा) से आया हूँ।

इसी प्रकार कुछ प्राणियों को यह ज्ञान नहीं होता कि मेरी आत्मा औपपातिक-जन्म धारण करने लगी है अथवा नहीं? मैं पूर्व जन्म में कौन था? मैं यहाँ से च्युत होकर / आयुष्य पूर्ण करके अगले जन्म में क्या होऊंगा?"

विवेचन-चूर्णि एवं शीलांकवृत्ति में '' आउसं'' के दो पाठान्तर भी मिलते हैं-आवसंतेणं तथा आमुसंतेणं। क्रमशः उनका भाव है - 'भगवान् के निकट में रहते हुए तथा उनके चरणों का स्पर्श करते हुए' मैंने यह सुना है। इससे यह सूचित होता है कि सुधर्मास्वामी ने यह वाणी भगवान् महावीर से साक्षात् उनके बहुत निकट रहकर सुनी है।

संज्ञा का अर्थ है, चेतना। इसके दो प्रकार हैं, ज्ञान-चेतना और अनुभव चेतना। अनुभव चेतना (संवेदन) प्रत्येक प्राणों में रहती है। ज्ञान चेतना विशेष-बोध किसी में कम विकसित होती है, किसी में अधिक। अनुभव-चेतना (संज्ञा) के सोलह एवं ज्ञान-चेतना के पाँच भेद हैं।

चेतन का वर्तमान अस्तित्व तो सभी स्वीकार करते हैं, किन्तु अतीत (पूर्व-जन्म) और भविष्य (पुनर्जन्म) के अस्तित्व में सब विश्वास नहीं करते। जो चेतन की त्रैकालिक सत्ता में विश्वास रखते हैं वे आत्मवादी होते हैं। यद्यपि बहुत से आत्मवादियों में भी अपने पूर्वजन्म की स्मृति नहीं होती, कि "मैं यहाँ - संसार में किस दिशा या अनुदिशा से आया हूँ। मैं पूर्वजन्म में कौन था?" उन्हें भविष्य का यह ज्ञान भी नहीं होता कि "यहाँ से आयुष्य पूर्ण कर मैं कहाँ जाऊंगा! क्या होऊंगा?"

पूर्वजन्म एवं पुनर्जन्म सम्बन्धी ज्ञान-चेतना की चर्चा इस सूत्र में की गई है।

निर्युक्तिकार आचार्य भद्रबाहु ने 'दिशा' शब्द का विस्तार से विवेचन करते हुए बताया है 'जिधर सूर्य उदय होता है उसे पूर्वदिशा कहते हैं। पूर्व आदि चार दिशाएं ईशान, आग्नेय, नैऋत्य एवं वायव्यकोण, ये चार अनुदिशाएं, तथा इनके अन्तराल में आठ विदिशाएँ, ऊर्ध्व तथा अधोदिशा-इस प्रकार 18 द्रव्य दिशाएं हैं। मनुष्य, तिर्यंच, स्थावरकाय और वनस्पति को 4-4 दिशायें तथा देव एवं नारक इस प्रकार 18 भावदिशाएं होती हैं।'

मनुष्य की चार दिशाएं - सम्मूच्छिम, कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज, अन्तरद्वीपज ।

तिर्यंच की चार दिशाएं - द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय ।

स्थावरकाय की चार दिशाएं - पृथ्वीकाय, अप्काय,

तेजस्काय और वायुकाय ।

वनस्पति की चार दिशाएं - अग्रबीज, मूलबीज, स्कन्धबीज और पर्वबीज।

2. से ज्जं पुण जाणेज्जा सहसम्मुइयाए[3] परवागरणेणं अण्णेसिं वा अंतिए सोच्चा, तं जहा-पुरत्थिमातो वा दिसातो आगतो अहमंसि एवं दक्खिणाओ वा पच्चत्थिमाओ वा उत्तराओ वा उड्ढाओ वा अहाओ वा अन्नतरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा आगतो अहमंसि।

एवमेगेसिं जं णातं भवति-अत्थि मे आया उववाइए जो इमाओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा अणुसंचरति, सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ जो आगओ अणुसंचरइ सोहं।

3. से आयावादी लोगावादी कम्मावादी किरियावादी।

2. कोई प्राणी अपनी स्वमति-पूर्वजन्म की स्मृति होने पर स्व-बुद्धि से, अथवा तीर्थंकर आदि प्रत्यक्षज्ञानियों के वचन से, अथवा अन्य विशिष्ट श्रुतज्ञानी के निकट में उपदेश सुनकर यह जान लेता है, कि मैं पूर्व दिशा से आया हूँ, या दक्षिण दिशा, पश्चिम दिशा, उत्तर दिशा, ऊर्ध्व दिशा या अधो दिशा अथवा अन्य किसी दिशा या विदिशा से आया हूँ।

कुछ प्राणियों को यह भी ज्ञात होता है-मेरी आत्मा भवान्तर में अनुसंचरण करने वाली है, जो इन दिशाओं, अनुदिशाओं में कर्मानुसार परिभ्रमण करती है। जो इन सब दिशाओं और विदिशाओं में गमनागमन करती है, वही मैं (आत्मा) हूँ।

3. (जो उस गमनागमन करने वाली परिणामी नित्य आत्मा को जान लेता है) वही आत्मवादी, लोकवादी, कर्मवादी एवं क्रियावादी है।

विवेचन - उक्त दो सूत्रों में चर्मचक्षु से परोक्ष आत्मतत्त्व को जानने के तीन साधन बताये हैं -

1. पूर्वजन्म की स्मृतिरूप जाति-स्मरणज्ञान तथा अवधिज्ञान आदि विशिष्ट ज्ञान होने पर, स्व-मति से,

2. तीर्थंकर, केवली आदि का प्रवचन सुनकर,

3. तीर्थंकरों के प्रवचनानुसार उपदेश करने वाले विशिष्ट ज्ञानी के निकट में उपदेश आदि सुनकर। उक्त कारणों में से किसी से भी पूर्व-जन्म का बोध हो सकता है। जिस कारण उसका ज्ञान निश्चयात्मक हो जाता है कि इन पूर्व आदि दिशाओं में जो गमनागमन करती है, वह आत्मा 'मैं' ही हूँ।

प्रथम सूत्र में **"के अहं आसी?"** मैं कौन था-यह पद आत्मसम्बन्धी जिज्ञासा की जागृति का सूचक है। और द्वितीय सूत्र में "सो हं" "वह मैं हूँ" यह पद उस जिज्ञासा का समाधान है-आत्मवादी आस्था की स्थिति है।[२]

परिणामी एवं शाश्वत आत्मा में विश्वास होने पर ही मनुष्य आत्मवादी होता है। आत्मा को मानने वाला लोक (संसार) स्थिति को भी स्वीकार करता है, क्योंकि आत्मा का भवान्तर-संचरण लोक में ही होता है। लोक में आत्मा का परिभ्रमण कर्म के कारण होता है, इसलिए लोक को मानने वाला कर्म को भी मानेगा तथा कर्मबन्ध का कारण है-क्रिया, अर्थात् शुभाशुभ योगों की प्रवृत्ति। इस प्रकार आत्मा का सम्यक् परिज्ञान हो जाने पर लोक का, कर्म का, क्रिया का परिज्ञान भी हो जाता है। अतः वह आत्मवादी, लोकवादी, कर्मवादी और क्रियावादी भी है।

आगे के सूत्रों में हिंसा-अहिंसा का विवेचन किया जायेगा। अहिंसा का आधार आत्मा है। आत्म-बोध होने पर ही अहिंसा व संयम की साधना हो सकती है। अतः अहिंसा की पृष्ठभूमि के रूप में यहाँ आत्मा का वर्णन किया गया है।

आस्रव-संवर-बोध :

4. अकरिस्सं च हूं, काराविस्सं च हूं, करओ यावि समणुण्णे भविस्सामि।

5. एयावति सव्वावति लोगसि कम्मसमारंभा परिजाणियव्वा भवंति।

4. (वह आत्मवादी मनुष्य यह जानता/मानता है कि) -

मैंने क्रिया की थी। मैं क्रिया करवाता हूँ। मैं क्रिया करने वाले का भी अनुमोदन करूँगा।

5. लोक-संसार में ये सब क्रियाएँ/कर्म-समारंभ (हिंसा की हेतुभूत) हैं, अतः ये सब जानने तथा त्यागने योग्य है।

विवेचन - चतुर्थ सूत्र में क्रिया के भेद-प्रभेद का दिग्दर्शन कराया गया है। क्रिया कर्मबन्ध का कारण है, कर्म से आत्मा संसार में परिभ्रमण करता है। अतः संसार-भ्रमण से मुक्ति पाने के लिए क्रिया का स्वरूप जानना और उसका त्याग करना नितांत आवश्यक है।

(... क्रमशः)

संसार पार करने का सेतु है : सेवा

- उपाध्याय मुनि श्री कन्हैयालालजी म.सा. 'कमल'

महानुभावों ! आज के प्रवचन में जिस विषय पर मुझे चर्चा करनी है, वह विषय है, सेवा। सेवा शब्द से आप सभी परिचित हैं। 'करों सेवा पाओ मेवा' अथवा 'सेवा के फल सदैव मीठे' इस तरह की कई कहावतें आप प्रायः दोहराते ही हैं। ये कहावते सेवा के महत्व को प्रकट करती हैं। जैन आगमों में तप के जो बारह भेद बताए गए हैं, उनमें छहः भेद बाह्य तप के हैं एवं छहः भेद आभ्यंतर तप के हैं। छः प्रकार के आभ्यंतर तपों में तृतीय तप 'वैयावृत्य' अर्थात् सेवा का है। वैयावृत्य से, सेवा से जुड़कर इस जीव को तीर्थंकर नाम गौत्र कर्म का उपार्जन भी होता है। इस तथ्य से यह बात भलीभांति समझी जा सकती है कि सेवा का महत्व कितना अद्भुत है। यहाँ पर एक बात में स्पष्ट करना चाहता हूँ कि आप सेवा करें, पर निष्काम भाव से करें। सेवा करते हुए किसी भी तरह का स्वार्थी भाव हमारे मन में नहीं रहना चाहिए। सेवा से अंतर मन में परम आनंद की अनुभूति होती है। जाता सूत्र आदि आगमों में सेवा के महत्व पर विस्तार से विश्लेषण हुआ है।

प्रत्येक शब्द की गहराई तक पहुंचने का मेरा अपना स्वभाव है। सेवा शब्द पर चिन्तन करते हुए मैंनें जो अनुभव किया वह आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। सेवा शब्द में दो अक्षर है। पहला अक्षर 'से' है और दूसरा अक्षर 'वा' है। 'से' अक्षर सेतु का एवं 'वा' अक्षर वारिधि का द्योतक है। सेतु का अर्थ पुल है एवं वारिधि का अर्थ है सागर। संसार को सागर की उपमा से उपमित किया गया है। संसार रूपी सागर को पार करने के लिए सेवा सेतु अर्थात् पुल के समान है। सेवा के सेतु से यदि आप चाहें तो संसार को पार कर सकते हैं, एवं करना भी चाहिए।

साधु हो अथवा गृहस्थ दोनों के जीवन में सेवा की साधना अनिवार्य है। सेवा का अवसर जब भी जहां भी मिले, उससे लाभान्वित होना चाहिए। साधु-साध्वियों के लिए तो आगमों में यहां तक निर्देश है कि किसी रुग्ण साधु-साध्वी को देखकर भी जो उसकी सेवा नहीं करता है, उसे प्रायश्चित्त आता है। चातुर्मास काल में साधु-साध्वीजी म. अपनी मर्यादा के अनुसार निर्धारित क्षेत्र में विराजमान रहते हैं, पर कहीं भी बीमार साधु-साध्वीजी को सेवा की आवश्यकता आ जाए तो चातुर्मास में भी विहार करके वहाँ पर पहुँचा जा सकता है। सेवा करनें वाला यदि तन्मय होकर सेवा करे तो वह इतना पुण्योपार्जन कर लेता है कि अतीत के अनंतानंत जन्मों में भी कभी उस जीवात्मा ने पुण्य उपार्जित नहीं किया।

जैन आगमों में तो सेवा का महत्व प्रतिपादित किया ही है अन्य दर्शनों के विद्वानों ने भी अपने-अपने ढ़ंग से सेवा की उपादेयता को उभारा एवं स्वीकारा है। बोलचाल के शब्दों में सेवा का अर्थ है दूसरे को सुख देना। बिना सेवा के तो मनुष्य जन्म ही व्यर्थ है। सेवा रहित जीवन के लिए कहा गया है -

मनस्येयत्सुखं नित्यं, सः स्वर्गो नरकोपमः ।
तस्मात् परसुखेनैव, साधवः सुखिनः सदा ।।

अर्थात् जहाँ अपने मन को ही सुख मिलता हो, वह स्वर्ग भी नरक के समान है। इसलिए साधु पुरुष सदा दूसरे के सुख से ही सुखी होते हैं।

सेवा का प्रारम्भ घर से ही होता है। पहले माँ-पुत्र की सेवा करती है। उसे पुत्र को सुख देनें में बड़ा आनन्द आता है। बच्चा बिस्तर पर मल-मूत्र का त्याग कर देता है तो माँ स्वयं गीले में सोती है और बच्चे के नीचे सुखा रखती है। माँ की ममता की तो कोई तुलना ही नहीं है। वात्सल्य और ममता से ओत-प्रोत माँ कितनें कष्ट उठाती है। इसलिए माँ को पृथ्वी से भी बड़ा समझा गया है।

बंधुओं, यहाँ उस सेवा पर ध्यान मत दीजिए जो बदले में की जाती है। नौकर वेतन लेकर मालिक की सेवा करता है। नर्स धन के बदले बच्चे को दूध पिलाती है, उसका लालन पालन करती है। यहाँ तो सेवा का एक ही अर्थ समझें कि बदले की भावना के बिना किसी को सुख पहुँचाना। आप सुख दान देकर भी पहुँचा सकते हैं। पर जिसके पास धन ही नहीं है, वे क्या करें? उनके लिए शरीर से सेवा करने से पुण्यों का अर्जन होता है। मजदूर श्रम करते हैं, बड़ा कष्ट उठाते हैं, उस सेवा से उसकी जीविका चलती है। सेवा तो चन्द्रमा की तरह करनी है, जो बदले में कुछ भी लिए बिना संसार का ताप हरता है। सेवारत व्यक्ति ही पुण्यात्मा कहलाता है। शास्त्र कहते हैं -

पर तापच्छिदो ये तु, चन्दना इव चन्दनाः।
परोकृतये ये तु, पीड्यते कृतिनो हि ते।।

अर्थात् वे ही मनुष्य पुण्यात्मा हैं, जो चंदन वृक्ष की भांति

दूसरों के ताप को दूर करके उन्हें आल्हादित करते हैं तथा परोपकार के लिए स्वयं कष्ठ उठाते हैं।

जो सेवा घर से शुरु होती है, वह परहित वाली सेवा नहीं है। वह स्वकर्त्तव्य है पर कर्त्तव्य भी तो धर्म है। घर में सेवा कर्त्तव्य धर्म है और घर से बाहर सेवा परहित, परोपकार और साधना का एक विशिष्ट अंग भी है। कर्त्तव्य के लिए तो लोग प्रेम का भी बलिदान कर देते हैं। माँ-पुत्र का पालन अपना कर्त्तव्य समझकर नहीं करती। उससे तो यह कार्य स्वतः ही होता है। माँ के बाद पुत्र की बारी है। पुत्र माता-पिता की सेवा तन-मन-धन तीनों से करे। पति-पत्नी की सेवा उसके भरण-पोषण के रूप में करे और पत्नी-पति की, सास-ससुर की सेवा भी तन मन से करे। इस प्रकार परिवार में एक दूसरे के प्रति नियत कर्त्तव्य में रत रहकर घर में आये अतिथि की, साधु की सेवा करे। कर्त्तव्य-धर्म का पालन करनें के सम्बन्ध में महाभारत में श्री शिव-पार्वती से कहते हैं -

शुश्रूषन्ते ये पितरं मातरं च गृहस्थाश्रम भर्तारं चौव या नारी - अर्थात् जो लोग गृहस्थाश्रम में रहकर माता-पिता की सेवा करते हैं, जो नारी पति की सेवा करती है, उन सब पर इन्द्रादि देवता प्रसन्न होते हैं -

तेषु - तेषु प्रणिन्ति देवा इन्द्रपुरोगमाः।

बंधुओं! कुछ अर्थों में गृहस्थ आश्रम सबसे बड़ा आश्रम है। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी, साधुसंत अतिथि - अभ्यागत, याचक, सीनहीन आदि सब का निर्वाह गृहस्थों-श्रावकों द्वारा ही होता है, यथा -

यथा मातरमाश्रित्य, सर्व जीवन्ति जन्तवः।
तथा गृहस्थाश्रमं प्राप्य, सर्व जीवन्ति चाश्रमाः ।।

अर्थात् जिस प्रकार सभी जीव माता का सहारा लेकर जीवन धारण करते हैं, उसी प्रकार सभी आश्रम गृहस्थ आश्रम का सहारा लेकर जीवन यापन करते हैं।

कर्त्तव्य सेवा के विषय में भी आपको सबको सावधान रहना चाहिए। आज तो बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि पुत्र माता-पिता और बहू सास-ससुर की सेवा से विमुख होते जा रहे हैं इसीलिए आज चारों ओर वृद्धाश्रम बनाये जा रहे हैं। जैसे लावारिस बूढ़ी गायों के लिए गोसदन का निर्माण होता है, वैसे ही उपेक्षित माता-पिताओं के लिए वृद्धाश्रम बन रहे हैं। पुत्र तो ऐसा हो जो माता-पिता की सेवा से अपने नाम का अर्थ ही बदल दे। श्रवण का अर्थ तो सिर्फ सुनना होता है, पर श्रवण कुमार ने माता-पिता की सेवा का ऐसा आदर्श उपस्थित किया कि अच्छे आज्ञाकारी पुत्र के लिए लोग श्रवण कुमार की उपमाएं देते हैं। एक पत्नी मैनां सुन्दरी भी थी, जिसने अपने कोढ़ी पति की सेवा से पातिव्रत्य धर्म का एक अनूठा आदर्श सामने रखा। आजकल की क्या स्थिति है वह आपसे छिपी हुई नहीं है। यदि कहूंगा तो बहनें नाराज हो जाएगी। बस, मैं यही कहूंगा कि आप लोग अपने कर्त्तव्य और दूसरे के अधिकार पर ध्यान रखें। बहनों के लिए मैं पति को बस में करनें का एक अचूक नुस्खा बता रहा हूँ यह नुस्खा द्रौपदी ने सत्यभामा और रूक्मणि को बताया था। आप बहनें भी यह नुस्खा समझ लेंगी तो घर में कर्त्तव्य और अधिकार का झगड़ा नहीं होगा।

महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। धर्मराज युधिष्ठिर राजा बनें। सब ओर सुख-शांति, अमन-चैन था। इन्हीं दिनों एक बार द्रौपदी द्वारका गई। कृष्ण की आठों पत्नियों ने द्रौपदी का स्वागत किया। रुक्मणि, सत्यभामा, जामवन्ती, कालिन्दी आदि कृष्ण की आठ पट रानियां और सोलह हजार रानियां थी। बातों ही बातों में रुक्मणि ने द्रौपदी से पूछा -

'पांचाली आप के पाँच पति हैं। पाँचो आप के बस में रहते हैं। पाँचों पति आपकी बात मानते हैं। आपकी हर इच्छा का ध्यान रखते हैं।'

सत्यभामा ने बात आगे बढाई 'द्रौपदीजी, हम उनकी आठ हैं। आठ होकर भी हम उनको अपने वश में नहीं रख पाती, उनके जो मन में आता है, सो करते हैं। आप एक होकर पाँच पतियों को बस में रखती हैं और हम आठ एक को बस में नहीं कर पाती तो आपके पास ऐसा क्या जादू है?'

द्रौपदी मुस्कुराई और बोली - 'मेरी आठों भाभियों ! जादू यही है कि मेरे आपके सोचनें में अन्तर है। मैं हर समय यही सोचा करती हूँ कि मैं अपने पतियों के बस में कैसे रहूँ? मैं क्या कार्य करूँ? कि मेरे पति मुझसे प्रसन्न रहें। मेरे सोचनें का परिणाम यह होता है कि पाँचों पति मेरे बस में हो जाते हैं। इसके विपरीत आप यह सोचती हैं कि मेरे भैया कृष्ण कैसे आपके बस में रहें? आप उनको अपने बस में करने की सोचती रहती हैं तो उल्टा परिणाम यह होता है कि वे आपके बस से बाहर हो जाते हैं बस, सोचनें का ढ़ंग बदल दो।

तो बहनों, आप भी द्रौपदी वाला नुसखा अपना लें।

बंधुओं, अब बात पर सेवा की है। पर सेवा वाला कभी दुःखी नहीं रह सकता। निस्वार्थ भाव से दूसरों को सुख पहुँचाने वाली सेवा धरती पर स्वर्ग की सृष्टि करती है।

संस्कृत की एक सूक्ति है -

संसारे न परोपकार सदृश पश्यामि पुण्यं सताम् ।

अर्थात् मेरी दृष्टि में सत्पुरुषों के लिए परोपकार जैसा पुण्य संसार में नहीं है।

जैसे कोई दफ्तर में जाकर दफ्तर का ही काम करता है अपना नहीं। इस प्रकार संसार में रहकर संसार का ही काम करो। वह कार्य है, परसेवा, परसेवा करनें से संसार से सम्बन्ध टूट जाता है और स्वयं से अर्थात् आत्मा से संबंध स्थापित हो जाता है। जैसे आपको संयोग उत्पन्न होने पर प्रसन्नता होती है तो वही प्रसन्नता आप दूसरों को सुख देने में अनुभव करें तो फिर आपका कल्याण होने में देर नहीं है।

बंधुओं, पर सुख के लिए जो सेवा की जाती है उससे अपना भी हित होता है और पर का भी। उससे इस लोक में भी हित होता है और परलोक में भी। सेवा करने की भावना वाले के लिए, पग-पग पर सेवा के अवसर हैं, हर प्राणी सेव्य है। आप रास्ते का पत्थर हटा दें, अपने भोजन में से भूखे को भोजन खिला दें। यह भी बहुत बड़ी सेवा है।

संसार का सम्बन्ध ऋणानुबंध है। इस ऋण अनुबंध से मुक्त होने का एक ही उपाय है - सब की सेवा करना और किसी से कुछ नहीं चाहना। इसलिए साधक को संसार की सेवा के लिए ही संसार में रहना है। अपने सुख के लिए नहीं। सेवा धर्म का नियम यह है कि साधक अपने बड़े से बड़े दु:ख को भी सहन करें और दूसरे के छोटे से छोटे दु:ख में भी सेवा करे। दूसरों को सुख पहुँचानें की इच्छा से की गई सेवा से अपनी सुखेच्छा क्षीण होती है।

सेवा का एक अर्थ है, वैय्यावृत्य ।

वैय्यावृत्य या सेवा के लिए आचार्य, उपाध्याय, स्थविर साधु, तपस्वी, ग्लानमुनि, नवदीक्षित मुनि, कुल (आचार्य संतति) संघ और साधार्मिक साधु की सेवा या वैय्यावृत्य का विधान शास्त्रों में है।

स्थानांग सूत्र में वैय्यावृत्य को इस प्रकार परिभाषित किया गया है -

वैयावृत्यम् भक्तादिभि धर्मापग्रहकारि वस्तुभिरूपग्रह - करणे।

अर्थात् धर्म में सहारा देने वाली आहार आदि वस्तुओं द्वारा उपग्रह-सहायता करने के अर्थ में वैय्यावृत्य शब्द आता है। सेवा के लिए न तो प्रतीक्षा करनी चाहिए और न करानी चाहिए।

किसी देश का राजा कार्तिक पूर्णिमा के दिन तपोनिष्ठ ब्राह्मणों को दान देता था। उस राजा के राज्य में एक तपोनिष्ठ विद्वान ब्राह्मण था और सभी ब्राह्मण समुदाय का वह मुखिया भी था। उसकी ब्राह्मणी का नाम था भोजिआ। एक दिन भोजिआ ने कहा -

'स्वामी, तुम ब्राह्मणों के अधिपति चौदह विद्याओं में पारंगत हो। कार्तिकी पूर्णिमा के दिन जाकर राजा से दान ले आओ।

ब्राह्मण ने कहा -

'राजा के पास जाकर व उनका दान लेकर मैं राजा का पाप क्यों भोंगू? अगर राजा अपने पूर्वजों का सुख चाहे तो वह स्वयं आकर मुझे जाएं या यहां आकर मुझे दान दें।'

पत्नी भोजिआ ने ब्राह्मण से पुनः कहा -

'राजा के पास तुम जैसे अनेक ब्राह्मण स्वयं ही आते हैं। अतः यदि धन चाहते हो तो तुम ही जाओ।'

बिना आमंत्रण के मैं नहीं जाऊँगा यह कहकर ब्राह्मण मौन हो गया। ब्राह्मण जीवन भर आमंत्रण की राह देखता रहा पर राजा का बुलावा कभी नहीं आया।

इसी प्रकार साधु को भी वैय्यावृत्य या सेवा के लिए किसी की प्रार्थना की राह नहीं देखनी चाहिए। यदि किसी के कहने का इन्तजार करते रहे तो निर्जरा से वंचित रहना पड़ेगा, क्योंकि सेवा किसी की राह नहीं देखती।

'निशीथ भाष्य में कहा है -

जे भिक्खू गिलाणं सोच्चाणच्चा न गवेसइं,
न गवेसंतं वा साइज्जइ आवज्जइ
चाउम्मासियं परिहारठाणं अणुग्घाइयं ।

अर्थात् यदि कोई समर्थ साधु किसी साधु को बीमार सुनकर लापरवाही करे, उसकी सार सम्हाल न करे और सेवा करनें वाले की अनुमोदना भी न करे तो उसे गुरु चातुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है।

उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान महावीर कहते हैं -

वेयावच्चेणं तित्थयर नाम गोयं कम्मं निबंधेइ ।

अर्थात् आचार्य आदि की वैय्यावृत्य करने से जीव तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का उपार्जन करता है।

बंधुओं, मनुष्य वही श्रेष्ठ है जो दूसरों के हित में लगा हुआ है। यह मनुष्य शरीर अपने सुख भोग के लिए नहीं मिला है, अपितु सेवा करने व दूसरों को सुख देने के लिए मिला है। हर एक को यथा संभव सुख देते हुए जीवन के पथ पर गतिशील रहना ही जीवन की सार्थकता है। आप सेवा से जुड़कर इस जीवन को सार्थक करें, मेरी यही भावना है।

❖❖

(गतांक से आगे ...)

श्रमण संघ हो अविचल मंगल

जैन श्रमण संघ अतीत से आज तक

- उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

प्रथम साधु-सम्मेलन अजमेर : समन्वय का शुभारम्भ

आज से लगभग 77 वर्ष पहले, वि. संवत् 1990 के अपूर्व अमृत क्षण का अवतरण चैत्र सुदि 10 को दिन में 2:30 बजे, आकाश में चमकते प्रचंड सूर्य की तरह हुआ।

मंगलवार के मंगलमय दिन से प्रारम्भ होकर यह साधु सम्मेलन पूरे पन्द्रह दिन लगातार सामाजिक संगठन का, संघ का चिन्तन करते हुए संगठन की सुदृढ़ता, समाज की आशा, आध्यात्मिक त्यागी वर्ग में सम्प्रदाय मुक्त एकता, वैचारिक मतभेदों की समाप्ति, आदर्शों की स्थापना और जैन कॉन्फ्रेंस एवं समस्त संघ प्रेमियों के प्रयासों की सफल सम्पूर्ति के साथ इस शताब्दी में प्रथम बार सम्पन्न हुआ। यह ऐतिहासिक सत्य है कि इस असंभव कार्य को संभव बनाने में जैन कॉन्फ्रेंस के प्रतिबद्ध समाजसेवियों ने अहर्निश प्रयास किये। सम्मेलन का स्थान रहा अजमेर नगर का मशहूर लाखन कोटड़ी मुहल्ला, इस मुहल्ले में उन दिनों ममैयो के नौहरे का प्रमुख स्थान था। इसी नौहरे में संतों-साध्वियों की चौपाल जमी थी।

भवन के बीचों बीच एक विशालकाय वट वृक्ष था। उसके नीचे ही मंडलाकार बैठकर पुरोधा संत प्रतिनिधियों ने खुली चर्चा में भाग लिया था। प्रमुख नौहरे के भीतर संतों के बीच किसी भी व्यक्ति या सामाजिक शक्ति को पहुँचने का अधिकार नहीं था। यह इस सम्मेलन की खास विशेषता थी। इस सम्मेलन की एक ओर विशेषता यह थी कि जैन कॉन्फ्रेंस एवं समाज ने आयोजन की रूपरेखा एवं व्यवस्था तो की थी, किन्तु किसी भी तरह की शर्त या कोई गुप्त ऐजेंडा नहीं रखा था। मुक्त विचार विमर्श ही साधु-सम्मेलन का आधार था।

इस प्रथम साधु-सम्मेलन में 238 मुनिराज एवं 80 साध्वीजी म. के साथ ही 76 अन्य मुनिराज प्रतिनिधि के रूप में सादर सम्मिलित हुए। स्मरण रहे उस समय समस्त भारत में स्थानकवासी साधु 463 साध्वियाँ 1132 थीं।

इनमें पू. श्री अमरसिंहजी म.सा. की सम्प्रदाय, पूज्य श्री स्वामीदासजी म.सा. की सम्प्रदाय, पूज्य श्री नानकरामजी म. सा. की सम्प्रदाय, पूज्य श्री रघुनाथजी म.सा. की सम्प्रदाय, पूज्य श्री जयमलजी म.सा. की सम्प्रदाय, पूज्य श्री चौथमलजी म.सा. की सम्प्रदाय, श्री खंभात सम्प्रदाय, पूज्य श्री धर्मसिंहजी म.सा. की सम्प्रदाय, पूज्य श्री उत्तमचंदजी म.सा. एवं श्री ज्ञानचंद्रजी म.सा. की सम्प्रदाय, महाराष्ट्र और मालवा में प्रभावी ऋषि सम्प्रदाय, कच्छ की मोटी सम्प्रदाय लींबड़ी की छोटी सम्प्रदाय, बोटाद और लींबड़ी सम्प्रदाय, कोटा सम्प्रदाय, श्री एकलिंगदासजी म.सा. की सम्प्रदाय एवं पूज्य श्री मोतीरामजी म.सा. एवं पूज्य श्री अमरसिंहजी म.सा. की (पंजाबी) सम्प्रदाय ने भागीदारी की। प्रत्येक सम्प्रदाय से संख्यानुसार प्रतिनिधि लिए गए।

इस सम्मेलन में युवाचार्य श्री काशीरामजी म.सा., गणि श्री उदयचंद्रजी म.सा., उपाध्याय श्री आत्मारामजी म.सा. व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी म.सा. योगीराज श्री रामजीलालजी म.सा., आगम विशारद पूज्य श्री अमोलकऋषिजी म.सा. एवं श्री आनंदऋषिजी म.सा., श्री छगनलालजी म.सा, श्री हस्तीमलजी म.सा., श्री पुरुषोत्तमजी म.सा., श्री हर्षचन्द्रजी म.सा., शतावधानी, श्री रत्नचन्द्रजी म.सा., श्री नानकचंदजी म.सा. श्री नागचन्द्रजी म.सा., देवचंद्रजी म.सा., श्री पृथ्वीचंद्रजी म.सा., श्री हजारीमलजी म.सा., श्री मिश्रीमलजी म.सा. 'मधुकर' श्री शार्दुलसिंहजी, श्री दयालुचंद्रजी, श्री पन्नालालजी म.सा., श्री फतेहचंद्रजी, श्री फूलचंद्रजी, धर्मदास सम्प्रदाय के श्री ताराचंदजी म.सा., मालव केसरी श्री सौभाग्यमलजी, श्री समरथमलजी म., श्री गोकुलचंदजी म., श्री धनसुखजी, श्री पुरुषोत्तमजी, श्री शिवलालजी म., श्री मोहनलालजी के सम सम्माननीय संत रत्न उपस्थित थे।

लेकिन जिन संतों के ऊपर आयोजन को सफल बनाने का भार विशेष रूप से था। उनमें जैन दिवाकर पूज्य श्री चौथमलजी, पू. श्री पन्नालालजी म.सा., युवाचार्य श्री कांशीरामजी म.सा., पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा., श्री किशनलालजी म.

सा., श्री सौभाग्यमलजी म.सा., श्री लक्ष्मीचंदजी म.सा., श्री छगनलालजी म., श्री मिश्रीमलजी म.सा. 'मरुधर केसरी' आदि इन महामुनियों ने श्रावक-श्राविका को तो एकता के सूत्र में बांधा ही था मूर्धन्य मुनि मंडल को भी एक जगह लाने में बड़ा योगदान दिया था।

इस ठोस पहल की भूमिका बनानें में मरुभूमि के 6 संत संघाड़ों ने एकजुट होकर बड़ा भारी काम किया था। पूज्य श्री नानकचंद्रजी की समुदाय, पू. श्री रघुनाथजी म. की समुदाय, पू. श्री जयमलजी म. की समुदाय, पू. श्री अमरसिंहजी म. की मेवाड़ी सम्प्रदाय एवं पूज्य श्री चौथमलजी म. की सम्प्रदाय में मतभेद हो चले थे। जनता में उत्साह इतना था कि वरिष्ठ संतों के आगमन की सूचना मात्र से उपस्थित विशाल समुदाय में हर्ष हिलौरें उठने लगती थीं। सब एक दूसरे को प्रेम से निहारकर, परिचय पाने को उतावले लग रहे थे। क्योंकि ये दृश्य कल्पनातीत था। अनेकों के जीवन में यह मुनि सम्मेलन पहला-पहला था। सभी चाहते थे कि ये साधु-सम्मेलन सफल हो। मुनि मंडल की, महासती मंडल की जय विजय हो। श्रावक-श्राविका रूप गृहस्थों का हर्ष बार-बार गूंज रहा था। इन हजारों आशाओं ने, सहस्त्रों प्रार्थनाओं ने, असंख्य स्तुतियों ने, अनेक सद्भावनाओं और संभावनाओं ने ऐतिहासिक नगरी अजयमेरु को अजरामर धर्म नगरी बना दिया था।

प्रथम साधु-सम्मेलन में पंजाब एवं उत्तर भारत का योगदान जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है। उस समय समस्त भारत में स्थानकवासी परम्परा से जुड़े लगभग 1565 संत-साध्वीजी धर्म प्रवर्त्तनरत थे। इनमें से पंजाब परम्परा से जुड़े 73 मुनिराज एवं 60 महासतियाँ थी। इनमें से 25 मुनि पंजाब से 450 मील पैदल चलकर सम्मेलन में पधारे थें इन मुनियों में निम्नलिखित पांच निर्वाचित प्रतिनिधि थे -

1. गणी श्री उदयचन्दजी महाराज (नेतृत्वकर्त्ता)
2. उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज
3. युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज
4. व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज
5. योगीराज श्री रामजीलाल जी महाराज

उपरोक्त 76 प्रतिनिधि समान आसनों पर गोलाकार में बैठे। उनके बीच में हिन्दी तथा गुजराती लिखने वाले मुनि बैठे थे। सम्मेलन में छब्बीसों सम्प्रदाय के प्रतिनिधि जैन धर्म के गौरव का कायाकल्प करने के लिए एकत्रित हुए थे।

मंगलाचरण के पश्चात् गणी श्री उदयचन्दजी महाराज को सर्वसम्मति से इन सम्मेलन का शान्तिरक्षक चुना गया। आपके अतिरिक्त शतावधानी मुनि श्री रत्नचन्दजी महाराज को भी उनके साथ चुना गया, किन्तु गणीजी के रोगग्रस्त होने से समस्त कार्यवाही श्री शतावधानी जी म. ने ही चलाई। इस सभा की हिन्दी कार्यवाही को लिखने का कार्य उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज तथा गुजराती कार्यवाही को लिखने का भार लघु शतावधानी मुनि श्री सौभाग्यचन्दजी महाराज को दिया गया। उनकी सहायता के लिये मुनि श्री मदनलालजी महाराज तथा मुनि श्री विनयऋषिजी महाराज को नियत किया गया था। आरम्भ में कार्यवाहक शांतिरक्षक शतावधानी मुनि श्री रत्नचन्दजी महाराज ने मंगलाचरण किया। फिर सम्मेलन के कार्य को सुगम बनाने के लिये 21 मुनिवरों की एक विषय निर्वाचिनी समिति बनाई गई। इसका कोरम 11 का रखा गया। विषय समिति की बैठक रात्रि को की जाती थी। सम्मेलन में निम्नलिखित निश्चय किये गए - **1.** भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों की समान समाचारी का प्रवर्तन एक सूत्र में ग्रंथित करने तथा सम्मेलन के प्रस्तावों को कार्यरूप में परिणित करने के लिए विभिन्न सम्प्रदायों के प्रतिनिधि 27 मुनियों की एक समिति बनाई गई। इसमें पूज्य आचार्य श्री सोहनलालजी महाराज के चार पंजाबी प्रतिनिधि रखे गये थे।

1. युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज, **2.** गणी उदयचंदजी महाराज, **3.** उपाध्याय आत्मारामजी महाराज, **4.** मुनि श्री मदनलालजी महाराज। इस मुनि समिति के प्रातः वार निम्नलिखित पांच मंत्री चुने गए। काठियावाड़ के मंत्री-मुनि श्री हस्तीमलजी महाराज, पंजाब के मंत्री-उपायाय आत्मारामजी महाराज, मारवाड़ के मंत्री-मुनि श्री छगनलालजी महाराज, दक्षिण के मंत्री पंडित मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज, मेवाड़ के मंत्री-मुनि श्री हस्तीमल जी महाराज। इस समिति के कार्य के लिए विस्तृत नियम भी बनाए गए। इसके अतिरिक्त एक ज्ञान प्रचारक मण्डल की स्थापना भी पृथक-पृथक क्षेत्रों के लिये की गई। इसके नियम भी विस्तार पूर्वक बनाए गए थे।

(... क्रमशः)

साभार :- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति ...

व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज

'ध्यान करना हो तो गुरु के स्वरूप का ध्यान करें। मंत्र जाप करना हो तो गुरु की आज्ञा का पालन करें और मोक्ष की प्राप्ति की इच्छा हो तो गुरु की कृपा प्राप्त करें।' आसमान में चाहे सैंकड़ों चंद्रमा चमकने लगें और हजारों सूरज अपना प्रकाश फैलाने लगे, पर यदि जीवन में गुरु नहीं मिलें तो समझों चारों और अन्धेरा ही अन्धेरा है। माता अपनी संतान को मात्र जन्म देती है, पिता केवल जमीन देता है पर उसको सही जीवन तो गुरु ही देते हैं। इसलिए सभी ग्रन्थों में, पंचों में और संतों में गुरु की सर्वोच्च महानता को मानकर उसे ही सभी धर्म कार्यों में प्रथम स्थान दिया गया है। ऐसे ही श्रेष्ठ गुरुओं की प्रथम पंक्ति में थे शासन-शिरोमणि, चारित्र चूड़ामणि, व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी म. सा.।

जिनका जन्म मध्यम वर्गीय जैन परिवार में वि. सं. 1952 फाल्गुन महीने (सन् 1895 अप्रैल) में हरियाणा प्रांत के सोनीपात जिले के राजपुर गाँव में हुआ था। पिता का नाम था - श्री मुरारीलालजी जैन तथा माता का नाम था - श्रीमती गेंदोबाईजी। आपका सार्थक नाम रखा गया मौजीराम, क्योंकि आपके आने से घर में तरह-तरह की मौज हो गयी थी, जैसे वर्धमान का जन्म होने से राज्य में हर तरह से वृद्धि होनी प्रारम्भ हो गयी थी। आप से पहले श्री मुरारीलालजी की सात सन्तानें पैदा होते ही काल कवलित हो गई, आप ही जीवित बचे और माता-पिता की सारी मनौतियाँ पूरी हो गयी।

सौभाग्य से जैनत्व के सारे संस्कार आपको बचपन से ही मिले हुए थे। परिणाम स्वरूप आपने मात्र 6 साल की अल्पायु में ही उपवास करने का भी प्रयास किया। आमतौर पर देखा जाय तो हर महापुरुष को बचपन में माता-पिता के वियोग का दुःख झेलना पड़ता है। शायद हर महापुरुष अपने जीवन की दिशा को स्वयं ही निर्धारित कर अपनी दिशा को सुंदर बनाते हैं। ऐसी ही दुःखद स्थितियों से आपको भी गुजरना पड़ा। जब आपकी उम्र मात्र सात साल की ही थी तभी आपकी माता काल कर गयीं। क्रूर काल ने आपसे ममतामयी गोद छीन ली। इस दुस्सह वियोग को झेलने में अभी आप पूरी तरह से असमर्थ ही थे कि दो साल बाद ही आपके पूज्य पिता भी इस संसार को अलविदा कह गये। इस विचित्र स्थिति में आपकी मौसी श्रीमती मोरनीदेवीजी ने माँ का फर्ज अदा करते हुए आपके बचपन को संभाला, मासी का अर्थ ही यही होता है। मा + सी अर्थात् माँ जैसी और मोरनीबाई माँ जैसी ही मासी बनकर आपको अपने ससुराल सदर बाजार, दिल्ली लेकर गई। वो द्रव्य तथा भाव लक्ष्मी से सम्पन्न दिगम्बर जैन परिवार में व्याही थी। रामगोपाल संतलाल के नाम से उनकी कपड़े की बहुत बड़ी फर्म थी। जैनत्व के संस्कार इतने मजबूत थे कि आपने एक दिन मासी से रात में खाना माँग लिया तो मासी एकदम आश्चर्य से बोली - जैन परिवार में जन्म लेकर रात में खाना? आपको नसीहत मिली, रात के खाने का उस दिन के बाद सदा के लिए सहजता से त्याग हो गया।

दिल्ली जैन पाठशाला में आपका अध्ययन आरम्भ हो गया। दिल्ली का माहौल, चढ़ती हुई उम्र, मासी का स्नेह, खुला पैसा, यार दोस्तों की बहकाने वाली संगत, कुछ आपकी शौकीन तबीयत आदि कई कारणों से आप में कुछ बुराईयाँ भी पनपने लगी, आपने धीरे-धीरे पान खाने के साथ-साथ कुछ नशा भी करना प्रारम्भ कर दिया। इसके लिए ज्यादा पैसों की आवश्यकता पड़ी तो एक बार घर में चोरी भी कर ली। जिसका आरोप घर की नौकरानी के ऊपर लगा दिया गया। नौकरानी की पिटाई भी हुई और उसे घर से भी निकाल दिया गया। एक गरीब निरापराधी के साथ हुए इस अन्याय को देखकर आपका मन बेचैन होकर सोचने लगा कि तेरी बुरी आदत ने एक गरीब परिवार का रोजगार छीन लिया। एक निरपराधी को अपराधी बना दिया। आपको अपराध बोथ सताने लगा। अपनी गलती तो स्वीकार करने की हिम्मत तो नहीं हुई, पर दृढ़ मन से नशे आदि न करने का संकल्प ले लिया। आपके जीवन की दिशा ही बदलने लगी, दोस्तों का मोह कम करके आप मौसाजी के साथ दुकान पर जाने लगे। जैन मंदिर में जाना और पूजा करना आपका नित्य कर्म था ही। आपको सारी पूजा विधि जुबानी याद थी। पुजारी भी इंतजार करता था कि मोजीराम आयेगा और पूजा करवायेगा।

पूजा के साथ-साथ स्वाध्याय की रूचि भी थी। परिणाम स्वरूप वैराग्य भाव पुष्ट होने लगा। जिसमें एक प्रमुख घटना भी कारण बनी जिसका उल्लेख करना आवश्यक है हमारे

देश की राजधानी पहले अयोध्या थी, बंगाल के विभाजन के बाद दिल्ली को राजधानी बना दिया और वायसराय बनाया गया लार्ड हार्डिंग को। लार्ड हार्डिंग की बलरामपुर रियासत के हाथी पर शान से सवारी निकाली जा रही थी। अपार भीड़ थी। अपने नये शासक को देखने का जनता में बड़ा उत्साह था। मौजीराम भी उस भीड़ में शामिल थे। उधर क्रांतिकारियों द्वारा देश को आजाद कराने की मुहिम छेड़ी हुई थी ।

कुछ क्रांतिकारी बहरी अंग्रेज सरकार के कानों और दिमाग तक अपनी बुलंद आवाज को पहुंचाने के लिए विस्फोटकों का भी सहारा ले रहे थे। उन्होंने वायसराय पर बम फेंक दिया और महावत मारा गया। वायसराय और मेम साहब सुरक्षित बच गये, लेकिन इस घटना पर वायसराय को गुस्सा आया और आदेश जारी कर दिया कि सारी भीड़ को घेर लो और गोलियों से भून दो। भीड़ में त्राहि-त्राहि मच गई, युवक मौजीराम को ख्याल आया, आज तू बिना संयम लिये ऐसे ही इस संसार से चला जायेगा। वहीं संकल्प किया कि यदि आज बच गया तो दीक्षा लूँगा। शायद इस सच्चे संकल्प की गूँज मेम साहब के दिल तक भी पहुँची, उन्होंने वायसराय को समझाया। हम सुरक्षित बच गये और बम फेंकने वाले भाग गये। इस बेगुनाह जनता को मरवाने से हमारे खिलाफ विद्रोह खड़ा हो जायेगा। अतः आप अपने आदेश को वापिस ले लो और आदेश वापिस हो गया, जिससे सभी बच गये। मौजीराम को एक ही लगन लग गयी कि दीक्षा लेनी है पर कहाँ लेनी है? ये निर्णय नहीं कर पा रहे थे। दिगम्बर बनने का ख्याल था। एक प्रतिभाधारी स्थानकवासी श्रावक श्री बनवारीलालजी गोचरी के लिए उस घर में आते थे। मौजीरामजी उससे परिचित व प्रभावित थे। अतः उनसे सलाह की तो श्रावकजी ने कहा चांदनी चौक में दृढ़ अनुशास्ता श्री छोटेलालजी म. तथा बहुसूत्री श्री नाथूलालजी म. विराजमान हैं। उच्चकोटि के संयमी संत है, उनके पास दीक्षा लो और मौजीरामजी घर वालों को बिना बताए चरणों में आ गये, दीक्षा लेने की भावना बताई, ज्ञानाभ्यास करने लगे, वैराग्य में ढ़लने लगे। संतों ने श्रावक श्री जौहरीमलजी से उनके बारे में पूछा तो श्रावकजी ने आपका परिचय पूछकर तसल्ली दी कि ऊँचे परिवार का खानदानी बच्चा है। आप इसे दीक्षा दो, इसके परिवार को मैं समझा दूँगा। श्रावकजी ने जिम्मेवारी ले ली और संतों ने वहाँ से यू.पी. की ओर विहार कर दिया। सन् 1914 का चातुर्मास बामनौली का स्वीकृत हुआ। संतगण बामनौली पधारे, आप भी वैरागी के रूप में साथ में थे। चातुर्मास में प्रवचनों में मदन जौहरी कथानक चलता था। वो बड़ा बुद्धिमान और साहसी था। ऐसे ही गुण मौजीराम में भी थे। अतः सभी आपको 'मदन' कहने लगे। बाद में आपका यही नाम प्रचलित हो गया। उसी चातुर्मास में भादवा वदी दशमी वि. सं. 1971 (दिनांक 16 अगस्त 1914) को आपकी दीक्षा हो गयी और मौजीराम से 'श्री मदनमुनिजी म.' बन गये। संयम का पालन करने के साथ-साथ सेवा, स्वाध्याय, विनय आदि सद्गुणों में आपका जीवन ढ़लने लगे। गुरुदेव श्री छोटेलालजी महाराज पिता की तरह तथा आपके गुरुदेव श्री नाथूलालजी म. का भी अनुशासन बड़ा कठोर था पर आप उस कठोरता को अपने जीवन में सहायक मानकर असन्नता से स्वीकार किया। अतः आपका अमर वाक्य भी प्रसिद्ध है - बड़ों के कठोर अनुशासन से मेरा जीवन मजा है।

आपके कपाल में शेर का चिन्ह था जो आपकी सिंहवृत्ति का द्योतक था। आपने शेरों की तरह संयम का पालन किया। प्रवचनों में भी आप शेरों की तरह दहाड़ते थे। आपकी सिंह गर्जना सुनकर शिथिलाचारी दहल जाते थे। 12 फरवरी 1936 के दिन पूज्य श्री काशीरामजी म. को आचार्य पद की चादर प्रदान करने वालों में आपका प्रमुख स्थान था। समाजों और संतों में जो समस्याएं उभर गयीं थी उनको तटस्थता एवं बेबाकी से निपटाकर आपश्री ने आचार्यश्रीजी का दिल जीत लिया था। समारोह को सम्बोधित करते हुए आपने जो वक्तव्य दिया था उसे जनता ने लम्बे अर्से तक चितारा और दोहराया भी। आचार्यश्रीजी तो इतने प्रभावित हुए थे कि कहने लगे "मैं आचार्य पद स्वीकार करने से पहले श्री मदनलालजी म. को 'व्याख्यान वाचस्पति' विशेषण से अलंकृत करना चाहता हूँ।" भगवान महावीर का संदेश जन-जन तक पहुँचाने के लिए आपने जनता के मध्य में खुले प्रवचन किये। आज से लगभग 90 साल पहले फरीदकोट (पंजाब) में आपने ही सबसे पहले महावीर जयंती मनायी, जो आज पूरे भारत में धार्मिक उत्साह के साथ मनायी जाती है।

सन् 1946 में लुधियाना में संत-सम्मेलन के अवसर पर जब आपको आचार्य पद देने की तैयारी हो रही थी। तब आपने सविनय निषेध कर दिया और आचार्य पद के लिए श्री आत्मारामजी म.सा. का नाम रखा। सर्वसम्मति से श्री

आत्मारामजी म.सा. को आपने ही आचार्य पद की चादर ओढ़ायी थी। स्वयं श्री आत्मारामजी म.सा. ने भी कहा "वाचस्पति जी। आप आचार्य पद के लिए सर्वथा समर्थ हैं, मैं तो विहार तक भी नहीं कर सकता। आप में ताड़ने और प्यार करने का ये दोनों गुण है।" परन्तु आपश्री ने आचार्य पद ग्रहण नहीं किया तथा यही कहते रहे कि "मैं तो संघ का वफादार सैनिक बनकर कार्य करता रहूँगा।"

अनेक महापुरुषों के मन तथा जैन समाज के मन में ख्याल बना दिया कि सभी सम्प्रदायों को एक करके 'श्रमण संघ' का निर्माण किया जाय, जिसका एक ही आचार्य हो। इस संगठन की आवाज को आपने भी प्रमुख रूप से बुलन्द किया तथा भरसक प्रयास प्रारम्भ कर दिया। अनेक स्थानों पर संत सम्मेलनों में आपकी उपस्थिति पंजाब के प्रतिनिधियों के रूप में होती रही।

सन् 1933 में अजमेर सम्मेलन में पंजाब के चार प्रतिनिधियों में उपाध्याय श्री आत्मारामजी म.सा. के विशेष आग्रह से आपको चुना गया। यद्यपि सभी प्रतिनिधियों की तुलना में आप सबसे अल्पायु के थे। पर युवाचार्यश्री काशीरामजी म.सा. का भी प्रयास यह रहा कि श्री मदनमुनिजी म.सा. हर मंच को संबोधित करें। सम्मेलन की कार्यवाही के हिंदी लेखक आप ही बने। अजमेर में श्रमण संघ का निर्माण तो नहीं हो सका पर पारस्परिक परिचयों से कुछ दूरियाँ अवश्य कम हुई। धन्य है, आपकी पद के प्रति निर्लोभता।

सन् 1952 में सादड़ी सम्मेलन में श्रमण संघ का निर्माण हुआ। वहाँ आप शांतिरक्षक के रूप में नियुक्त किये गये। लोकसभा में स्पीकर का जो दायित्व होता है वही आपको मिला, बड़ी शान और संजीदगी से आपने वो दायित्व पूर्ण किया। पंजाब के प्रतिनिधि के रूप में आपने पंजाब आचार्य श्री आत्मारामजी म.सा. को श्रमण संघ का आचार्य बनवाने में विशेष योगदान दिया।

सन् 1956 में भीनासर-सम्मेलन पर शांति संरक्षक के रूप में आपको ही चुना, साथ में एक अतिरिक्त भार और आपके ऊपर डाला और आपको श्रमण संघ का प्रधानमंत्री बनाया गया। आप आचार्य तथा उपाचार्यश्रीजी की सलाह से उनका कार्य सुगम करके उनको सहायता देते रहे। आपकी संयम के प्रति गहरी निष्ठा थी, स्वयं भी पालन करते थे तथा दूसरों से भी यही अपेक्षा रखते थे। अतः कई बार कठोर निणर्य भी ले लेते थे। बहुधा कहते थे - "हमने जो समाचारी एकमत से बनायी है। इसका पालन नहीं करेंगे तो हमें संघ में रहने का अधिकार नहीं है।" लेकिन धीरे-धीरे मनमर्जी बढ़ने लगी और शिथिलता आने लगी तो आपने कहा - "मुझे पद नहीं, साधुत्व और समाचारी का पालन चाहिए।" आपने 6 महीने बाद अपने पद से इस्तीफा दे दिया। संयम और समाचारी का पूर्ण सावधानी व जागरुकता से पालन करते हुए अपने शिष्यों के साथ विचरण करने लगे। आपकी विहारचर्या, संयमचर्या बड़ी प्रशस्त थी। ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय की रुचि बड़े कमाल की थी। रात को करीब 2 बजे उठकर पूरा उत्तराध्ययन सूत्र, जो आपको कंठस्थ था, उसे दोहराते हुए आत्म-चिंतन में लीन रहते थे। कहते थे दिनभर तो गृहस्थों का आवागमन रहता है अब रात्रि का नीरव वातावरण है, आत्म-चिंतन और आत्म-विश्लेषण का सुंदर अवसर है। अंतिम समय में आपको गले में कैंसर की शिकायत हो गयी पर आपने संयम को ही महत्व देते हुए आत्मा को ही अधिक मान दिया। अपने जीवन के सार के रूप में अपने शिष्यों को कुछ आज्ञा और निर्देश दिये -

1. मेरे नाम पर न पैसा एकत्रित करना तथा न कोई स्कूल, अस्पताल, पुस्तकालय आदि संस्थाओं को चलाना।

2. भिक्षाचर्या निर्दोष एवं निष्पक्ष रखना।

3. महिलाओं से अधिक सम्पर्क नहीं रखना।

मुनियों ने अपने गुरुदेव को साक्षी मानकर इन शिक्षाओं पर वफादारी से चलने का संकल्प लिया। अपने संघ की भावी व्यवस्था को निर्धारित करते हुए आपने-अपने योग्यतम शिष्य श्री सुदर्शनलालजी म.सा. को संघ नेतृत्व का दायित्व दे दिया और अंत में 27 जून 1963 को उस महान् आत्मा ने जाण्डियालागुरु (पंजाब) में अपने आप संथारे का प्रत्याख्यान लिया तथा कुछ देर बाद नश्वर देह को छोड़कर देवलोक की ओर प्रस्थित हो गये।

समग्र भारत उनके स्वर्गवास से सन्न रह गया। उनके मुनियों ने उनके आदर्शों के अनुरूप चलकर जैन समाज की श्रद्धाओं को बल दिया और आज भी दे रहे हैं। आओ उस दिव्यात्मा के संयम-सौहार्द, सिद्धान्तप्रियता तथा सौम्यतापूर्ण जीवन को श्रद्धासुमन अर्पण करते हुए अपने को तदनुरूप बनायें।

- संजय जैन

❖❖

आहार - शुद्धि : एक दृष्टि

- प्रवर्तक पू. श्री गणेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'

आहार जीवन का आधार है। यह वह चाक-धुरी है जिस पर जीवन घूमता है। जीवन का पूरा चक्र आहार से संचालित है। हम कपड़ा, मकान, धन-दौलत आदि के बिना रह सकते हैं, पर आहार के बिना हमारा जीवन असम्भव है। जितने हम आहार से बंधे हुए है कदाचित् किसी और से बँधे हुए नहीं है। आहार से हमारा शरीर बनता है, रक्त बनता है, धातुयें बनती है, रसायन निष्पन्न होते हैं और इन सबसे परे ओज का निर्माण भी आहार से ही होता है।

चौके की चार शुद्धियाँ : आहार के विषय में अनेक बातें ध्यान देने योग्य हैं। हमारा आहार सात्विक होने के साथ आहार के लिए प्रदूषण रहित शुद्ध वातावरण का होना बहुत जरूरी है। क्योंकि आदर्श एवं संतुलित आहार से ही शरीर में ऊष्मा, शक्ति, वृद्धि क्षतिपूर्ति तथा स्वास्थ्य का रक्षण संरक्षण होता है।

आज मानव ज्यों-ज्यों भौतिक विकास की ओर अग्रसर है, त्यों-त्यों वह अपनी परम्परा, संस्कृति से विमुख होता जा रहा है। आहार से सन्दर्भित भारतीय संस्कृति 'चौका' की संस्कृति थी। आज 'चौका' को लोग भूल गये हैं। 'चौका' उनके लिए एक दकियानूसी, रूढ़िवादी बनकर रह गया है। वे 'चौका' को लकीर से चारों ओर घेरा बनाती हुई खींची गई एक रेखा के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझते, जिसके अन्दर व्यक्ति आहार करता है, जबकि 'चौका' हमारी आहार-पद्धत्ति का प्राण है। इसके भीतर जो वैज्ञानिक तथ्य छिपा है उसे उघाड़ने की आज जरूरत है। 'चौका' चार प्रकार की शुद्धियों का एक समुच्चय है। ये शुद्धियाँ इस प्रकार से है-क्षेत्र शुद्धि, द्रव्य शुद्धि, काल शुद्धि तथा भाव शुद्धि ।

क्षेत्र शुद्धि : क्षेत्र शुद्धि का तात्पर्य है जहाँ हम आहार कर रहे हैं वह क्षेत्र या स्थान कैसा है? शुद्ध है या अशुद्ध? कोई भी चीज खायें-पीयें तो सबसे पहले क्षेत्र या स्थान का ध्यान अवश्य रखें। प्रत्येक क्षेत्र का वायु मण्डल हमारे जीवन की हर क्रिया को प्रभावित करता है तो आहार को क्यों नहीं प्रभावित करेगा? जैसे कोई एक मरघट या शमशान भूमि पर खाये, मजार के आस-पास अपना आहार करे और एक उपवन में करे, जहाँ हरे-भरे वृक्ष हों। मन्द-मन्द बयार बह रही हो तो दोनों के आहार में भुक्त पदार्थ एक जैसे ही हैं। इसी प्रकार घर में जहाँ आहार बन रहा है वह रसोई तमाम कूड़े-कचरों से, चीऊंटी, चींटे, झींगुरों आदि से युक्त हो, उस रसोई में शुद्ध वायु और सूर्य-रश्मियों न पहुँचती हों तो वहाँ बनाया गया आहार शरीर के लिए उतना हितकारी नहीं हो सकता जितना उसे होना चाहिए।

बहुत कम लोग ऐसे हैं जो शुद्धि का ध्यान रखते हैं। बाजार में, नालियों के पास वहाँ विष्ठा-गन्दगियाँ बहती रहती है, मच्छर मक्खियों भिनभिनाते रहते हैं, नाले की दुर्गन्ध उड़ती रहती है, धूल के कण खाद्य पदार्थों में जमे रहते हैं, उसके नजदीक खड़े होकर चाट पकौड़ियाँ मिष्ठान वगैरह खाना आज एक सामान्य बात है। लोगों को शायद यह नहीं मालूम कि वे क्षेत्र जहाँ अन्न ग्रहण कर रहे हैं या उनके लिए तैयार किया जा रहा है, वातावरण और पर्यावरण की दृष्टि से कितने प्रदूषित है। ऐसे स्थल बैक्टीरियों आदि कीटाणुओं के जमावड़े हैं। यहाँ पर जो कुछ भी खाया-पिया जाएगा वह सब स्वास्थ्य के प्रतिकूल होगा।

द्रव्य शुद्धि : दूसरी शुद्धि है द्रव्य शुद्धि। आहार पर द्रव्य का बड़ा प्रभाव पड़ा करता है। अनीति-अनाचार और बेईमानी-हिंसात्मक साधनों से उपार्जित द्रव्य विनिर्मित आहार हमारे शरीर और मन दोनों को प्रभावित करता है। ऐसे द्रव्य से बनाया गया आहार हमारे परिणामों को कभी भी सात्विक और निर्मल नहीं बना सकता।

महाभारत का एक प्रसंग है। युद्ध समाप्त होने के उपरान्त पाण्डवों से श्रीकृष्ण ने कहा - देखो ! तुम्हारे बीच एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति है भीष्म पितामह। उनके पास जाकर आशीर्वाद प्राप्त करो। उनसे धर्म-नीति और अपने कल्याण की सब बातें सीखो। द्रौपदी सहित पाँचों पाण्डव श्रीकृष्ण की आज्ञानुसार भीष्म पितामह के पास पहुँचे। वही उनके पास खड़े होकर सबने भीष्म पितामह से प्रार्थना की। भीष्म पितामह उन्हें कल्याणकारी बातें सुनाने लगे। तभी पास खड़ी द्रौपदी ने उनसे एक प्रश्न पूछा कि, 'धर्म-न्याय-नीति की

आपकी ये सब बाते उस समय कहाँ गई थी, जब भरी सभा में दुर्योधन ने मेरा चीर हरण किया था।' भीष्म पितामह ने कहा- 'तुम्हारा कथन बिलकुल ठीक है, पर मैंने उस समय दुर्योधन का अन्न खाया था। इसलिए मेरे अन्दर उस समय वैसे ही भाव थे, पर अब मैं उसका अन्न नहीं खा रहा हूँ। मेरे अन्दर उस समय के कुत्सित भाव अन्दर से निकल गये हैं। लोक में कहावत भी है - 'जैसा खाये अन्न वैसा होये मन। जैसा पीये पानी, वैसी बोले वाणी।' अतः हमें अपने आहार में द्रव्य-शुद्धि का बड़ा ध्यान रखना चाहिए। सात्विक नीति से कमाये गये धन से बनाये गये आहार के सेवन से हमारे अन्दर उत्तम भावनायें पैदा होती है, पर आज इस बात पर कोई विचार नहीं करता है। इसलिए मन में दूषित विचारों का अम्बार लगा हुआ है।

काल शुद्धि : तीसरी शुद्धि है काल शुद्धि। आज मानव खाने के सम्बन्ध में पशुओं से भी बदतर होता जा रहा है। वह न दिन देखता है और न रात। जब भूख लगी, तभी खा लिया। काल का आहार पर गहरा प्रभाव पड़ा करता है। सूर्य-प्रकाश में बनाया गया और किया गया आहार तमाम प्रदूषणों से मुक्त होता है। सूर्य, सौर्य मण्डल के प्रदूषणों को दूर करने में सक्षम है। सूर्य-रश्मियाँ ऊष्मा देती रहती है जिससे वातावरण स्वच्छ रहता है।

एक सज्जन मेरे पास आये और बोले- 'जैन धर्म में रात्रि भोजन का क्यों निषेध किया गया है? भोजन का तो एक नियम है - जब भी भूख लगे, खालो। भूख के लिए क्या दिन और क्या रात?' मैने उन्हें समझाया कि जैन धर्म वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। वह मानव को प्रामाणिक जीवन जीने की बात कहता है। हम जो कुछ भी खाते हैं उसका पाचन तैजस शरीर के द्वारा होता है। तैजस शरीर सूर्य की ऊष्मा से सक्रिय रहता है और उसके सक्रिय रहने पर भुक्त भोजन सहजता से पच जाता है। रात्रि में सूर्य-ऊष्मा होती नहीं है इसलिए शरीर सक्रिय नहीं रह पाता है। एक प्रकार से निष्क्रिय हो जाता है। ऐसी स्थिति में पाचन प्रक्रिया का कमजोर होना सामान्य बात है। जितनी भी अपच का बीमारियाँ मिलेंगी उन सबके मूल में सूर्य-प्रकाश का अभाव है यानी रात्रि भोजन भी अपच का एक प्रबल कारण है। रात्रि भोजन से पाचन बिगड़ता है, जबकि पाचन के लिए प्राणवायु का होना आवश्यक है किन्तु रात्रि में कार्बनडाई ऑक्साइड की अतिरेकता रहती है जो पाचन क्रिया में कठिनाई पैदा करती है।

दूसरी बात है सूर्य प्रकाश में वायुमण्डल में व्याप्त कीटाणु अप्रभावी रहते है। सूर्य-रश्मियों में मुख्यतः दो प्रकार की किरणें होती है-एक, इनफ्रारेड तथा दूसरी, अल्ट्रा-वायलेट। ये किरण वातावरण में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु को नष्ट करने में सर्वथा सक्षम है, इसलिए सूर्य का आतप व्यक्ति को विभिन्न बीमारियों से बचाता है। बीमारियाँ दिन की अपेक्षा रात को अधिक उग्र रूप धारण कर लेती है। आपने अनुभव किया होगा जितने भी वायु से सन्दर्भित रोग हैं, जैसे-वात रोग। वह दिन की अपेक्षा रात को अधिक होता है, क्योंकि रात को सूर्य होता नहीं है। इसलिए जैन धर्म में रात को खाने का निषेध किया गया है। वैसे भी सोने से पूर्व हमें बहुत पहले खा लेना चाहिए। क्योंकि रात्रि में भोजन के तत्काल बाद सोना वायुवर्धक होता है। पाक-क्रिया में भी अधिक समय लगता है। पाचक अग्नि बन्द रहती है।

रात्रि में भोजन करने वाला गहरी नींद नहीं ले पाता। वह या तो इधर-उधर करवटें बदलता रहता है या स्वप्न देखता रहता है। पेट में पड़ा हुआ, आहार, जो अभी पूरी तरह से पच नहीं पाया है, नींद में व्यवधान उत्पन्न करता है। शरीर की समस्त ऊर्जा भोजन पचाने में ही खप जाती है। आयुर्वेद में भी रात्रि-भोजन का निषेध है जिससे आमाशय और आंते ठीक प्रकार से काम नहीं कर पाती है। इससे आहार सम्यक् रूप में पच नहीं पाता है जिससे अनेक रोग पैदा हो जाते है।

साधना के क्षेत्र में भी साधक के लिए रात्रि का भोजन वर्जित है, क्योंकि साधना और चिन्तन के लिए जो ऊर्जा मस्तिष्क की ओर व्यय होनी चाहिए वह ऊर्जा तो रात्रि में किये गये भोजन को पचाने में ही व्यय हो रही है तो साधना कैसे संभव होगी? हाँ मन की एकाग्रता जरूर खंडित होगी, चंचल प्रवृत्तियाँ उग्र रूप धारण करेंगी और साधक अपनी साधना से विचलित हो जाएगा। दशवैकालिक सूत्र में यह निर्दिष्ट है कि संयमी आत्मा सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय तक सर्व प्रकार के आहार की मन से भी इच्छा न करे।

भाव शुद्धि : 'चौका' में चौथी और सर्वोपरि शुद्धि है, भाव शुद्धि। दूषित भावों-क्रोध, ईर्ष्या, उत्तेजना, चिन्ता, चिड़चिड़ापन, भय जुगुप्सा आदि, अर्थात् राग-द्वेषों से विनिर्मित यह भुक्त भोजन शरीर के अन्दर दूषित रसायन पैदा करेगा। उसके भाव दूषित होंगे, विचार दूषित होंगे। फलस्वरूप शरीर विभिन्न रोगों के प्रकोप से घिर जाएगा। इससे लगा कि भोजन और भावों का सम्बन्ध बड़ा गहरा है। आनन्द के साथ जो आहार करता है, चाहे उसे सूखी रोटी ही क्यों न परोसी जाये, वह रोटी उसके शरीर में शुभ भाव पैदा करेगी। रसायन बनकर अमृत को उत्पन्न करेगी।

लेकिन आज भोजन करते समय हमारा चित्त कहीं और होता है। सामने दूरदर्शन, वीडियो, कैमरा होता है, अखबार होता है उसको देखते-पढ़ते जाते है और भोजन करते जाते हैं। उस समय जो चित्र दिखाई दे रहे हैं या अखबार में जो समाचार पढ़ रहे हैं तद्रूप जो भाव-विचार बन रहे हैं, वे सब-के-सब प्रकारान्तर रूप से हमारे भोजन को प्रभावित करेंगे। इतना ही नहीं, भोजन करते समय दूसरों की आलोचना-प्रत्यालोचना करते जाते हैं। कहीं क्रोध या बदला लेने का प्रसंग आ गया तो बस, मन में उत्तेजना आ गयी। कहीं वासना का प्रसंग आ गया तो मन कामुक हो गया, इधर हम भोजन करते जा रहे है, उधर हमारे अन्दर कुत्सित विचार-भाव चल रहे होते हैं तो ये सब हमारे भोजन को प्रभावित करेंगे।

इस प्रकार 'चौका' में समायी ये चारों शुद्धियाँ हमारे व्यक्तित्व के रूपान्तरण में एक प्रभावी भूमिका निभाती हैं। ❖❖

विष से अमृत की ओर

एक बार भगवान महावीर बाचाला नामक नगर की ओर से जा रहे थे। वहां पहुंचने के दो मार्ग थे। महावीर सीधे रास्ते से जाना चाहते थे। लोगों ने बताया कि आगे चलकर उस रास्ते पर एक भंयकर दृष्टि-विष सर्प रहता है। वह पथिकों को अपने दृष्टि-विष से नष्ट कर देता है। उसकी विषैली फुफ्कार से आकाश में उड़ते पक्षी भी जमीन पर आ गिरते हैं। उसके विष के कारण आस-पास के वृक्ष और लताएं भी सूखकर ठूंठ बन चुके हैं।

महावीर को यह सारा प्रसंग सुनकर लगा कि एक ओर चण्डकौशिक है, जिसका पाप उसके अपराधों के साथ निरंतर बढ़ता जा रहा है और दूसरी ओर उसके कारण निरंतर विनाश लीला हो रही है। उन्होंने निश्चय किया कि इसका निराकरण अवश्य होना चाहिए। वे सीधे उसी रास्ते चल दिए।

चण्डकौशिक के निकट पहुंचते ही चण्डकौशिक ने उन पर आक्रमण किया। उनके पैर से दुग्ध-रुधिर की धारा बह निकली। चण्डकौशिक चकित होकर महावीर की ओर देखने लगा। महावीर ने करुणा से भीगे मन से कहा - 'चण्डकौशिक, अनेक जन्मों के दुष्कर्मों के कारण इस योनि में तुम्हें जन्म लेना पड़ा और अब जो यह विनाश लीला का कुकृत्य कर रहे हो, उसका परिणाम शायद तुम नहीं जानते।'

महावीर के करुणा में भीगे इन शब्दों को सुनकर चण्डकौशिक का मन बदल गया। जैसे कोई सोया हुआ नहीं से जाग जाए। उसकी आत्मा अपने दुष्कृत्यों पर क्षुब्ध हो उठी उसने अपने पिछले जीवन की ओर दृष्टिपात किया तो वह आत्मग्लानि से भर उठा। महावीर से मंगलमय भविष्य का आशीष लेकर उसने उसी समय से हिंसा का व्यापार बंद कर दिया। ❖❖

मांसाहार का निषेध

- तत्वचिंतक पू. श्री उत्तममुनिजी म.सा.

प्राचीन कहावत है 'जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन।' भोजन का जीवन में बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। हमारे शास्त्रों में तीन प्रकार के आहार कहे गये हैं-सात्विक आहार, राजसिक आहार और तामसिक आहार। मानव जैसा आहार करता है वैसे ही विचार उसके मन में आ जाते हैं। इन तीन आहार में सात्विक आहार को श्रेष्ठ आहार माना गया है। सन्त और सज्जनों ने तामसिक आहार को त्याज्य माना और उसकी निन्दा की है। मांसाहार को तामसिक आहार माना गया है। संसार में बहुत से भयंकर पाप कर्म बताये गये है, उनमें से मांसाहार बड़ा निन्दनीय महापाप है। मांसाहार से मानव मन क्रूर और निर्दयी बन जाता है। मांस कहीं खेत में, पेड़ और बेलों में पैदा नहीं होता, बल्कि चलते-फिरते पशुओं या पक्षियों को मारकर तैयार किया जाता है। अपने शरीर में छोटा सा कांटे का दर्द सहन नहीं होता। पर उन निरपराधी-मूक प्राणियों के गले में छूरी चलाना कितनी क्रूरता और निर्दयता है।

जब किसी को प्राण दे नहीं सकते तो दूसरों के प्राण लेने का हक किसने दिया? जब कसाई उस निर्दोष प्राणी पर छूरी फेरता है तो वह दृश्य कितना भयंकर डरावना होता है। ऐसे दृश्यों को सहृदय इन्सान देखने की तो बात छोड़ दो, सुन भी नहीं सकता। खून की धारा बह रही है, हड्डियाँ इधर-उधर बिखरी पड़ी है। खून से सने मांस की ढ़ेरी लगी हुई हो। कौआ, गिद्ध और चील आसमान में मंडरा रहे हो। कितना घृणित दृश्य है। ऐसा काम मानव नहीं, राक्षस दिल वाला ही कर सकता है। यूरोप आदि देशों में तो जज लोग कसाई की गवाही लेते नहीं। क्योंकि वह इतना निर्दयी होता है कि मानव कहलाने का हकदार नहीं। गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं -

"दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान ।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लग घट में प्राण ।।

मक्का जाओ, मथुरा-काशी जाओ, पशुपति नाथ और वेट किन, कहीं भी क्यों न जाये यदि दिल में दया, करुणा, अनुकंपा एवं सहानुभूति के सद्गुण नहीं तो सब तीर्थ यात्रा, दान-पुण्य, भक्ति-उपासना आदि सभी क्रियाएं निरर्थक और बेकार है। दिल में अनुकंपा दया के भाव लाकर एक चींटी की भी रक्षा की जाये, वह पुण्य फल सैकड़ों यज्ञों और तीर्थयात्रा से बढ़कर श्रेष्ठ सुखदायी है। सभी वनस्पति के उगने में पानी और मिट्टी का बड़ा योगदान है। सभी रसों का मूल पानी है। इसी प्रकार सभी प्रकार के सद्गुण और धर्म का मूल भी दया और करूणा है। जैसे मूल के अभाव में वृक्ष टिक नहीं सकता, वैसे ही धर्म का मूल दया। अहिंसा नहीं रहेगी तो उन लोगों का आचरण धर्म कैसे हो सकता है। वधिक और मांसाहारी के दिल में दया और करुणा के भाव ही खत्म हो जाते हैं।

भगवान महावीर ने शिकार और मांसाहार को दुर्व्यसन कहा है। स्थानांग सूत्र में नरक गति में जाने के चार कारण बताये है - महाआरम्भ करने, महापरिग्रह रखने से, पंचेन्द्रिय जीवों का वध करने से और मांस भक्षण करने से।

प्राचीन आचार्यों ने मांस शब्द का अर्थ बताया है मां = मुझको, स = वह । दोनों अक्षरों को मिलाने पर अर्थ बनता है = जिसको मैं मारकर खा रहा हूँ, एक दिन वह भी मुझको मारकर खायेगा। गुरु नानक देव भी कहते हैं -

"जो गल काटे औरों का, अपना रहे कटाय ।
धीरे-धीरे नानक, बदला कहीं न जाय ।।"

कुछ अज्ञानी तर्क देते हैं अनाज के दाने में भी तो जीव होते हैं। जबकि एक बार के भोजन के लिए हजारों दाने पीसने पड़ते हैं। जबकि एक बकरा मारो तो कईयों का पेट भर जाता है। हाँ, यह कहना ठीक है कि अनाज में भी जीव होते हैं। उनकी तुलना बकरे से करना घोर अज्ञानता की निशानी है। क्योंकि अनाज के जीव अविकसित, अव्यक्त चेतना वाले प्राणी हैं। जबकि बकरे-मुर्गा आदि विकसित व्यक्त चेतना वाले प्राणी है। बकरे-मुर्गे आदि पशुओं को मारने वाले के प्रत्यक्ष में क्रूरता, निर्दयता के भाव रहते हैं। जबकि अनाज खाते हुए ऐसे भाव मन में नहीं आते हैं। अतः मांस आदि तामसिक चीजों की तुलना में सात्विक अनाज से करना

सरासर एकदम गलत है। मांसाहार करना मानव प्रकृति से सर्वथा विरूद्ध है। मानव प्रकृति से शाकाहारी है। क्योंकि शाकाहारी और मांसाहारी के बनावट में बड़ा ही अन्तर है।

मांसाहारी पशुओं के नाखून पैने-नूकीले होते हैं। जैसे- बाघ, शेर, कुत्ता एवं बिल्ली आदि। जबकि शाकाहारी के नाखून गोल-गोल होते हैं। मांसाहारी पशु पानी पीते समय जीव से चप-चप कर पीते हैं। जबकि शाकाहारी होठ टेककर अन्दर की ओर खींचता है। शाकाहारी प्राणियों को पसीना आता है, जबकि मांसाहारी को पसीना नहीं आता। आज के वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि बन्दर एकदम शाकाहारी प्राणी है। जीवन भर फल-पत्ती और अनाज से अपना जीवन चलाता है। मानव की बनावट भी एकदम बंदर से मिलती है अतः मानव एकदम शाकाहारी प्राणी है। मांसाहार तो उसके जीवन में बाहरी विकृत्तियों से आया हुआ है। मांसाहार उसका मूल स्वभाव नहीं है। मांसाहार देश के लिए आर्थिक दृष्टि से भी घातक है। गाय, भैंस, बैल आदि देश के लिए दूध और जोताई के लिए बहुत उपयोगी प्राणी है। दूध-दही, घी, गोबर आदि की प्राप्ति हमें गाय भैंस से ही होती है। गाय का दूध स्वास्थवर्धक, रोग प्रतिरोधक एवं सम्पूर्ण पौष्टिक तत्त्व उसमें विद्यमान है। इसीलिए गाय को माता कहकर पुकारा गया है।

जहाँ पर नैतिक और धार्मिक दृष्टि से मांस त्याज्य है, वहीं पर स्वास्थ्य की दृष्टि से भी त्याज्य है। प्रायः देखा गया है कि मांसाहार से कैंसर, क्षयरोग, पायरिया, गठिया, सिर दर्द, मृगी, लकवा, पथरी आदि अनेक जानलेवा बीमारियां उत्पन्न हो जाती है। दस हजार विद्यार्थियों पर परीक्षण किया गया। इनमें से पाँच हजार विद्यार्थी को केवल मांसाहार पर रखा गया।

5 माह के बाद जांच करने पर ज्ञात हुआ कि मांसाहारी की अपेक्षा शाकाहारी सभी बातों में तेज रहे। शाकाहारी में दया, क्षमा, प्रेम आदि गुण प्रकट हुए तो मांसाहारी में क्रोध भीरूता और क्रूरता के भाव प्रकट हुए। अतः धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं स्वास्थ्य आदि दृष्टि से मांसाहार सर्वथा त्याज्य है। अतः कभी भी मांस भक्षण न करें। उत्कृष्ट आहार शाकाहार ही है। ❖❖

क्यों लिखे जाते हैं महापुरुषों के जीवन चरित्र ?

महान महापुरुषों के जीवन चरित्र इसलिए लिखे जाते हैं, क्योंकि मानव के जीवन निर्माण में महापुरुषों के जीवन चरित्र से बढ़कर उपयोगी वस्तु अन्य कोई नहीं हो सकती है।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी का आधार या मार्गदर्शन जरूरी होता है, प्रत्येक व्यक्ति महापुरुषों के आदर्श की ही ग्रहण कर फलते-फूलते हैं और प्रगति पथ पर निरंतर अग्रसर होते रहते हैं।

महापुरुषों की जीवनियां सुप्त चेतना शक्तियों को जागृत कर उसमें आत्म-बल, आत्म-विश्वास का संचार करती है, मार्ग की बाधाओं से जूझते और आगे से आगे बढ़ने का साहस प्रदान करती हैं। उनके अनुपम त्याग, क्षमा, विवेक, वैराग्य को व्यक्ति, अपने जीवन के साथ तोलकर मंजिल का परिज्ञान कर सकता है।

यदि महापुरुषों के जीवन चरित्र न हो तो मानव अपने जीवन की मंजिल का निर्माण कैसे करेगा? मानव महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़कर अपने जीवन को अच्छा बनाने की प्रेरणा प्राप्त कर सकता है, कुछ महापुरुषों की जीवनी ऐसी होती है, जिसको पढ़ने से व्यक्ति के जीवन में तुरन्त परिवर्तन होता है।

ऐसे महापुरुषों का जीवन चरित्र लिखना आवश्यक ही नहीं, अपितु परम आवश्यक है। ❖❖

साभार :- तत्त्वार्थ सूत्र ...

प्रथम अध्याय : ज्ञान

– विद्या वाचस्पति आगम रत्नाकर प्रवर्तक पू. श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.

प्रारम्भिकी : 'तत्त्वार्थ सूत्र' के प्रथम अध्याय में मोक्ष पाने के साधनों का वर्णन है। ये साधन तीन हैं। इनको 'रत्नत्रय' कहा जाता है। ये हैं सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र। इनका प्राप्ति-क्रम यहाँ बतलाया गया है। सम्यग्दर्शन के लक्षण, भेद और उनकी उत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया है। तत्त्वों के नाम और उनको जानने के उपाय कहे गए हैं। वस्तु-तत्त्व के स्वरूप को समझने के लिए निक्षेपों का वर्णन हुआ है। सम्यग्ज्ञान के लक्षण और रूपों का भी इसमें है। कौन-सा सम्यग्ज्ञान कैसे, किसको और कब होता है, एक साथ एक आत्मा (जीव) में कितने ज्ञान रह सकते हैं, इन प्रश्नों का उत्तर भी यहाँ स्पष्ट किया गया है।

मोक्ष की ओर अग्रसर होना धर्म का सार है। यह मनुष्य जीवन का सार भी है। इस सार का आधारभूत ज्ञान पहले अध्याय की विशेषता है।

मोक्ष का मार्ग :

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ।। १ ।।

अर्थ-सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र समवेत रूप से (तीनों मिलकर) मोक्ष का मार्ग है, साधन है।

विवेचन – संसार दुःखों का आगार है, यहाँ दुःख ही दुःख भरे हैं। संसारी जीव इन दुःखों को भोगता रहता है। दुःखों से छूटने का एक ही उपाय है और वह है मोक्ष। उस मोक्ष को प्राप्त करने के मार्ग पर चलने के लिए संसारी जीव को तीनों बातों पर विशेष ध्यान देना होता है-एक, दर्शन, दूसरा ज्ञान और तीसरा चारित्र। दर्शन, ज्ञान और चारित्र इन तीनों के आगे सम्यक् विशेषण लगा हुआ है। सम्यक् का अर्थ है सत्य। सच्चा स्वरूप ही सम्यक् है। पदार्थों के सच्चे स्वरूप पर श्रद्धा या विश्वास रखना सम्यग्दर्शन है। इसी प्रकार पदार्थों के सच्चे स्वरूप को जानना सम्यग्ज्ञान है। सम्यग्चारित्र आत्मस्वरूप के अनुकूल आचरण है जो संसारी जीव को विषयों से दूर रखता है, राग-द्वेष को हटाता है। इससे संसारी जीव की समस्त प्रवृत्तियाँ आत्मोन्मुखी हो जाती हैं। संसार के दुःखों से जो मुक्त होना चाहता है, वह मोक्ष के मार्ग पर चल पड़ता है। दर्शन, ज्ञान और चारित्र जब सम्यक्त्व के साथ तीनों मिल जाते हैं या एक साथ हो जाते हैं, तब मोक्ष का द्वार खुल जाता है। इन तीनों में से जब तक एक की भी कमीं रहती है, तब तक मोक्ष का द्वार नहीं खुलता।

इस सूत्र में सबसे पहले सम्यग्दर्शन को रखा गया है, बाद में सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र को। इसका कारण है कि सम्यक् श्रद्धा के बिना ज्ञान संशयादि से युक्त मिथ्या हो सकता है और बिना सम्यक् श्रद्धा के चारित्र का टिकना और सुदृढ़ होना असम्भव है। इसलिए सम्यग्दर्शन सबसे पहले है। संसारी जीव के जिस समय मिथ्यात्व मोहनीय कर्म नष्ट हो जाते हैं। उस समय उसकी आत्मा में सम्यग्दर्शन प्रकट होता है। उसी समय ज्ञान के संशय, विभ्रम और विपर्यय-ये तीन दोष नष्ट हो जाते हैं। तत्क्षण सामान्य ज्ञान सम्यग्ज्ञान में बदल जाता है। तदुपरांत सम्यग्चारित्र की संभावना बनती है। मोक्षमार्ग में इन तीनों का होना परमावश्यक है। मोक्ष मार्ग पर चलते हुए इच्छाओं का अभाव हो जाता है और आत्मा का स्वभाव प्रकट हो जाता है। आत्म स्वभाव की प्रतीति ही शाश्वत सुख है, शेष सब सुखाभास है।

मोक्षमार्ग

	सम्यग्दर्शन	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्चारित्र
व्यवहार रूप में	सात तत्त्वों पर सही श्रद्धा	सात तत्त्वों का सही ज्ञान	अशुभ से निवृत्ति
निश्चय रूप में	परद्रव्यों से भिन्न आत्मा की रुचि	परद्रव्यों से भिन्न आत्मा का जानना	परद्रव्यों से भिन्न आत्मा का जानना

सम्यग्दर्शन

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।२।।

अर्थ-तत्त्व अर्थात् पदार्थ या वस्तु स्वरूप का अर्थ सहित ज्ञान पाते हुए उस पर निश्चयपूर्वक विश्वास

करना सम्यग्दर्शन है।

सम्यग्दर्शन
|
तत्त्व + अर्थ + श्रद्धा
|
भाव + भाववान (पदार्थ) + प्रतीति

विवेचन - मोक्ष का कारण समझने के लिए सबसे पहले सम्यग्दर्शन को जानना आवश्यक है। सम्यग्दर्शन को जानने के लिए 'तत्त्वार्थ' शब्द को समझना होगा। तत्त्वार्थ दो शब्दों से मिलकर बना है - एक तत्त्व और दूसरा अर्थ। तत्त्व में 'तत' मूल है और 'त्व' प्रत्यय है। 'तत' का अर्थ है सामान्य। 'त्व' प्रत्यय लगने से तत्त्व का अर्थ हुआ पदार्थ का स्वरूप-स्वभाव। 'अर्थ' का अभिप्राय है निश्चयपूर्वक। इस प्रकार 'तत्त्वार्थ' शब्द का अर्थ अभिप्राय है तत्त्व रूप अर्थ अर्थात् जो पदार्थ जिस रूप में है और उस पदार्थ का निश्चय किया जाता है, वह तत्त्वार्थ कहलाता है। तत्त्वार्थ पर श्रद्धा रखना सम्यग्दर्शन है। इस कथन को इस प्रकार से भी समझा जा सकता है कि तत्त्व भाव है और अर्थ भाववान। श्रद्धा में भाव और भाववान् दोनों का होना आवश्यक है। उनमें से एक का भी अभाव हो जाने पर श्रद्धा उत्पन्न नहीं होती। जब भाव विशिष्ट भाववान् की श्रद्धा होती है, तब सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है। जैन दर्शन प्रत्येक पदार्थ को द्रव्य यानी सामान्य और भाव यानी विशेष से समन्वित होना मानता है। सामान्य और विशेष के माध्यम से पदार्थ की यथार्थपूर्वक प्रतीति या अनुभूति सम्यग्दर्शन है। इसमें यह बात ध्यान देने योग्य है कि निश्चय की जो रुचि सांसारिक है, विषय-वासनाओं से भरी है, वह कभी भी सम्यग्दर्शन नहीं हो सकती क्योंकि ऐसी रुचि का परिणाम मोक्ष नहीं, संसार है। तत्त्व निश्चय की जो रुचि आध्यात्मिकता से अनुप्राणित है, वास्तव में वही सम्यग्दर्शन है क्योंकि उसका परिणाम संसार नहीं, मोक्ष है। इस सूत्र का अभिप्राय यही है कि शाश्वत तत्त्वों पर श्रद्धा और वह भी सम्यक्त्व के साथ होना सम्यग्दर्शन है। उत्तराध्ययन सूत्र (21/95) में इसी बात को इस प्रकार से अभिव्यक्त किया गया है-

'तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसेणं ।
भावेणं सद्दहंतस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं ।।

अर्थात् यथार्थ भावों से सद्भाव के निरूपण में उसी भाव से उन तत्त्वों (जीवादि) पर श्रद्धा या रुचिपूर्वक विश्वास, सम्यग्दर्शन है।

जीवों में सम्यग्दर्शन जगा अथवा नहीं, उसकी पहचान पाँच लक्षणों से की जा सकती है। प्रशम यानी रागादि की तीव्रता का न होना, यह पहली पहचान है। दूसरी पहचान है संवेग अर्थात् संसार, शरीर और भोगों से भयभीत होना यानि सांसारिक बन्धनों का भय। तीसरी पहचान है निर्वेद यानी विषयों में आसक्ति का कम होना। चौथी पहचान है अनुकम्पा यानी समस्त प्राणियों को अपना मित्र समझना, उनके दुःखों को दूर करने की इच्छा रखना। पाँचवी पहचान है आस्तिक्य यानि जीवादि पदार्थों को युक्ति प्रमाण से सिद्ध पदार्थों का स्वीकारना अर्थात् आगमानुसार जीवादि पदार्थों का जैसा स्वरूप बतलाया गया है, उन्हें उसी रूप में मानना। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि तत्त्वों या पदार्थों का उनके अपने स्वरूप-स्वभाव के अनुसार जो दृढ़ विश्वास है, वह सम्यग्दर्शन है।

सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति

तन्निसर्गादधिगमाद्वा ।।३।।

अर्थ-वह सम्यग्दर्शन निसर्ग अर्थात् स्वभाव से और अधिगम अर्थात् सद्गुरु के उपदेश आदि बाह्य निमित्त से उत्पन्न होता है।

विवेचन-सम्यग्दर्शन या तो स्वयं से ही या पर उपदेश से उत्पन्न होता है। इस दृष्टि से सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के दो हेतु हुए - एक, निसर्गज सम्यग्दर्शन और दूसरा, अधिगमज सम्यग्दर्शन। निसर्गज सम्यग्दर्शन में 'पर' (दूसरे) के उपदेश की या निमित्त की अपेक्षा नहीं रहती अपितु जीव के स्वयं के परिणाम या आन्तरिक भाव इतने निर्मल हो जाते हैं कि वह जीवादि पदार्थों (तत्त्वों) को स्वयं जानकर उन पर श्रद्धा करने लगता है, जैसे प्रत्येक बुद्ध करकण्डू को वृद्ध बैल को देखकर वैराग्य हुआ।

अधिगमज सम्यग्दर्शन में 'पर' यानि दूसरे की अपेक्षा रहती है। यह अपेक्षा या निमित्त प्रतिमा आदि धार्मिक वस्तु का अवलोकन हो सकता है या गुरु, साधु-साध्वी का उपदेश। कोई शास्त्र-स्वाध्याय (पढ़-सुनकर) हो सकता है या फिर सत्संग आदि। जैसे मेघकुमार को भगवान महावीर के उपदेश सुनकर सम्यग्दर्शन हुआ। दोनों स्थितियों में सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति का आन्तरिक कारण समान ही है और वह है कर्म का उपशम, क्षय या क्षयोपशम।

(... क्रमशः)

महान युग पुरुष थे : श्रुताचार्य, साहित्य सम्राट्, वाणी भूषण उत्तर भारतीय प्रवर्तक, आराध्य गुरुदेव परम पूज्य श्री अमर मुनि जी म.सा.

– दक्षिण सूर्य, पू. डॉ. श्री वरुण मुनि जी म.सा. 'अमर शिष्य'

प्रज्ञा पारमिता को समर्पित बोधवान चित्त का प्रकाश वह अनंत और अनादि शाश्वत प्रकाश है, जिसके समक्ष ब्रह्माण्ड भर के समस्त उपलब्ध प्रकाश-स्त्रोत फीके पड़ जाते हैं। देवताओं की कुल सृष्टि भी प्रज्ञा की नित्य और ध्रुव ज्योति के समक्ष अपने उन्नत तेजस्वी मस्तक नवाने में अपना सौभाग्य मानती है। प्रज्ञा के ऐसे ही जीवंत प्रतिमान थे हमारे आराध्य गुरुदेव, श्रुताचार्य, प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. जिनकी निर्मल प्रज्ञाज्योति से समस्त जिनशासन और जिन प्रवचन ज्योतित हुआ और सम्पूर्ण मानव जाति के लिए उदारतापूर्ण सर्वोदयी प्रकाश प्रकाशित हुआ। बोधपूर्ण प्रकाश का यह पर्व हमारे युग में धरा पर ज्ञान और जिन प्रवचन प्रभावना के नित नये उल्लसित क्षणों का निर्माता रहा है।

यह हम सबके लिए सौभाग्य की बात है। इतिहास के उज्ज्वलतम क्षण वे हैं, जब किसी के निमित्त से वीतराग वाणी का सम्यक् प्रकाशन हो जाये, लोक कल्याण की उदात्त भावना से कोई सेवा कार्य सफलता के शिखर तक पहुँच जाये, संघ और शासन की उन्नति के नए आयाम खुल आएँ, स्व और पर कल्याण की नई दिशाओं का उद्घाटन हो जाए और यह सब हमारे गुरुदेवश्री के व्यक्तित्व में हमने प्रत्यक्षतः पाया।

अविभाजित भारत के बलूचिस्तान का कस्बा है 'क्वेटा' और क्वेटा के भाग्य में भाद्रपद सुदी पंचमी विक्रम संवत् 1983 (सन् 1936) को चार चाँद लग गए जब श्रद्धानिष्ठ श्री दीवानचन्द्र जी मल्होत्रा एवं श्रद्धाशील माता श्रीमती बसंतीदेवी जी के गृह आँगन में एक स्वस्थ बालक का जन्म हुआ। बालक के जन्म से पूरे क्षत्रिय कुल मे प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। आस-पड़ौस, नाते- रिश्तेदारों से मिलने वाली बधाइयों का तांता लग गया। बालक का नाम रखा गया 'अमरनाथ'। अमरनाथ अपने जीवन की दिव्यता में इतना डूबेगा, इतना गहन रूप से रत होगा कि स्वयं स्वर्गों के निवासी अमर देवता भी अपना माथा नवा लेंगे, ऐसा अनुमान भी किसे था? परन्तु समय के साथ यह सब हुआ और अमरनाथ ने अमर मुनि के रूप में संयम और तप, ज्ञान और प्रवचन, लोक कल्याण और वीतराग वाणी प्रकाशन के नित नए इतिहासों का सृजन किया।

कवियों ने कल्पना की है कि गंगा जो है, वो त्रिपथगा है यानि स्वर्ग में आकाश-गंगा, धरती पर नदी गंगा और अधोलोक में पाताल-गंगा के नाम से बहती है और जीवों का उद्धार करती है। कवियों की इस काल्पनिक उड़ान को नमन है, परन्तु प्रवर्तक गुरुदेव का जीवन अहिंसा, संयम और तप की त्रिपथगा से जरूर संयुक्त था, उन्होंने सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र की पतित-पावनी गंगा का उद्गम बनकर संसारभर पर परम उपकार किया। लोक कल्याण के नित नए द्वार उद्घाटित होते गए और परिणाम यह हुआ कि बालक अमरनाथ पीछे रह गया और उसी का रूपांतरित रूप वाणी भूषण श्री अमर मुनि जी म.सा. जन नयन पथ विहारी बनकर प्रातः स्मरणीय स्थान पर विराजित हुए।

भारत के भाग्य में वह कुसमय भी आया जब भारत विभाजित हुआ और पाकिस्तान एक अलग देश बनाया गया। विभाजन की विभीषिका की काली छाया में लाखों लोग मृत्यु-मुख में धकेल दिए गए, तो लाखों लोग विस्थापित हो गए। अनाथों और अपनों से बिछुड़े लोगों की दुर्भागी पंक्ति का तो ओर-छोर ही नजर न आता था। इसी त्रासदी के समय ग्यारह वर्षीय बालक अमरनाथ भी अपने माता-पिता के साथ क्वेटा छोड़कर भारतीय सीमा में ही कहीं नया बसेरा खोजने निकल पड़े।

संसार ऐसा ही है, यहाँ सौभाग्य दुर्भाग्य एक साथ ही चलते हैं। जिस क्षण को हम सौभाग्य मानकर प्रसन्नता से फूल रहे होते हैं, उसी समय में दुर्भाग्य की कुटिल मुस्कुराहट हमारी तरफ व्यंग्य से दृष्टि जमाए रहती है और जिस क्षण को हम परम दुर्भाग्य मानकर रो-रोकर बिता रहे होते हैं, उसी क्षण में सौभाग्य अपनी मृदुल छत्र-छाया हमारे सर ऊपर किये चल रहा होता है। बालक अमरनाथ भी माता-पिता के साथ ट्रेन से भारत आये और अम्बाला कैन्ट रेलवे स्टेशन पहुँचे। स्टेशन पर उतरे लेकिन वहाँ भयंकर अफरा-तफरी मची हुई थी। सब लोग बदहवाश हो इधर-उधर आश्रय की तलाश में बेभान दौड़-भाग रहे थे। इसी दौड़-भाग में बालक

अमरनाथ माता-पिता से बिछुड़ गए और स्टेशन पर व्याकुलता से इधर-उधर उन्हें खोजने लगे। पहले अपना सुंदर शहर छूटा, घर छूटा और अब एकाएक माता-पिता भी छूट गए। बालक के लिए पूरी दुनिया भी छूटे तो भी अंतर नहीं पड़ता यदि माता-पिता संग-साथ हैं तो, पर यहाँ तो सब छूटने के बाद माता-पिता भी छूट गए। बिछुड़े बालक ने उन्हें खोजने में जितनी दौड़-धूप कर सकता था, की, और फिर हजारों-लाखों की उस भीड़ में, जहाँ किसी को अपनी ही सुध न थी तो उस बच्चे की पुकार पर भला कौन ध्यान देता, कौन उसे उसके माँ-बाप की सुध लाकर देता?

ग्यारह वर्ष का बालक अमरनाथ अम्बाला रेलवे स्टेशन पर माँ-बाप से बिछुड़ा हुआ आखिर कब तक इधर-उधर दौड़ता भागता। थक-हारकर चेहरे पर उदासी और भय मिश्रित भाव और आँखों में आंसू लिए एक कोने में जा बैठा। पर सौभाग्य ने साथ कहाँ छोड़ा था? लुधियाना के एक जैन श्रावक बंधु उधर से गुजर रहे थे। उनकी दृष्टि रोते हुए बालक अमरनाथ पर पड़ी। उनका हृदय बच्चे के लिए द्रविभूत हो उठा और उसके पास जाकर पूछताछ की तो पता लगा कि बच्चा माँ-बाप से बिछुड़ गया है। अब लाखों की अराजक भीड़ में कहाँ बालक के माता-पिता को खोजते? खैर, बहुत कोशिश करने के बाद जब माता-पिता नहीं मिले तो वे श्रावक जी बालक अमरनाथ को धर्म-पुत्र बनाकर अपने साथ ही लुधियाना ले आए। श्रावक जी आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म.सा. के परम उपासक थे और प्रतिदिन दर्शनार्थ रूपा मिस्त्री गली स्थित जैन स्थानक भवन जाया करते थे।

महाश्रमणी श्री सीता जी म.सा. की सुशिष्या श्री महिन्द्रा जी म.सा. का दीक्षा महोत्सव चल रहा था और इधर वे श्रावकजी बालक अमरनाथ को लेकर आचार्य श्री जी के दर्शनों के लिए चल दिए। बालक ने दीक्षा शोभा यात्रा देखी तो मन में सहज ही जिज्ञासा हुई और उसने श्रावक जी से पूछा- 'यह शोभा यात्रा किसलिए निकाली जा रही है और वह रथ में बैठी हुई लड़की कौन है, जिसे इतना सजाया गया है? श्रावक जी ने बताया कि यह लड़की जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करने जा रही है तो बालक ने पुनः पूछा कि दीक्षा क्या होती है? श्रावक जी ने कहा कि आओ मेरे साथ, मैं तुम्हें अपने गुरु महाराज के दर्शन करवाता हूँ और ये सारे प्रश्न तुम उन्हीं से करना। तुम्हें समाधान प्राप्त हो जाएगा। बालक उत्सुकता के साथ आचार्य श्री जी के दर्शन हेतु रूपा मिस्त्री गली स्थित जैन स्थानक भवन में पहुंचा। सीढ़ियाँ चढ़कर ज्यों ही प्रथम तल पर पहुंचे, वहाँ पर एक कक्ष जिसका द्वार खुला हुआ था, अचानक बालक अमरनाथ की दृष्टि कक्ष में एक पाट पर विराजमान जैनागम रत्नाकर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म.सा. की पुण्य देह पर पड़ी। एक अलौकिक प्रेरणा से स्वतः ही बालक के हाथ जुड़ गए। चरणों में पहुंचकर मस्तक स्वतः ही नत हो गया। आचार्य भगवन् की अमृत वर्षीणी वाणी बालक अमरनाथ के कानों में गूंजी कि बच्चा ! तुम आ गए! मैं कब से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे इस बात का दुःख है कि तुम अपने माँ-बाप से बिछुड़ गए हो, लेकिन विचार करो, अगर वहाँ नहीं बिछुड़ते तो यहाँ तक कैसे आना हो पाता?

बालक अमरनाथ आश्चर्य के साथ आचार्य श्री जी को देखने लगा कि ये बाबा जी कौन हैं? मैं तो पहली बार इनसे मिल रहा हूँ, पहली बार ही इन्हें देख रहा हूँ, फिर ये मेरा नाम कैसे जानते है? कहाँ क्वेटा बलूचिस्तान, कहाँ अम्बाला रेलवे स्टेशन और कहाँ लुधियाना? यहाँ बैठे-बैठे ये सब कैसे इन्होंने जान लिया? बालक अमरनाथ इन्हीं विचारों में डूब-उतर रहे थे कि तभी आचार्य श्री जी की मृदु वाणी पुनः उनके कानों में गूंजी कि बच्चा! जो बीत गया है, मैं उसे भी जानता हूँ और जो आने वाला है, मैं उसे भी स्पष्ट देख रहा हूँ। बालक अमरनाथ को लगा जैसे जीवन-नौका को किनारा मिल गया, भटके राही को मंजिल का सहारा मिल गया।

बालक अमरनाथ ने स्वयं को आचार्य भगवन् के श्री चरणों मे पूर्ण रूपेण समर्पित कर दिया और कहा कि गुरुदेव! मैं आपके चरणों में रहना चाहता हूँ, मुझे अपनी शरण में स्वीकार करो। कारण कि माता बसंतीदेवी से बालक अमरनाथ को बचपन की लोरियों से ही गुरु-भक्ति के संस्कार मिले थे जिसमें वो अक्सर कहा करती थी 'पुत्तर! गुरु रब्ब दा रूप हुन्दै ने, रब्ब रुस जाए तो कोई परवा नई, पर जिंदगी च कन्दे वी गुरु नू नई रूसाना।' माँ की वो लोरियाँ, गुरु भक्ति के वो गीत आज बालक के कानों में गूंज रहे थे और साक्षात् ऐसे सद्गुरु की चरण और शरण पाकर बालक अमरनाथ धन्यता का अनुभव करने लगा।

आचार्य श्री जी ने प्रश्न भरी निगाहों से श्रावक जी को

देखा और श्रावक जी ने विनयभाव से दोनों हाथ जोड़ते हुए नतमस्तक होकर कहा- 'गुरुदेव! यह तो मेरा परम सौभाग्य होगा कि मेरा धर्म पुत्र आपके श्रीचरणों की सेवा कर पाए। अब आचार्य श्री जी ने पास में ही सेवा में उपस्थित अपने पौत्र शिष्य मुनि श्री पद्मचन्द्र जी को बुलाया और कहा- भंडारी जी! आपने जीवन भर मेरी अथक सेवा की है। आज उस सेवा का मेवा देने का समय आ गया है। 'बालक अमरनाथ का हाथ आचार्य श्री जी ने श्री पद्मचन्द्र जी के हाथ में दिया और फरमाया - इस कोहिनूर हीरे को बड़े यत्न से तराशना। समय आने पर यह जिनशासन के मुकुट में शोभायमान होगा' और हम सब देख सकते हैं कि आचार्य श्री जी की वह भविष्यवाणी अक्षरशः चरितार्थ हुई।

बालक अमरनाथ ने कुछ समय आचार्य श्री जी के पास रहकर साधुओं की जीवनचर्या देखी, उन्हें देखा, उनके प्रवचन सुने और बालक के पूर्व पुण्योदय का बल देखिये और क्षयोपशम की शक्ति भी कि बड़ी-बड़ी उम्र के लोगों को जो बात समझ नहीं आती, वह बात प्रतिभा बल से बालक अमरनाथ ने जान व समझ ली। इस तरह दुर्भाग्य ने सांसारिक घर-बार, माता-पिता का स्नेहिल परन्तु अनित्य, अशाश्वत साथ छुड़वाया तो वहीं सौभाग्य ने ध्रुवधाम के सहचर सद्गुरु, जिनधर्म और निर्ग्रंथ प्रवचन की शाश्वत छत्रछाया में पहुंचा दिया और आरम्भ हुई एक नई कथायात्रा, जिसका पहला पगथिया समकित है और अंतिम पगथिया निर्वाण है।

कुछ समय तक आचार्य श्री जी की वात्सल्यपूर्ण सन्निधि में बालक अमरनाथ ने अपना समय धर्म के प्रारंभिक भाव बोध को समझने में व्यतीत किया और फिर परम पूज्य भंडारी जी म.सा. के सान्निध्य में बालक अमरनाथ को धर्म के अमृत का पोषण श्रुत ज्ञान के माध्यम से मिलने लगा। बालक भी नित नए सूत्र और शब्द ज्ञान पाकर खिलने लगा और अंततः वह सौभागी दिवस भी आ ही गया जब बालक अमरनाथ की जीवन-यात्रा में वह प्रातः बेला आयी जिसने उनके जीवन में संयम सूर्य की आभा को कण-कण में व्याप दिया। विक्रम संवत् 2008 की भादवा सुदी पंचमी का वह सौभाग्यशाली दिवस था और स्थान था सोनीपत मंडी हरियाणा का। जैन भागवती दीक्षा के महामार्ग पर कदम बढ़ाने वाले बालक अमरनाथ का नूतन नामकरण हुआ श्री अमर मुनि जी महाराज। संयम-मार्ग पर बढ़ते कदमों से बालक अमरनाथ ने सच्चे मायनों में अमर मुनि बनकर छह जीव निकाय का नाथ बनकर दिखाया।

भंडारी श्री पदचन्द्र जी म.सा. का शिष्य बनकर श्री अमर मुनि जी की ज्ञान आराधना की प्रशस्त यात्रा और अधिक व्यवस्थित और अनुशासित रूप से चलने लगी। हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, इंग्लिश, उर्दू, फारसी, अरबी, गुजराती आदि भाषाओं के ज्ञान के साथ ही साथ जिनागमों का तलस्पर्शी ज्ञान भी पूर्ण भाव बोध सहित अर्जित करने लगे। क्षयोपशम की तरलता से अमर मुनि जी जिस भी विषय पर अध्ययन की दृष्टि से उंगली रखते, वही विषय उनमें सहज ही उतरता चला जाता। उसकी गंभीरता को सहज ही हृदय में उतारते चले जाते, जन्मों-जन्म भी कम पड़ जाएँ जिस ज्ञान अर्जन में, उस ज्ञान को प्राप्त करने में अमर मुनि जी ने महज कुछ वर्षों का समय ही लगाया। इस तरह वे केवल श्रमण संघ या स्थानकवासी सम्प्रदाय के ही नहीं बल्कि जिनशासन और भारतीय धर्म एवं दर्शन परम्परा के पारगामी विद्वान बनकर उभरे।

सुस्वर नामकर्म और यशः कीर्ति नामकर्म का ऐसा सुंदर संयोग बना कि अमर मुनि जी को प्रकृति प्रदत्त सुंदर कंठ स्वर मिला। विद्वत्ता और चारू संभाषणता के साथ सुस्वर कंठ का संयोग तो ऐसा संयोग है, जिसकी अभिलाषा देवताओं को भी रहा करती है और गुरुदेव श्री अमर मुनि जी को यह सब उपलब्ध था। उनके कंठ से गीतों की स्वर लहरी जब निकलती तो चलते-फिरते लोग भी सहसा ठहर जाते और सम्मोहित से होकर बस सुनते ही चले जाते। मधुर भक्ति गीतों के साथ ज्ञान, ध्यान, विरक्ति, भक्ति, संयम, अहिंसा और सत्य पर विद्वत्तापूर्ण प्रवचन सुनकर आम जन झूम-झूम जाता तो वहीं बड़े-बड़े विद्वान् भी दांतों तले उंगली दबा जाते। अपनी निर्मल प्रज्ञा से जिनसूत्रों की ऐसी समुचित और समयानुकूल व्याख्या करते कि विद्वान संत-साध्वी जो भी सुनते तो सहसा ही कह उठते कि अमर मुनि जी ! पढ़े-लिखे तो हम भी खूब हैं परन्तु आप जिस प्रकार की नवीन युक्तियाँ देते हैं, नई प्रस्थापना करते हैं, यह प्रशंसनीय है। आप जिधर भी जाते, उधर ही जिनशासन की अभूतपूर्व प्रभावना का डंका

बज जाता था।

जिन प्रवचन प्रभावना की यह प्रशस्त यात्रा परम पूज्य गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म.सा. के निमित से बड़े ही महिमावंत रूप से आगे बढ़ती रही। आपश्री के प्रभावक व्यक्तित्व ने जिन प्रवचन की हर प्रकार से सेवा-भक्ति की और उसी के परिणामस्वरूप समाज ने अनेकों लोक कल्याणकारी संस्थाओं को आपकी पावन प्रेरणा-प्रसाद में पल्लवित-पुष्पित होते देखा। पद्म प्रकाशन, नरेला मड़ी, विभित्र क्षेत्रों में गुरु पद्म ज्ञान मंदिर, गुरु पद्म आई हॉस्पिटल (पश्चिम विहार, दिल्ली), गुरु पद्म जैन साधना केन्द्र एवं गुरु पद्म जैन आराधना भवन (मानसा मंडी, पंजाब), गुरु पद्म जैन चैरिटेबल फिजियोथेरेपी हॉस्पिटल, मंडी निहालसिंह वाला, पंजाब एवं राजस्थान आदि। यह तो केवल संक्षिप्त झांकी ही है। आपकी प्रेरणा से प्रकाश पाकर अन्य अनेकों सेवा कार्यों के लिए संस्थाओं का उदय हुआ जो आज भी जिनशासन एवं अमर गुरुदेव के कीर्ति स्तम्भ बने हुए हैं।

जिस एक कार्य ने पूज्य श्रुताचार्य भगवन् को विश्व प्रसिद्ध एवं युगपुरुष बनाया, वह है उनके द्वारा या उनकी सन्निधि में होने वाले सचित्र आगमों का अंग्रेजी भाषा सहित प्रकाशन। प्रकाशन के क्षेत्र में सचित्र और अंग्रेजी भाषा में आगमों का प्रकाशन होना, ये दोनों ही कार्य क्रान्तिकारी कदम थे, जिनका सम्पूर्ण समाज ने स्वागत किया और पूरे संसार ने अनुमोदना के स्वर समर्पित किये। विशुद्ध मूलपाठ, हिंदी भाषा सहित अंग्रेजी भाषा में अनुवाद और सचित्रता ने इन आगमों को सुरुचिपूर्ण तो बनाया ही, साथ ही अधिसंख्य जनता तक इनको जानने-समझने का रास्ता भी बनाया और इसके बाद जो आगम प्रकाशन के क्षेत्र में हुआ, वह सब तो स्वर्णिम इतिहास ही है।

ई. सन 2003 में परम पूज्य युग प्रधान आचार्य सम्राट् ध्यानयोगी डॉ. श्री शिव मुनि जी म.सा. के सस्नेह आग्रह पर एवं श्रीसंघ की विनती पर आपश्री ने उत्तर भारतीय प्रवर्तक पद के दायित्व को अंगीकार किया और उस भूमिका का वहन पूर्ण दायित्व बोध के साथ किया। यह भी तब ही सम्भव हो पाया जब आपके गुरुदेव भंडारी प्रवर्तक श्री जी का देवलोक गमन हो गया। अन्यथा गुरुदेवश्रीजी के रहते आपने कभी कोई पद स्वयं ग्रहण नहीं किया और न ही किसी संस्था पर स्वयं का नामोल्लेख होने दिया। जो भी पद-प्रतिष्ठा का अवसर आया, वह सब आपने गुरु चरणों में समर्पित किया। ऐसी गुरु-भक्ति का परिचय साधारणतः अन्यत्र दुर्लभ ही है।

दिनांक 13 फरवरी, 2013, बसंत पंचमी का वह दिवस भी आखिर आ ही गया, जब इस युग प्रवर्तक महापुरुष ने संथारा सहित समाधिमरण को अंगीकार किया और दिव्य लोकों की ओर गमन किया। भगवान महावीर की वीतराग वाणी को विश्व पटल पर प्रसारित करने का अथक प्रयास करने वाले श्री गुरुदेव ने आखिरकार अपनी देहयात्रा को विराम दिया।

एक संत के रूप में श्रुताचार्य भगवन् ने अपना जीवन पूरी सत्यता, स्पष्टता, सरलता और साहसिकता के साथ बिताया। निर्भीकता का अभय भाव तो आपका सहचर ही था, यह भी इसीलिए सम्भव हुआ, क्योंकि निर्मल और उत्तम चारित्र की सम्पदा सदैव आपने संजोकर रखी।

अपनी ओजस्वी वाणी से वीतराग वाणी का जीवोद्धारक और सर्वोदयी दिव्य घोष आप आजीवन जन समाज के मध्य अप्रमत्त भाव से करते रहे। आपकी मंजुल स्वर लहरी में जब आम जन दिव्य प्रवचन श्रवण करता था तो मंत्र मुग्ध हो जाता था। आजीवन आपने अपने दृष्टिकोण को ज्ञान-विज्ञान के प्रति पूरी सचेतता से खुला रखा और उसी का परिणाम रहा कि आपका व्यक्तित्व निर्विवाद रूप से युग प्रवर्तक रूप में प्रतिष्ठित हो सका।

आगमानुसार स्व-कल्याणकारी मणचर्या के निभावन के साथ ही पर-कल्याणकारी सद्कार्यों की शृंखला के लिए जन समूह को प्रेरित कर उसमें उनकी शक्ति को नियोजित करने का अद्भुत कार्य भी आप द्वारा सम्पादित हुआ। दार्शनिक दृष्टिकोण का समुचित विकास आपमें हुआ क्योकि जैनेन्द्री अनेकान्त दृष्टि एवं सम्यक्वाद के सम्यक् नयन लेकर आपने पौर्वात्य एवं पाश्चात्य दर्शनों का गंभीर अध्ययन किया। इससे एक ओर जिनेन्द्र कथित तत्त्व के प्रति श्रद्धा में पूर्ण दृढ़ता आयी तो दूसरी ओर सभी दार्शनिक मान्यताओं के प्रति सहज उदारता के भाव ने भी जन्म लिया और इसी उदार भावना का ही फल था कि हर धर्म, वर्ग, जाति आदि के लोगों ने गुरुदेव के सान्निध्य में आकर धर्म के सही स्वरूप को समझकर अपना जीवन धन्य बनाया। ऐसे युग पुरुष सद्गुरुदेव को अनंत श्रद्धा सहित कोटि-कोटि वंदन-नमन...!

❖❖

श्रमण संघ के हित में सोचे !

- दिनेश भलगट जैन, वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस, चेन्नई

तीर्थंकर प्रभु महावीर स्वामी की शासन परम्परा में स्थानकवासी पंथ के उदगम का मूल उद्देश्य सादगीपूर्ण आध्यात्मिक विचारधारा अपनाना था। अन्य पंथों से विच्छेद का कारण ही आडम्बर प्रदर्शन का समर्थन नहीं करना था, किन्तु शनैः शनैः समय बदला और स्थानकवासी जैन समाज भी अनेक सम्प्रदायों, विभिन्न विचारों में विभक्त होने लगा। एकता की भावना के फलस्वरूप आज से करीब 72 वर्ष पूर्व 22 सम्प्रदायों का विलीनीकरण कर त्याग, समर्पण, सेवा, संगठन को मजबूती प्रदान करने हेतु श्रमण संघ का सुनियोजित गठन पूज्यवरों एवं मान्यवरों के अथक प्रयास स्वरूप राजस्थान राज्य के सादड़ी में हुआ। सर्वमान्य व्यवस्थाएं बनी तथा संगठित संचालन से जिनशासन का सर्वत्र बिगुल बजने लगा एवं तीव्र गति के विकास के साथ स्वर्णिम काल को छूने लगा, किन्तु गत् वर्षों से देखा और पाया कि इसकी विचारधारा में परिवर्तन आना शुरू हो गया है।

एक आचार्य, एक संघ, एक समाचारी के उद्देश्य से समय-समय पर साधु-समाचारी में परिवर्तन किया गया, लेकिन स्थानकवासी जैन श्रमण की मूल सिद्धांत मान्यताए यथावत रखी गई। अंतिम साधु-सम्मेलन का आयोजन आचार्य प्रवर पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. की निश्रा व पाँच सौ से अधिक साधु-साध्वीवृंद की पावन उपस्थित में **'20 मार्च 2015 से 29 मार्च 2015'** में भव्य ऐतिहासिक प्रकल्पों सहित सुसम्पन्न हुआ।

आचार्य प्रवर, उपाध्यायश्रीजी, महामंत्रीजी तथा वरिष्ठ मुनिराजों ने गहन मंथन कर भविष्य को दृष्टिगोचर रखते हुए एक दूरगामी सोच के साथ पुरानी समाचारी में समयानुकूल आवश्यक संशोधन करके नवीन साधु-समाचारी को आम सहमति से चतुर्विद संघ की साक्षी में साधु-सम्मेलन में प्रस्तुत कर तुरंत प्रभाव से लागू करने की बात तत्कालीन महामंत्री पूज्य श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा. 'कुमुद' ने भरी सभा में उपस्थित जनसमूह के समक्ष प्रस्तुत की तथा इस प्रस्ताव का मंचासीन सभी पदाधिकारी संतगण एवं मौजूद सभी संत-सतीवृंद तथा श्रावक-श्राविकाओं ने हर्ष ध्वनि के साथ अनुमोदन किया, किन्तु आज धरातल पर समाचारी के नियम-उप नियम गौण करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रश्न है कि सिर्फ समाचारी की घोषणा मात्र से क्या होगा? जब तक क्रियान्वित नहीं किया जाएगा, तब तक वह कागज का मात्र टुकड़ा है। श्रमण संघीय साधु-समाचारी को लागू कर अपनाना सभी श्रमणों, श्रावकों का दायित्व है, इसी में श्रमण संघ की शान और शोभा है।

अत्यंत विचारणीय विषय है कि कथित समाचारी तथा हमारे पूज्य संत-सतीवृंद के अनेक विषय सोशल मीडिया पर दिन-प्रतिदिन विवादों को जन्म दे रहे हैं। हालांकि जैन कॉन्फ्रेंस इन प्रस्तुतकर्ताओं का समर्थन कतई नहीं करती हैं और ना ही ऐसे लोगों के प्रति सद्भाव की भावना रखती है जो हमारे पूज्यवरों के खिलाफ कुछ भी लिखें उनका जैन कॉन्फ्रेंस सदैव खंडन करती है और करती रहेगी। जैन कॉन्फ्रेंस ने इस विषय पर अनेक बार ऐसे लोगों के प्रति कठोर कदम उठाएं है और उठाती रहेगी, फिर भी इसे चेतावनी स्वरूप स्वीकार करना चाहिए। आज अनेक विषय जैन कॉन्फ्रेंस को ईमेल, व्हाट्सऐप, फोन कॉल आदि के माध्यम से प्राप्त हो रहे हैं। ऐसा लगता है हमसे कई मुद्दों पर चूक हो रही है। इसी तरह कितने दिन दुर्भावना का वातावरण चलता रहेगा, इस विषय पर अब चिंतन की नितांत आवश्यकता है। आचार्य प्रवर के मार्गदर्शन में वरिष्ठ संतों व बुद्धिजीवियों को इस पर गहन सोच-विचार कर सकारात्मक मार्ग समाज को बताने की आवश्यकता है।

श्रमण संघ 1200 साधु-साध्वीवृंद का सुदृढ़ विशाल संगठन है। इसमें नाना प्रकार के तपस्वी, मनस्वी, यशस्वी अणगार है, किन्तु आधुनिकता की चकाचौंध अनेकों संतों से टकराने लगी है। शुद्ध सात्विक संयम का पथ कहीं डगमगा न जाए, भौतिक सुख साधन परम्परों को मूल परम्पराओं को नष्ट ना कर दे। श्रमण संघ ही नहीं इसके श्रावकों समर्थकों पर अब उंगलियाँ उठने लगी है। एक बड़ा बुद्धिजीवी श्रावक वर्ग वर्तमान व्यवस्था से नाखुश है। संत दीक्षा लेता है, **'स्व'** कल्याण के साथ **'पर'** कल्याण के उद्देश्य से, लेकिन श्रमण

संघ में अनेक संत परिग्रहों को अपनाकर, स्वयं की इच्छापूर्ति के साथ सुख-सुविधाएं अपनाने लगे हैं। चातुर्मास व अन्य आयोजनों में सोने-चाँदी के सिक्के बांटना, महंगी प्रभावना, लक्की ड्रॉ, महंगे स्टेज डेकोरेशन, डॉन्स आदि हमारी जैन संस्कृति/सभ्यता का हिस्सा नहीं हो सकते है। सामायिक प्रवचन में पंखें, कूलर आदि चलाना कदापि उचित नहीं है। ऐसा करके हम पुण्य के स्थान पर कोई और पाप की गठरी तो नहीं बांध रहे हैं। हमारे जैन धर्म का मूल 'अहिंसा परमो धर्मः' है, ऐसे में सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों की विराधना भी हमसे नहीं होनी चाहिए। प्रवचन का समय जिनवाणी श्रवण करने का होता है। उस समय में भी अतिथि स्वागत, सत्कार, व्यक्ति विशेष गुणगान, कलश अनुष्ठान करना तथा बोली लगाकर धन संग्रहण करना कहाँ तक उचित है। व्यक्ति प्रवचन में जिन वाणी, गुरु वाणी सुनने-समझने आता है ना कि इन ढ़िंढ़रों को सुनने। आज इन्हीं कारणों से अनेक महानुभाव हमारे पूज्य संत-सतियों के प्रवचन तक में आना पसंद नहीं करते हैं।

चातुर्मास में सकल संघ गौतम प्रसादी सीमित संख्या में होनी चाहिए, तभी उसकी मर्यादा, महत्ता रहेगी तभी व्यक्ति उसे प्रसाद समझ कर ग्रहण करेगा। सभी पहलुओं का अध्ययन, आत्म मंथन करें तो यह सब वास्तव में 'श्रमण संघ जयवंत हो' के मार्ग को अवरूद्ध कर रहे हैं। इससे आम जन-मानस नाखुश हैं, एक गलती से हजारों गलती निकलती है, मनगढ़ंत अनुमान लगाये जाते हैं तथा अनर्गल बातों का दूषित सा वातावरण बनता जाता है।

आज श्रमण संघ एक अजीब से दोराहे पर खड़ा है।, परस्पर समन्वय का अभाव है, परहित के स्थान पर निज हित की प्रधानता है। हर कोई श्रमण संघ के स्थान पर अपने पारिवारिक गुरु या सम्प्रदाय की सेवा तक ही सीमित रहना चाहता है। श्रमण संघ एक व्यापक विचारधारा है, गुरु एक सेवा अनेक की भावना हृदय में स्थापित होनी चाहिए। समय पर नहीं संभला तो इसका पुनः सम्प्रदायवाद में लौटना तय है तथा अन्य धर्मों की तरह मठाधीश की परम्परा हमारे स्थानकवासी समाज में शुरू होने की संभावना है। संगठन में शक्ति है, पृथक होने पर सभी का नुकसान है, जब तक एकता बनी रहेगी, शासन पताका बढ़ेगी। श्रमण संघ किसी एक व्यक्ति विशेष का नहीं है। आचार्य भंगवत के नेतृत्व के साथ उनके समस्त शिष्य अनुयायी, इसके कर्त्ता-धर्त्ता है पोषणकर्ता है, इसके संवर्धन की जिम्मेदारी सामूहिक है।

आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. ने भी इस संबंध में समय-समय पर श्रमण संघ के विकास तथा चातुर्मास आयोजनों पर उचित दिशा-निर्देश जारी किये हैं। वहीं श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली ने इस गंभीर विषय को अनेकों बार समाज के समक्ष गंभीरता से प्रस्तुत किया है। आचार्य भगवन् के आशीर्वाद एवं युवाचार्यश्रीजी की प्रेरणा व सभी वरिष्ठ संतों के मार्गदर्शन से एवं उनके सान्निध्य में श्रमण संघ निष्ठा पत्र का शुभारंभ 'अक्षय तृतीया 2024' को इसी उद्देश्य पूर्ति हेतु किया गया था। श्रमण संघीय श्रावक-श्राविकाओं का राष्ट्रव्यापी डाटा एकत्रित हो तथा श्रमण संघ विकास की सेवा योजनाओं को सुचारू रूप से लागू किया जा सके, इसके लिए श्रमण संघ निष्ठा पत्र ऑनलाइन और ऑफलाइन श्रमण संघीय सभी चातुर्मास स्थलों पर उपलब्ध है। किन्तु यह भी धरातल पर धीमी गति का समाचार के अतिरिक्त कुछ नहीं, इसको जितनी तवज्जो मिलनी चाहिए उतनी नहीं मिल पा रही है। सामूहिक प्रयास होंगे तभी हम इस कार्य में सफल हो पाएंगे।

अतः विनम्र निवेदन है कि श्रमण संघ हमें पूर्वजों से प्राप्त अनमोल विरासत है, इसे सदैव अक्षुण रखने का दायित्व, कर्त्तव्य हमारा ही है। सभी प्रतिज्ञा लें कि इसकी गरिमा को आगे बढ़ाने वाले कार्य ही सदा करेंगे, कहीं कुछ कमीं है तो उसे अपने स्तर पर सुधारने का प्रयास करेंगे व श्रमण संघ सुवास ख्याति को अधिकाधिक फैलाने का कार्य करेंगे। मेरी शब्दावली कठोर हो सकती है, लेकिन जन हित, संघ हित में श्रमण संघ हित में है। मेरा सभी गुरु भगवंतों तथा श्रावकों से निवेदन है कि इस विषय पर एक राष्ट्र व्यापी योजना बनकर क्रियान्वित हो तथा हमारा श्रमण संघ अविचल मंगल हो। चातुर्मास अपने उत्तरार्द समय पर चल रहा है, अधिकाधिक सेवा का लाभ लेवे, चातुर्मास धर्म प्रदान हो यही मंगलकामनाएं, हार्दिक क्षमापना।

❖❖

श्रमण संघ के भावी अनुशास्ता, प्रज्ञा महर्षि, आगम रत्नाकर, युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा के 58वें जन्मोत्सव पर

- **नेमीचंद दलाल जैन,** राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य, बैंगलोर (कर्नाटक)

महापुरुषों की पहचान उनके गुणों से होती है। महापुरुषों का उत्कृष्ट संयम, साधना एवं चारित्र की महानता ही उनके जीवन का परिचय होती है। महापुरुष पारस पत्थर की तरह होते है, जिसके स्पर्श मात्र से लोहा स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है। ऐसे ही एक महापुरुष का जन्म चाकण गाँव में 05.10.1967 को हुआ। जिन्हें मात्र 7 वर्ष की उम्र में गुरु आनंद का सान्निध्य पाकर वैराग्य के बीज अंकुरित हुए। आचार्य श्री आनन्दऋषिजी महाराज की शरण में आपने सेवा, ज्ञानार्जन, सभी कलाओं का ज्ञान अर्जित किया। 15 वर्ष की अल्पायु में दिनांक 03.02.1982 को आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. ने आपश्री को पुणे में संयम पथ अंगीकार कराया और आप बाल मंजु भटेवरा से मुनि महेन्द्रऋषि बने। गुरु आज्ञा ही सर्वोपरि है इस संकल्प के साथ आपश्रीजी की संयमी जीवन की यात्रा आरम्भ हुई।

गुरु आनंद का स्वप्न था कि उनका सुयोग्य शिष्य महेंद्रऋषि महान पंडित तथा शास्त्रों का ज्ञाता बनकर संस्कृत, प्राकृत का अध्यापन संत-सतियों को कराए। उस स्वप्न को साकार होते आज हम सब देख रहे है। आपने गुरुदेव की अपार कृपा से संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती जैसी भाषाओ पर प्रभुत्व पाया।

गुरुवर श्री आनंदाचार्य का पवित्र पावन सान्निध्य एवं वरदहस्त आपके जीवन निर्माण में वरदान बना। शिष्य का समर्पण ही उसके जीवन निर्माण की भूमिका प्रशस्त करता है। गुरु ने शिष्य की पात्रता को देख अनमोल खजाना शिष्य को सहर्ष प्रदान कर दिया। युवाचार्यश्रीजी ने विनय गुण के माध्यम से उसे न सिर्फ ग्रहण किया अपितु उस ज्ञानराशि को सुरक्षित भी रखा और संवर्धित भी किया।

श्रमण संघ के युवाचार्य पद पर सुशोभित श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. का व्यक्तित्व ऐसा गरिमामय और महिमामय है जो उन्हें अन्य साधकों से अलग करता है। आप आचार्य श्री आनंदऋषि म.सा. की अनमोल शिष्य रत्नमाला के एक चमकते मोती है। ऐसे युवाचार्य भगवन को पाकर श्रमण संघ धन्य है। आपकी प्रभावशाली प्रवचन शैली धर्मनिष्ठ श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने वाली है।

श्रमण संघ के महाप्राण, जन-जन के श्रद्धा के केंद्र युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. प्रतिभा सम्पन्न व सदा हँसमुख रहते है तथा आपश्री का मिलनसार स्पष्ट व मधुर स्वभाव हम सबको आकर्षित करता है। गुरुजनों के प्रति विशेष आदर भाव व छोटे संतो के प्रति स्नेह भाव आपश्रीजी में सदैव परिलक्षित होता रहता है।

आपने शिवाचार्यश्रीजी की सेवा में रहकर यह प्रमाणित कर दिया कि जिनशासन में सेवा-साधना-संयम का बल ही आत्म बल बढ़ाता है। युवाचार्य भगवन को पाकर श्रमण संघ धन्य है। आपकी प्रभावशाली प्रवचन शैली धर्मनिष्ठ श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने वाली है।

आचार्य भगवंत के साथ 2015 के सूरत चातुर्मास के पश्चात् 2016 का ऐतिहासिक व यशस्वी ही नहीं किंतु गौरवमय बैंगलोर चातुर्मास के सुनहरेपल आज भी याद आते है। मैं बड़ा ही सौभाग्यशाली रहा जो मुझे युवा अध्यक्ष के रूप में वह सुनहरा एवं स्वर्णिम अवसर मिला। उस दौरान गुरुदेव को नजदीक से देखने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। आपका स्तवन **'ओ भगवन तेरा ध्यान धरु मैं ..२'** आज भी हमारे कानो में गूंजता है।

निश्चित ही युवाचार्यश्रीजी के बैंगलोर आगमन से युवाओ में जागृति व युवाओं के मनोबल व उत्साह में अपार अभिवृद्धि हुई। वह चातुर्मास हमारे लिए जीवन का स्वर्णिम चातुर्मास था। चाहे शिव-महेंद्र सौभाग्य विहार सेवा हो या युवा कॉन्फ्रेंस विहार सेवा हो, युवाचार्य भगवन की ही प्रेरणा से बनी है और आज भी अमूल्य सेवाये हमारे युवा विहार की दे रहे है। आचार्य भगवन डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. को कोटि-कोटि वंदन नमन ! जिन्होंने श्रमण संघ को उतराधिकारी के रूप में युवाचार्य भगवन को प्रदान किया।

वर्तमान में चेन्नई में आपका चातुर्मास आध्यात्मिक परिपूर्णता व धार्मिक गतिविधियों द्वारा गतिमान है। आपकी प्रवचन शैली और भी मधुर एवं प्रभावित करती है।

सकल श्रीसंघ आपश्री के योगदानो का सदैव ऋणी रहेगा। आपके 58वें जन्म दिवस के पावन प्रसंग पर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ राजाजीनगर बैंगलोर व सम्पूर्ण जैन कॉन्फ्रेंस की और से आपकी सुखसाता पूछते हुए यही मंगल कामना करता हूँ कि आपका स्वास्थ्य सदैव उत्तम बना रहे व हम संघ समाज को सदैव आपश्री अपना मार्गदर्शन व आशीर्वाद प्रदान करते रहे। युवाशक्ति को आपकी प्रेरणा, मार्गदर्शन हमेशा मिलता रहे।

जिस श्रमण संघ को गुरु आत्म-आनन्द-देवेन्द्र-शिव ने पनपाया है, जिस वटवृक्ष को सींचा है, उस वृक्ष को पल्लवित और पुष्पित करें। आपके दिशादर्शन में श्रमण संघ को नई दिशा मिले और श्रमण संघ सुदृढ़ और मजबूत बनें यही मंगलकामना ! ❖❖

संविधान बनाने में जैनों का योगदान

- साभार : सोशल मीडिया

राजनीतिक कारणों से भारत के संविधान के निर्माता के रुप में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को प्रचलित कर रखा है। इसका सबसे बड़ा कारण है कि वे दलित समाज से आते थे और दलित वर्ग उनको भगवान की तरह पूजने भी लगा है।

उनके स्मृति दिवस को भी 'महापरिनिर्वाण दिवस' के रुप में मनाया जाता है। सभी पार्टियों की मजबूरी है कि जय-जय बाबा साहेब अंबेडकर कहते रहें।

सच ये है कि संविधान निर्माता समिति (संविधान सभा) में 299 सदस्य थे। कई समितियां थीं। डॉ. अंबेडकर भी प्रारुप कमेटी के अध्यक्ष थे, पर संविधान बनाने का सारा श्रेय उनके ही खाते में गया। संविधान सभा लगभग 3 वर्ष (2 वर्ष, 11 महीने, 17 दिन) कार्यरत रही थी, तब कहीं जाकर संविधान का मसौदा तैयार हो सका था। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि संविधान बनाने वाली संविधान निर्माता समिति में 6 जैन विद्वान भी शामिल थे। संविधान निर्माण कार्य में इनकी विशेष भूमिका रही है। जिसके लिए जैन समाज गौरवान्वित है।

1. **श्रीमान रतनलालजी मालवीय, (मलैया) सागर (मध्य प्रदेश)**
2. **श्रीमान अजितप्रसादजी जैन, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)**
3. **श्रीमान कुसुमकांतजी जैन, झाबुआ जिला (मध्य प्रदेश)**
4. **श्रीमान भवानी अर्जुन खीमजी, कच्छ (गुजरात)**
5. **श्रीमान बलवंतसिंहजी मेहता जैन, उदयपुर (राजस्थान)**
6. **श्रीमान चिमनभाई शाह, सौराष्ट्र (गुजरात)**

(संविधान सभा के अंतिम दिन 24 जनवरी 1950 को सभी सदस्यों के हस्ताक्षर हुए। संविधान की तीन प्रतियाँ एक हस्तलिखित अंग्रेजी में, एक छपी अंग्रेजी में व एक हस्तलिखित हिन्दी की प्रति पर सभी सदस्यों ने हस्ताक्षर किये। पूरी प्रति चित्रों से सुसज्जित की गई।

चित्रों के माध्यम से क्रमशः पूरा इतिहास दर्शाया गया। प्रथम पृष्ठ पर मोहनजोदड़ो से प्राप्त उस सील को दर्शाया गया है, जिस पर एक बैल अंकित है। पृष्ठ 63 पर भगवान महावीर का चित्र अंकित है। पृष्ठ 151 पर महात्मा गाँधी को तिलक करती एक महिला चित्रित है, जो गाँधीजी की दांडी यात्रा के समय का है। ज्ञातव्य है कि गाँधीजी की दांडी यात्रा के समय महिलाओं का नेतृत्व श्रीमती सरला देवी साराभाई (जैन) ने किया था।

समस्त जैन बंधुओं को यह एतिहासिक तथ्य पता होना चाहिये, पर जैन तो जैन हैं। कृपया इस जानकारी को अपने मित्रों, परिवारजनों के सदस्यों के साथ अवश्य साझा करें, ताकि जैनों के महत्वपूर्ण इतिहास से हम सभी अवगत हो सकें।

ऐंद्रजालिक गुण सौरभ

- संजीव जैन, करनाल (हरियाणा)

बहुत समय पहले भारतवर्ष में एक अवंतिकापुरी नाम की नगरी थी। उस नगरी या राज्य का राजा विजयपाल अपने मंत्री, सेनापति व अन्य मंत्रियों के सहयोग से अपने राज्य का सफलतापूर्वक व कुशलतापूर्वक संचालन करता था। विजयपाल बहुत ही न्यायप्रिय प्रकृति का राजा था। वह किसी के साथ भी अन्याय नहीं करता था और हर व्यक्ति को अपना पक्ष रखने का मौका देता था। वह बड़ा ही प्रजावत्सल भी था। प्रजा पर करों का बोझ बहुत कम था जिससे उसके राज्य में खुशहाली थी। उसके राज्य में कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं सोता था और न ही कोई भिखारी उसके राज्य में था। विजयपाल राजा बहुत ही धार्मिक प्रवृति का व्यक्ति था। धर्म को लेकर लोगों में कोई झगड़ा नहीं था। सभी परस्पर मिलजुल कर सारे त्यौहार मनाते थे। राज्य की ओर से भी मंदिरों को अनुदान दिया जाता था। राजा विजयपाल ज्ञान, कला व कारीगरी का कद्रदान था। जो भी कोई व्यक्ति उसके दरबार में किसी विशेष कला का प्रदर्शन करता था वह उसे उचित पारितोषिक देकर उसका सम्मान करता था। कोई कारीगर अगर अनोखी कारीगरी से निर्मित कोई कलाकृति लेकर आता तो राजा उसे क्रय कर लेता था। इस प्रकार अंवतिकापुरी को किसी मायने में इंद्रपुरी भी कहा जा सकता था।

राजा विजयपाल की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। अन्य राज्यों के कलाकार भी अपनी कला का प्रदर्शन करने उसके दरबार में आया करते थे। राजा ने आज तक किसी को भी निराश नहीं किया था। एक दिन प्रातःकाल दरबार अभी शुरू ही हुआ था कि द्वारपाल ने आकर सूचना दी कि कोई अजीब-सी शक्ल वाला व्यक्ति महाराज से मिलना चाहता है। राजा ने उसे अंदर लाने की आज्ञा दे दी। मंत्री राजा को कुछ कहना चाहता था क्योंकि उसे किसी विशेष मुद्दे पर राजा से मंत्रणा करनी थी मगर राजा ने इशारे से मंत्री को रोक दिया। जब वह व्यक्ति अंदर आया तो उसने राजा व अन्य मंत्रियों का अभिवादन किया। राजा ने उसका नाम, काम और आने का कारण पूछा। उस व्यक्ति ने जवाब दिया- मेरा नाम गुणसौरभ है, मैं एक ऐंद्रजालिक हूँ और आपको कुछ दिखाना चाहता हूँ।

राजा ने उसे आज्ञा प्रदान कर दी। गुणसौरभ ताली बजाने ही वाला था कि एक द्वारपाल ने आकर सूचना दी कि एक गुप्तचर महाराज से अभी और इसी समय मिलना चाहता है। राजा ने मंत्री को बुलाकर उसके कान में कुछ कहा और स्वयं एकदम उठकर सिंहासन के पीछे से होता हुआ महल के एक विशिष्ट मंत्रणा कक्ष में प्रविष्ट हो गया। मंत्री ने गुणसौरभ को थोड़ा समय रुकने के लिए कहा और उसे उचित आसन पर बिठा दिया।

इधर गुप्तचर भी मंत्रणा कक्षा में प्रविष्ट हुआ। सैनिकों ने कक्षा के कपाट बंद कर दिए। गुप्तचर ने राजा का अभिवादन करने के पश्चात् अपने आसन पर बैठते हुए कहा-महाराज! हमारे पड़ोसी राज्य दुर्जनपुर का राजा दुर्जनसिंह अपने अन्य दो साथी राजाओं, शत्रु सिंह व कुमारपाल के साथ मिलकर हमारे राज्य की पूर्वी सीमा पर आक्रमण करने की बहुत ही जबर्दस्त तैयारी कर रहा है। आप यह समझ लीजिए कि वे 5 से 6 घंटे में ही हमारी पूर्वी सीमा पर धावा बोल देंगे। मेरी आपसे विनती है कि आप समय नष्ट न करते हुए शीघ्रतापूर्वक उनका सामना करने के लिए युद्धभूमि की ओर प्रस्थान कीजिए।

क्या तुम्हारी सूचना बिल्कुल सत्य व सटीक है। राजा ने गुप्तचर से पूछा। राजा की आवाज में कुछ जल्दबाजी के लक्षण दिखाई दे रहे थे। अन्नदाता, मेरी सूचना अक्षरशः सत्य है। मैं बहुत नजदीक से उनकी सैन्य तैयारियों का अवलोकन करके आया हूँ। मेरी आपसे पुनः विनती है कि आप समय नष्ट न करें, शीघ्र सेना को कूच करने का आदेश दें।

राजा ने गुप्तचर को जाने के लिए कहा और द्वार पर तैनात सैनिक को मंत्री व सेनापति को बुलाने के लिए कहा। उनके आते ही राजा ने उनके समक्ष सारी स्थिति बयान कर दी। उन दोनों ने भी शीघ्रातिशीघ्र युद्धभूमि की ओर प्रस्थान करने की सलाह दी। सारी तैयारी करके राजा विजयपाल

अपनी सेना के साथ रथ पर सवार होकर युद्धभूमि की ओर चल दिया।

गुप्तचर की सूचना अक्षरशः सत्य थी। राज्य की पूर्वी सीमा पर पड़ोसी राजा दुर्जनसिंह अपने साथी राजाओं के साथ युद्ध की बहुत बड़ी तैयारी करके उपस्थित था। उन तीनों राजाओं के मिलाकर 45000 के आस-पास सैनिक थे जबकि विजयपाल के पास 25000 सैनिक थे। इस बार टक्कर कांटे की नहीं थी अपितु एकतरफा जीत की ओर संकेत कर रही थी। विजयपाल ने बातचीत के लिए दूत भी भेजा मगर राजा दुर्जनसिंह ने दूत से बात करने से ही मना कर दिया। अब युद्ध अवश्यम्भावी हो चुका था।

सेना युद्ध शुरू करने से पहले विजयपाल ने अपनी सेना का मनोबल बढ़ाया। जिससे उसके सैनिकों में साहस, हौंसले व जोश की एक नई लहर दौड़ गई। दुश्मन की सेना गिनती में उनसे लगभग दोगुनी थी। राजा विजयपाल की सेना ने डटकर मुकाबला किया। मगर परिणाम तो सबको पहले से ही पता था। भीषण युद्ध करने व हजारों शत्रु सैनिकों को मारने के पश्चात् भी राजा विजयपाल युद्ध हार गया और उसे बंदी बना लिया गया। जब उसे राजा दुर्जनसिंह के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

दुर्जनसिंह ने विजयपाल से पूछा-विजयपाल, देवी माँ की मुझ पर अपार कृपा के कारण आज मैंने तुम्हे परास्त कर दिया है। अब तुम ही मुझे बताओ कि तुम्हारे साथ मैं कैसा व्यवहार करूँ ?

जैसा व्यवहार एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है। राजा विजयपाल ने निडरता से उत्तर दिया। वह तुम्हारी नीति है, हमारी नहीं। इतना कहते ही राजा दुर्जनसिंह ने अपनी तलवार म्यान से बाहर खींच ली और कुटिल हंसी हँसते हुए कहने लगा - मैं तुम्हे जीवित नहीं छोड़ूंगा। तुम्हें जिसे भी याद करना हो कर लो। तुम्हारे पास केवल दो-चार क्षण ही शेष बचे हैं।

राजा विजयपाल हाथ जोड़कर अरिहंत परमात्मा का ध्यान करने लगा और नवकार महामंत्र का जाप करने लगा। दुर्जनसिंह ने पुनः विजयपाल को चेताते हुए अपनी तलवार उसकी गर्दन पर रख दी। राजा विजयपाल अंतर्मन की ओर अधिक गहराई में उतरकर सम्पूर्ण श्रद्धा भक्तिभाव पूर्वक नवकार महामंत्र का जाप करने लगा और उसने एकदम भाव संथारा ले लिया।

इतने में किसी के चुटकी बजाने की आवाज राजा विजयपाल के कानों में पड़ी और उसे किसी के शब्द सुनाई दिए - आँखें खोलिए राजन् ! आप कहाँ खो गए हो ?

जैसे ही राजा विजयपाल ने आँखें खोली। ना तो उसकी गर्दन पर तलवार थी, ना राजा दुर्जनसिंह वहाँ था और ना ही वह युद्धबंदी था। वह तो अपने सिंहासन पर ही आँखें बंद करके हाथ जोड़कर बैठा नवकार महामंत्र जप रहा था। उसने एकदम अपने सिंहासन से खड़े होकर तालियाँ बजाई और बोला-अद्भुत ! आश्चर्यजनक ! ऐन्द्रजालिक गुणसौरभ ! हम तुम्हारी इस कला व इन्द्रजाल पर सम्पूर्णतया मोहित हो चुके हैं। तुम निःसन्देह अपनी कला में महारत रखते हो। हम अत्यन्त प्रसन्न, प्रभावित व मंत्रमुग्ध हैं। माँगो, क्या माँगते हो?

राजा की खुशी व हैरानी का कोई ठिकाना नहीं था। जो अन्नदाता उचित समझें। - गुणसौरभ ने केवल इतना कहा। राजा ने अपने गले का हार, 5000 स्वर्ण मुद्राएँ और पाँच गाँव एन्द्रेजालिक गुणसौरभ को पारितोषिक स्वरूप दिए और उसे राज कलाकार अलंकरण से सुशोभित किया। ❖❖

गांधी जी का पहनावा

एक बार कस्तूरबा स्त्रियों की सभा में सफाई पर भाषण देने गई। सभा की एक गरीब स्त्री उनका हाथ पकड़कर अपने घर ले गई और बोली - 'बा मैं भी सफाई से रहना चाहती हूँ, लेकिन कैसे रहूँ? मेरे पास एक ही धोती है। जब नहाना होता है तो आधी धोती पहन लेती हूं और आधी भिगो लेती हूँ। जब वह सूख जाती है तो उसे पहन लेती हूं और शेष आधी को भिगोती हूँ। घर के लोगों से दूसरी धोती इसलिए नहीं मांगती क्योंकि वे पहले ही कर्जे में दबे हैं।' उन्होंने यह घटना गांधी जी को सुनाई तो वे भी बड़े दुःखी हुए। उसीदिन से गांधी जी पूरी धोती के बदले आधी धोती बांधने लगे। उन्होंने प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक देश के सभी लोगों को तन ढ़कने के लिए उचित वस्त्र नहीं मिलते, मैं आधी धोती ही बांधूगा । ❖❖

सादगी सरलता की मूरत पूज्य श्री जीवराजजी म.सा.
वात्सल्यवारिधी पूज्या श्री प्रकाशकंवरजी म.सा. पुण्यतिथि विशेष

- राजेश भागचंद डुंगरवाल जैन, लातूर (महाराष्ट्र)

हम क्रोध के बादल चढ़े, बरसन लगे अंगार
इस जगत में साधु ना हो, तो जल जावे संसार

साधु-संत हमारी अमूल्य धरोहर है - जिस भूमि पर संतों का अवतरण होता है, वहाँ की भूमि का हर कण पावन बन जाता है। संतो की अध्यात्मिक शक्ति से वहाँ की भूमि शक्तिशाली बन जाती है, इसिलिए मराठी में कहा गया है।

साधु संत येति घरा, तोचि दिवाळी दसरा

नायगांव (जिला पूना) में श्रीमान प्रेमराजजी कांकलिया तथा माता चंपादेवी की कुक्षी में बाल जीवराज ने जन्म लिया। परिवार के धार्मिक संस्कारों में जीवराजजी ने रुची लेकर संसार की नश्वरता को पहचान और विरक्ती के मार्ग को अपनाने का निर्णय लिया। खेलने-कूदने, खाने-पीने के 13वें वर्ष में प. पू. प्रेमराजजी म.सा. के नेश्राय में जीवराजजी ने संयम धारण किया और वे जीवराज से 'जीवराज मुनि' बन गये। चेचक की बिमारी के कारण उनकी आँख में दोष आया फिरभी धैर्यपूर्वक अनेक जैन धर्म ग्रंथों का अभ्यास, स्वाध्याय तथा अध्ययन किया। सतत साधना में लीन रहकर आत्म साधक बने। महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश में पू. श्री जीवराजजी म.सा. के चातुर्मास हुए। पू. श्री जीवराजजी म.सा. सादगी, सरलता व समता की मूरत थे। 'सेवाभाव' उनमें कूट-कूट कर भरा था। उनके सेवाभाव से प्रभावित होकर आचार्य सम्राट प. पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा ने जीवराजजी म.सा को पू. यशवंतमुनिजी की सेवा करने का आदेश दिया। पू. श्री यशवंतमुनिजी के एक पैर में तकलीफ थी, वह विकलांग थे। लगभग 17 वर्ष पू. श्री जीवराजजी म. सा. ने उनकी सेवा की। पू. श्री जीवराजजी म.सा साधूजी के 27 गुणों से युक्त थे। वे अत्यंत सादगी भरे थे। तेरखेडा (जि. उस्मानाबाद) में केवल जैन का एक ही परिवार है। वहाँ पर उनकी भावनाओं को देखकर चातुर्मास किया। पू. गुरुदेव को मराठी, हिंदी, गुजराती भाषा अवगत थी। पू. गुरुदेव मितभाषी, उर्जा पुरुष थे। उनकी वाणी पत्थर की लकीर थी। वह फकक्ड संत थे। वाणीभूषण पू. श्री ऋषभमुनिजी म.सा. तथा पू. श्री विजयमुनिजी म.सा. उनके शिष्य थे। पू. गुरुदेव कोटा संप्रदाय की आन-बान-शान थे।

साधु ऐसा चाहिए, जैसे सूप सुभाय
सार दृ सार की गहि रहे, थोथा देई उडाय

अच्छाईयों को ग्रहण कर, आडंबर रहित, सादगीमय जीवन पू. गुरुदेव का था। पू. गुरुदेव की लातूर नगरी (महाराष्ट्र) पर विशेष कृपा थी। इसलिए गुरुदेव ने लातूर नगरी में पाँच चातुर्मास किए। पू. गुरुदेव का भक्त संप्रदाय मराठवाडा क्षेत्र में बहुत बड़ी मात्रा में है। सन् 1993 का लातूर चातुर्मास पू. गुरुदेव का अंतिम चातुर्मास रहा। 30 सितंबर 1993 को लातूर जिले में जबरदस्त भूकंप आया जिससे लोग भयभीत हुए थे। उस समय भूकंप के अनेक झटके आए थे, लेकिन गुरुदेव ने कहा, लातूर शहर में कोई भी जीवित, वित्तीय हानि नहीं होगी। ठीक वैसे ही हुआ लातूर शहर को कोई क्षति नहीं पहुंची। पू. गुरुदेव ने वह प्रलयकारी भूकंप अपने पर लिया। तारीख 04 अक्टूबर 1993 के दिन पू. गुरुदेव लातूर में देवलोक हुए, उनका महानिर्वाण हुआ। सभी शोकाकुल हुए। हजारों श्रद्धालु अपने गुरुदेव के दर्शन हेतु लातूर पधारे। पू. गुरुदेव का आत्म संस्कार लातूर में हजारों श्रद्धालु गुरु भक्तों के सान्निध्य में संपन्न हुआ। श्री वर्धमान श्वेतांबर जैन श्रावक संघ, लातूर द्वारा पू. गुरुदेव का 'समाधिस्थल' निर्माण कर पू.गुरुदेव की स्मृती में 'जीवराज भवन'का निर्माण किया दूपू प्रभाकंवरजी म.सा. तथा पू. प्रकाशकंवरजी म.सा की प्रेरणासे लातूर में 'श्री गुरु गणेश जीवराज गौशाला' का निर्माण किया गया दूपू.गुरुदेव ने अपने जीवनमें अनेक क्षेत्र में स्थानक निर्माण हेतु प्रेरणा दी। कोटा संघ प्रवर्तिनी वात्सल्य वारिधी प. पू. प्रकाशकंवरजी म.सा. का भी देवलोकगमन तारीख 02-10-2017 के दिन लातूर नगरी में हुआ। इन दोनों महान आत्माओं के निर्वाण से लातूर नगरी जैनियों का तीर्थ क्षेत्र हुआ। पू. श्री प्रकाशकंवरजी म.सा का समाधीस्थल भी लातूर नगरी में 'प्रकाशधाम' के नाम से बना। साथ ही साथ पू. श्री प्रकाशकंवरजी म.सा. की संकल्पना से गौरक्षण में सप्तपदी गोमाता मंदिर - कामधेनु देवालय का सुंदर निर्माण किया गया है। यह मंदिर लातूर नगरी का वैभव है। जप सम्राज्ञी प. पू. नमिताश्रीजी म.सा. तथा प. पू. सजगश्रीजी म.सा. के पावन सान्निध्य में प.पू. जीवराजजी म.सा. पुण्यतिथी लातूर श्री संघ द्वारा 21/09/2024 को तथा प. पू.प्रकाशकंवरजी म.सा. कि पुण्यतिथी तारीख 15/10/2024 लातूर नगरी में मनाई जा रही है। ऐसे महान आत्म साधकों को भावभिनी आदरांजलि! ❖❖

हानिकारक है - जायकेदार फास्ट फूड !

- पदमचंद गांधी जैन, जयपुर (राजस्थान)

स्वस्थ जीवन व्यतीत करने की एक निश्चित दिनचर्या होती है। जिस प्रकार हमारे सभी कार्य एवं पद्धतियाँ निर्धारित की जाती है, उसी प्रकार शरीर के सन्तुलित विकास और आराम के लिए खानपान की भी निश्चित समय सारिणी बनायी जाती है कि कब खाना? कितना खाना? क्या खाना? यदि यह प्रणाली नियमबद्ध एवं सात्विक है तो जीवन निरोग एवं प्रसन्नचित्त रहता है तथा आधि-व्याधि रहित होता है। यदि इस नियमावली में असन्तुलन होता है या तामसिक खाना होता है तो शरीर बिगड़ जाता है तथा मानसिक एवं शारीरिक रोगों को जन्म देता है। लेकिन आज की भागदौड़ की जिन्दगी में लोगों के खाने की दिनचर्या तो क्या, किसी भी प्रकार की दिनचर्या निश्चित नहीं हो पा रही है। जो मिलता है, जैसा मिलता है एवं जहाँ भी मिलता है, उसे जबरदस्ती खाकर व्यक्ति अपने काम पर ध्यान देता है, न कि खान-पान पर।

शारीरिक विकास के लिए भोजन करना आवश्यक है। स्वस्थ व्यक्ति को 2400 कि.ग्रा. मात्रा कैलोरी भोजन में प्राप्त होने पर ही उसके शरीर का सन्तुलित विकास होता है। भोजन द्वारा ही व्यक्ति प्रोटीन, विटामिन, वसा, लोहा, कार्बोहाइड्रेट्स इत्यादि प्राप्त करता है, जो शरीर के विकास के लिए आवश्यक है। जीने के लिए भोजन आवश्यक है। लेकिन अधिकांश लोग भोजन के लिए जीते हैं क्योंकि वे लोग भोजन की आवश्यकता एवं महत्ता पर कम ध्यान देते हैं। गुणवत्ता को भूलकर जिह्वा के स्वाद, तरीयुक्त भोजन, अधिक चटपटा, मसाला इत्यादि पर अधिक ध्यान देते हैं। आज भोजन मात्र 'स्वाद' बन कर रह गया है।

पाश्चात्य संस्कृति ने हमारी सोच, भाषा, परिधान, आचार -विचार पर तो घातक प्रहार किया ही है लेकिन अब खान-पान पर भी प्राण घातक हमला कर रही है। 'इन्टरनेशनल फूड प्रोसेसिंग सिस्टम' प्रचारित हो रहा है। विदेशी भोजन- जिसे फास्ट फूड भी कहते हैं, तीव्रगति से प्रचलित हो रहा है। जबकि इसे हमारी जल-वायु स्वीकार नहीं करती है क्योंकि यहाँ पर केवल शीतकालीन मौसम नहीं रहता है अपितु तीनों ऋतुएँ होती है। लोगों की व्यस्ततम जीवनशैली, कार्य स्थल एवं आवास के बीच की दूरियों ने खान-पान की पद्धति को बदल दिया है। आज लोग जल्दी तैयार होने वाले आधुनिक आहार की ओर बहुत आकर्षित हो रहे हैं। क्योंकि वह सस्ता, शीघ्र एवं कहीं पर भी प्राप्त हो जाता है। इस तरह के फास्ट फूड के लिए किसी भी तरह की मेहनत नहीं करनी पड़ती है।

गरिष्ठ, तीखा, तला-भुना, डिब्बाबन्द बासी एवं अशुद्ध आहार की नई शैली इन्सानी अस्तित्व को खतरे में डालने के लिए उतारु हो गई है। इसके दुष्प्रभाव से सभ्य मानव विभिन्न प्रकार के अपरिचित रोगों के चुंगल में फँस कर छटपटा रहा हैं। हाईवे, मैन रोड़, प्रमुख चौराहे, सार्वजनिक स्थानों पर टेबल कुर्सियों की कतारें ही कतारें नजर आती है, जहाँ पर चाट, पकौड़ी, पीज्जा, बर्गर, वड़ा पाव, हॉट डॉर्ग, पैटिस, चाउमिन एवं अन्य प्रकार की विविध भोजन सामग्री के जायके लेते हुए लोगों की भीड़ नजर आती है। कई बार तो इनके लिए इन्तजार भी करना पड़ता है। इन चीजों को खाना भी उच्च जीवन स्तर की श्रेणी में आता है। ऊँचे लोगों की ऊँची पसंद मानी जाती है। ऊँची सोसाइटी के लोग इसे प्रतिष्ठा एवं सम्मान का पर्याय भी मान बैठे हैं। वे जानते हैं कि इस तरह के भोजन में पौष्टिक तत्त्वों का नितान्त अभाव है तथा मिर्च मसाले एवं चिकनाई के कारण अत्यधिक हानिकारक है, फिर भी बड़े मजे से सेवन करते हैं।

न्यू साइंटिस्ट विज्ञान पत्रिका ने तो सावधान करते हुए लिखा है कि फास्ट फूड से शरीर में मात्र मोटापा बढ़ता है तथा अनेक प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न करता है। इसके अधिक सेवन करने से व्यक्ति को नशे की तरह आदत हो जाती है तथा वसा की मात्रा बढ़ जाती है। जिससे व्यक्ति अनचाहे मोटापे के शिकार हो जाते हैं। वाशिंगटन युनिवर्सिटी के वैज्ञानिक माइकल रवाज कहते हैं कि शरीर पर चर्बी बढ़ने से मस्तिष्क पूरी तरह से लेप्टिन हार्मोन के प्रभाव से युक्त हो जाता है। साथ-साथ जैलेनिन

नामक अन्य रसायन की क्रिया भी धीमी पड़ जाती है। जिससे भूख का क्रम बिगड़ जाता है तथा शरीर में डोपामीन प्रणाली सक्रिय हो जाती है, जो नशीली दवाओं की तरह सिद्ध होती है।

डिब्बा बन्द आहारों को ताजा (कृत्रिम रूप से) रखने के लिए सोडियम बैंजोइक एसिड, मेग्नेशियम क्लोराइड, केल्शीयम साइट्रेट, सल्फर-डाई ऑक्साइड, एरो थ्रोसीन आदि मिलाया जाता है, जो बहुत ही घातक एवं नुकसानदायी है। बैंजोइक एसिड अत्यधिक हानिकारक है तथा चमड़ी को झुलसाने वाला एवं जानलेवा है। मैग्नेशियम क्लोराइड एवं कैल्शियम साइट्रेट से आंतों में घाव हो जाते हैं, मसूड़ों में सूजन आ जाती है और किडनी क्षतिग्रस्त हो जाती है। सल्फरडाई ऑक्साइड से पेट के रोगों को जन्म मिलता है तथा एरोथ्रोसीन समूचे पाचन तंत्र को हिलाकर नुकसान पहुँचाता है। इतना ही नहीं, इन आहारों से कई प्रकार के जीवाणु एवं विषाणुओं का शरीर में प्रवेश होने से संक्रमण हो जाता है। जिससे कई प्रकार के रोग, जैसे-निमोनियां, बेहोशी, तेज बुखार, हृदयाघात इत्यादि उत्पन्न हो जाते हैं।

एक कहावत है - जैसा खाए अन्न, वैसा होवे मन । यदि हम फास्टफूड का सेवन करते हैं, जो तामसिक भोजन के समकक्ष है तो वह कई प्रकार के रोगों को जन्म देने के साथ-साथ हमारे मन की प्रवृत्तियों को भी विकृत करता हैं। इतना ही नहीं, इसके नियमित सेवन से अशान्ति व उद्वेग का वातावरण एवं तनाव की स्थिति बनी रहती है तथा बार-बार उसी तरह के भोजन करने की नशैली आदत जैसी बन जाती है। इस तरह का भोजन उत्तेजना देता है और शरीर को क्षीण-जीर्ण कर विक्षिप्तता उत्पन्न कर सकता है।

भारतीय पद्धति के अनुसार रात्रि भोजन निषेध एवं सात्त्विक भोजन ही लाभप्रद है, क्योंकि वास्तव में भोजन वही होता है, जो शरीर को शक्ति देता हो, तृप्ति प्रदान करता हो। शरीर को कान्तिमय बनाने वाला एवं शरीर को सुख देने वाला हो तथा इन्द्रियों को शक्ति देकर मन को शान्त रखता हो। यही प्राकृतिक एवं सात्त्विक आहार कहलाता है। जिसमें स्वास्थ्य एवं पोषण प्रदान करने वाले तत्त्व हो, वही उपयुक्त आहार है। अतः फास्ट फूड के स्थान पर विशुद्ध भारतीय भोजन ही लाभदायक है। ❖❖

वहीं तो था

उपासनी महाराज साईं बाबा के बड़े अनुरागी थे और भक्ति मार्ग में उन्हें अपना गुरु मानते थे। वे एक श्मशान के पास किसी टूटे-फूटे मंदिर में रहते थे। साईं बाबा उस मंदिर से काफी दूर एक मस्जिद के अहाते में रहते थे लेकिन उपासनी महाराज अपने हाथों से भोजन बनाकर रोज मस्जिद में बाबा के लिए ले जाते थे और उनके खाने के बाद ही अन्न-जल ग्रहण करते थे। एक दिन साईं बाबा ने उनसे पूछा - 'तुम्हारे पास और लोग भी आते हैं उस मंदिर में।' उत्तर मिला - 'नहीं, वहां कोई नहीं आता बाबा।' इस पर बाबा कहते हैं - 'अच्छा, कभी-कभी मैं आता रहूंगा'

एक दिन सख्त धूप पड़ रही थी। महाराज भोजन की थाली लेकर बाबा के पास जा रहे थे कि रास्ते में उन्होंने भूख से व्याकुल एक कुत्ता देखा। महाराज ने सोचा गुरु को भोजन कराने के बाद ही इसे खिलाना उचित होगा। वे आगे बढ़ रहे थे कि एकाएक विचार बदला, लेकिन तब तक कुत्ता गायब हो चुका था। जब वे पहुंचे तो साईं ने कहा, इतनी धूप में आने का भला क्या काम था, मैं तो वहीं मंदिर के पास खड़ा था। उपासनी महाराज को अचानक पिछली बात याद आ गई। दूसरे दिन भोजन की थाली लेकर महाराज ज्यों ही मंदिर से बाहर निकले कि दीवार के सहारे खड़ा शुद्र दिखा। वह भोजन के लिए गिड़गिड़ाने लगा, लेकिन आज भी महाराज जी को साईं बाबा के पास पहले पहुंचना था। उस दिन साईं बाबा ने फिर कहा - 'तुमने आज फिर फिजूल तकलीफ की, मैं तो मंदिर के पास ही खड़ा था।' उपासनी जी की आंखें खुल गईं। हम हों, कोई पशु हो या शुद्र हो - सबमें एक ही परमात्मा पालन श्रेयस्कर है। भगवान तो घट-घट मे व्याप्त हैं। बस उसे पहचानो, जाने और मानो।' साईं बाबा ने उन्हें आशीर्वाद दिया। ❖❖

गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस 21 सितम्बर से 20 अक्टूबर 2024 तक

मंगलमय जन्म दिवस		मंगलमय दीक्षा दिवस	
आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा.	29 सितम्बर	प्रवर्तक श्री गणेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'	13 अक्टूबर
युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.	05 अक्टूबर	**पुण्य स्मृति दिवस**	
उपाध्याय श्री मूलमुनिजी म.सा.	07 अक्टूबर	श्री जीवराजजी म.सा.	21 सितम्बर
तपस्वीरत्न श्री सुमतिप्रकाशजी म.सा.	10 अक्टूबर	आचार्य श्री धर्मसिंहजी म.सा.	21 सितम्बर
आचार्य श्री भूधरजी म.सा.	13 अक्टूबर	आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा.	05 अक्टूबर
उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी म.सा.	16 अक्टूबर	आचार्य श्री चंपकलालजी म.सा.	11 अक्टूबर
कविरत्न, उपाध्याय श्री अमरमुनिजी म.सा.	17 अक्टूबर	आचार्य श्री भूधरजी म.सा.	13 अक्टूबर
		उपाध्याय श्री कस्तूरचंदजी म.सा.	13 अक्टूबर

हम सभी गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस तप-त्याग एवं सामायिक आराधन, धर्माचरण, आयम्बिल-एकासना दिवस के रूप में मनाकर गुरु भगवंतों के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा भक्ति का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण कर स्वयं के जीवन को सुरभित करें ।

सितम्बर 2024 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैय्यावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यों को पूर्व की भांति सितम्बर माह में सेवा प्रदान की है। हर प्रांत की वैय्यावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैय्यावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है।

वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, राष्ट्रीय योजना अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन के सामूहिक सद्प्रयासों से गुरु भगवंतों की वैय्यावच्च संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सितम्बर माह में विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 1,55,000 रुपये की धनराशि मासिक वेतन के रूप में प्रदान की है। संत-सतीवृंद के स्वास्थ्य हेतु दवाइयों के रूप में 54,000 रुपये की धनराशि योजना के माध्यम से खर्च की है। इस प्रकार कुल 2,09,000 रुपये की धनराशि वैय्यावच्च गतिविधियों में सितम्बर माह में सेवार्थ खर्च की गई। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा जैन आदि की टीम की ओर से तहेदिल से आभार।

VAYYAVACCH YOJANA ACCOUNT

SHRI ALL INDIA S. S. JAIN CONFERENCE
CANARA BANK BRANCH
GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
ACCOUNT NO - 0270101137280
IFSC CODE : CNRB0000270

❖❖

समाचार प्रकाश

आध्यात्मिक वर्शावास त्याग और तपस्या के साथ गतिमान

सूरत (गुजरात) : आचार्य भगवन ध्यान योगी, युगप्रधान पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का 2024 का आध्यात्मिक वर्षावास गतिमान हैं। प्रतिदिन 6:30 से 7:30 बजे तक आत्म-ध्यान के प्रयोग मधुर गायक निशांतमुनिजी म.सा. के द्वारा करवाये जाते है। श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनिजी म.सा. 10 से 10:30 बजे तक आचार्य उमास्वातीजी द्वारा रचित तत्त्वार्थ सूत्र का बड़ी ही गहराई के साथ अपना चिंतन प्रस्तुत कर रहे हैं। आचार्य भगवन अपनी वाणी के माध्यम से श्रावक धर्म पर विशेष उद्‌बोधन प्रदान कर रहे हैं, जिसके अन्तर्गत जीव-अजीव के ज्ञाता को श्रावक कहते हैं। धर्म के प्रति दृढ़ आस्था श्रावक का लक्षण हैं। चार-चार कारण देव गति, मनुष्य गति, नरक गति, तिर्यंच गति में जाने के बताएं हैं। अब श्रावक के बारह व्रत पर विशेष चिंतन जारी हैं। आचार्य भगवन के वचनों को सुनकर काफी लोगों ने श्रावक व्रत अंगीकार किये हैं। कुछ श्रावक-श्राविकाओं ने जोड़े सहित शील व्रत अंगीकार किये हैं।

श्रमण संघीय द्वितीय पट्‌टधर आचार्य सम्राट आनन्दऋषिजी महाराज साहब की जन्म जयन्ती देशभर में सामूहिक आयंबिल के रूप मनाई गई, उनका नाम ही ऐसा था जिसमें परम आनन्द, आत्मा का आनन्द, निज का सुख है। जैसे एक संत को निर्ग्रन्थ कहा जाता है जिसके मन में किसी प्रकार की कोई गांठ नहीं होती, जिसका मन एक छोटे बच्चे की तरह सरल, निर्मल, कोमल हृदय होता है उसी तरह आचार्य श्री आनन्दऋषिजी म.सा. का हृदय था। उपरोक्त विचार आत्म भवन में आचार्य सम्राट डॉ. शिवमुनिजी म.सा. ने पूज्य आनन्दऋषि जी म.सा. की जन्म जयंति के अवसर पर फरमाये।

'आत्मार्थी' श्री शौर्यमुनिजी म.सा. ने 8 दिन की तपस्या की। श्री लादूलाल पिछोलिया ने 8 दिन की तपस्या। अमरोली की श्रीमती चुकादेवी-श्री प्रकाशचंद पोरवाल ने जोड़े सहित 8 दिन के उपवास की तपस्या एवं बारडोली से आये श्री इन्द्रमल कुकड़ा ने 8 दिन उपवास की तपस्या। सूरत के कामरेज से हस्तीबहन ने 12 उपवास, सूरत के टीकमनगर से कांतिलालजी भोगर ने 11 उपवास, वराछा से रेखा पितलिया 9 उपवास की तपस्या। सुश्री आयुषी जैन ने अठाई के उपवास की तपस्या। अक्षर टाउन, सूरत से सुश्री रिद्धि धोका 9 दिन के उपवास की तपस्या, सुश्री महक धोका ने 8 दिन के उपवास की तपस्या। श्रीमती मधु सिंघवी ने 6 दिन के उपवास की तपस्या। कामरेज (सूरत) के श्री राहुल लोढ़ा ने 11 दिन के उपवास की तपस्या। अक्षर टाउन सूरत से श्रीमती महक जिनेश सिंघवी (पुत्रवधु श्रीमती विमलेश चन्द्रप्रकाश सिंघवी) ने आज 27 दिन के उपवास की तपस्या। वराछा रोड, सूरत से मिनाक्षी बेन (धर्मपत्नी श्री गोपीलाल दक) ने 25 दिन के उपवास का प्रत्याख्यान किया। इसी क्रम में अहमदनगर (महाराष्ट्र) से श्री आनन्द कटारिया ने वर्धमान तप आयंबिल तप की 23वीं लड़ी पूर्ण की। सभी तपस्वियों का शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन की ओर से सम्मान किया गया। श्री विकासजी कोठारी जैन, कर्नाटक युवा शाखा अध्यक्ष 9 की तपस्या, श्री आशीषजी भंसाली जैन, कर्नाटक युवा कोषाध्यक्ष 8 तपस्या, श्री प्रथमजी पितलिया जैन की 9 की तपस्या की अनुमोदना करते हैं।

21 से 24 अगस्त 2024 पर अरिहंत कृपा से शिवाचार्यश्रीजी के दिशा-निर्देशन में, अरिहंत आराधिका निशाजी के अथक पुरुषार्थ से महाविदेह की आत्म-ध्यान की साधना इस धर्म यज्ञ में सिखाई गई। इसमें साधकों के स्वरूप का बोध करवाया गया। भेद विज्ञान की साधना के प्रयोग करवाये गये, मिथ्यात्व व मोह का त्याग करते हुए अपने स्वरूप के अलावा सब पर को पर जानकर उनसे विरक्त होने की प्रेरणा दी जाती है। पिण्ड को पराया जानकर साधक वैराग्य के शुद्ध स्वरूप को समझता है। संसार के मूल कारण मिथ्यात्व व राग द्वेष से दूर रहने की कला सीखता है। जीव के स्वभावरूपी शुद्ध धर्म को जीने का पुरुषार्थ प्रारंभ करता है। धर्म यज्ञ में जीव सिद्धशिला की ओर बढ़ने का पुरुषार्थ करता है। इस धर्मयज्ञ में सूरत से ऑनलाईन

के द्वारा सीधा प्रसारण हुआ, जिसमें चेन्नई में युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी के सान्निध्य में 62 साधकों ने भाग लिया, प्रवर्तिनी महासाध्वी डॉ. सरीताजी म.सा. के सान्निध्य में वीरनगर दिल्ली में 50 साधकों ने भाग लिया, लोगोंवाल पंजाब में महासाध्वी प्राचीजी म.सा. के सान्निध्य में 21 साधकों ने भाग लिया, उदयपुर में पुराने साधकों ने पुरुषार्थ कर 59 साधकों को धर्मयज्ञ में सम्मलित किया।

आदीश्वरधाम कुप्पकलां में 58 साधकों ने भाग लिया एवं नाशिक में 46 साधकों ने भाग लिया। कुल 300 के लगभग साधकों ने इस धर्मयज्ञ में 1 दिवस, 4 दिवस एवं 10 दिवस के लिए भाग लेकर अपने आत्मार्थ की साधना का पोषण किया तथा त्याग, वैराग्य एवं वीतरागता की ओर कदम बढ़ायें। इन शिविरों में साधक श्री राजपाल जैन, साधिका सुनीताजी जैन, कान्ताजी पारख, रेणुजी जैन, सुश्री कमलेश जैन, साधिका अलका जैन आदि ने विशेष सेवा देने के लिए पहुंचे। प्रत्येक केन्द्र के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं का उत्तम सहयोग मिला। इसी प्रकार आगामी धर्मयज्ञ 20 सितम्बर से 30 सितम्बर तक होने जा रहा है, उसमें भी ज्यादा से ज्यादा भाग लेंवे। इन सभी कार्यक्रमों को शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन द्वारा संचालित किया जा रहा है। एक दिवसीय शिविर महासाध्वी डॉ. विजयश्रीजी म.सा. एवं प्रियदर्शनाजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ, जिसमें 33 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नेमीन्दजी कर्णावट के द्वारा किया गया। स्थानीय श्रीसंघ का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

क्षमा देने और क्षमता लेने का एक महान पर्व है सांवत्सरिक पर्व

दुर्ग (कर्नाटक) : पर्युषण पर्व का आज अंतिम दिवस सांवत्सरिक पर्व का स्वागत करते हुए मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न धार्मिक क्रियाओं के मध्य धार्मिक रीति रिवाज एवं संस्कारों के साथ अनेक आराधनाएं आनंद-मधुकर-रतन भवन में संपन्न हुई। साध्वी श्री सुमंगलप्रभाजी म.सा. का प्रवचन दान, लोगस्स और क्षमा विषय पर केंद्रित रहा। बड़ी संख्या में जैन समाज के बच्चे, बुजुर्ग, युवक-युवतियाँ एवं महिलाएं धर्म आराधना में जुटी रही। धर्म सभा को साध्वी सुवृद्धिश्री जी म.सा., श्री रजतप्रभाजी म.सा. ने कई धार्मिक संस्कारों का पाठ करवाया। धर्म सभा को साध्वी सुमंगलप्रभा ने संबोधित करते हुए कहा कि क्षमा देना और क्षमता लेना मानव जीवन का एक बड़ा पुरुषार्थ है। इस पुरुषार्थ को विश्व के सभी समुदाय को मनाना चाहिए। क्षमा मांगने से मन के अंदर बंधी गांठ खुलती है, क्षमा देने से और क्षमा लेने से हम अपने अंदर आत्मिक शांति का अनुभव करते हैं। क्षमा जीवन को हमेशा सदमार्ग की ओर ले जाती है, जो जितना क्षमावान होगा उसके अंदर विनम्रता के गुण अत्यधिक होंगे और विनम्र व्यक्ति ही क्षमता दे सकता है और क्षमता ले सकता है। हमें अपने जीवन के अंदर इन गुणों को समाहित करने से हम कई पाप से बच जाते हैं। धर्म सभा का संचालन संघ के पूर्व मंत्री टीकम छाजेड़ ने किया।

प्रेषक : नवीन संचेती जैन

धर्म नगरी बंगा में लगे धर्म के ठाठ : तप-जप से मनाया संवत्सरी महापर्व

बंगा (पंजाब) : स्थानीय बंगा जैन स्थानक में श्रुत वरिधि जैन भारती परम पूज्य महासाध्वी श्री मीनाजी म.सा. की सुशिष्या हरफनमौला महासाध्वी श्री समर्थश्रीजी म.सा., परम विचक्षण महासाध्वी श्री समबुद्धश्रीजी म.सा., परम सेवाभावी महासाध्वी श्री साधिकाजी म. आदि ठाणे 3 के पावन सान्निध्य में जैन धर्म के महान 8 दिवसीय पर्युषण पर्व व संवत्सरी महापर्व बड़े ही श्रद्धा भक्ति के साथ मनाये गए। बंगा जैन समाज द्वारा 8 दिन णमोकार महामंत्र का अखण्ड जाप हुआ, धर्म सभा का आगाज सामूहिक नवकार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। संवत्सरी महापर्व पर श्री अंतकृत दशांग सूत्र के आठों वर्गों को पूरा किया और कहा कि अंतकृत दशांग सूत्र ऐसा है जिससे 90 महापुरुषों का वर्णण आता है, जिसमें उन्होंने रत्नावली, मुक्तावली, वर्धमान आयंबिल तप सहित अनेक प्रकार के तपों के बारे में बताया। नगर में 1 अयिम्बिल 2 एकाशन तप मासखमन 9 व्रतों की अठाई तप और 40 एकाशन अढ़ाई तप और भी अनेक तपस्या कर आत्म कल्याण किया। इस शुभ अवसर पर सभा के संरक्षक एडवोकेट जे.डी. जैन, सभा प्रधान एस. एल. जैन, सेक्रेटरी रोहित जैन, राहुल जैन, जगदीश जैन, अश्वनी जैन, राकेश जैन संजीव जैन, स्कूल प्रिंसिपल मंजूबाला, गुरप्रीत, रजत शर्मा आदि गणमान्य उपस्थित रहे।

प्रेषक : रोहित जैन

मेडिकल कैम्प एवं अन्नदानम कार्यक्रम आयोजित

चेन्नई (तमिलनाडु) : जरूरतमंदों के लिए निःशुल्क आंखों की जांच एवं लोगों को निःशुल्क बीपी व शुगर जाँच के लिए मेडिकल कैम्प का आयोजन टी. नगर पॉण्डी बाजार स्थित राजस्थानी जैन समाज के डॉ. सी. एल. मेहता हॉल में शनिवार दिनाँक 24 अगस्त को उत्कृष्ट संथारा साधक, बारह व्रतधारी सुश्रावक स्व. मदनलाल गोठी की द्वितीय पुण्यतिथि प्रसंग पर महावीर इंटरनेशनल चेन्नई मेट्रो के संयोजन में आयोजित किया गया। कैम्प में पंजीकृत सभी लोगों के नेत्र रोगों की निःशुल्क जांच की गई एवं साथ ही शुगर एवं उच्च्य रक्तचाप की जांच भी की गई। इसमें डॉ. अग्रवाल आई अस्पताल के डॉक्टरों एवं अन्य सहयोगी चिकित्सकों ने निःशुल्क सेवाएं प्रदान की। इस प्रसंग पर राजस्थानी जैन समाज के बाहर एवं टी.नगर स्थित चारू वृद्धाश्रम में अन्नदानम भी किया गया। मैडिकल कैम्प व अन्नदानम गौतमचन्द डॉ. उत्तमचन्द अनिलकुमार दीपककुमार विशाल गोठी परिवार टी. नगर के सहयोग से आयोजित किया गया। इस मेडिकल कैम्प के आयोजन में महावीर इंटरनेशनल के चेयरमैन ज्ञानचंद कोठारी एवं उनकी टीम के साथ दिलीप जैन का सराहनीय सहयोग रहा। जिन-जिन रोगियों के नेत्र की जाँच हुई, उन्हें निःशुल्क चश्मा, व मोतियाबिंद का ईलाज किया जायेगा।

प्रेषक : डॉ उत्तमचन्द गोठी जैन

दिविशा की निकली जयकार यात्रा संघ ने किया बहुमान, परिजनों व संघजनों ने पारणा करवाया

थांदला (कर्नाटक) : जैन धर्म में तप-त्याग को सिद्धत्व का प्रमुख द्वार माना गया है। ऐसे में चातुर्मास काल में जैन समाज में तपस्या का विशेष माहौल रहता है। धर्म धरा थांदला में जिन शासन गौरव आचार्य भगवंत पूज्य गुरुदेव गणाधीश श्री उमेशमुनिजी म.सा. 'अणु' के सुशिष्य धर्मदास गणनायक प्रवर्तक बुद्धपुत्र पूज्य गुरुदेव श्री जिनेंद्रमुनिजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती अणुवत्स पूज्य श्री संयतमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 एवं पुण्यपुंज पूज्या श्री निखिलशीलाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में आत्मोत्कर्ष वर्षावास में तपस्या की बहार आई हुई है। चातुर्मास पूर्व से ही यहाँ 71 वर्षीतप आरधक वार्षिक आराधना कर रहे है। वहीं 10 मासखमण, 2 श्रेणितप, 2 लघु सर्वतोभद्र तप, 65 सिद्धितप व करीब 50 अट्ठाइया पूर्ण हो चुकी है। इसी के साथ मा. आदिश जितेंद्र चोरड़िया व श्रीमती गरिमा दिलीप श्रीश्रीमाल ने बड़े लक्ष्य के साथ 19 उपवास व श्रीमती प्रिया दिपेश शाहजी, कमलेश बाबूलालजी छाजेड़, निकुंज रंजन गादिया के 11 उपवास के प्रत्यख्यान ग्रहण किये। इसी के साथ श्रीमती पुखराज सुरेश व्होरा व श्रीमती श्रेया शैलेश कांकरिया के 112 दिन की श्रेणितप रूप उग्र तपस्या व श्रीमती किरण कमलेश छाजेड़ व श्रीमती पुष्पा पगारिया के 100 दिन की लघु सर्वतोभद्र तप की तपस्या गतिमान है।

थांदला श्रीसंघ सहित अनेक संस्था व परिवार तपस्वियों का बहुमान कर रहे है तो तपस्वी परिवार तप महोत्सव व हर्ष मनाते हुए चौबीसी प्रभावना का लाभ ले रहे है। ऐसा ही एक अवसर आया जब श्रीमती पुष्पा अमृतलाल चोपड़ा की पौती रुपाली मनीष चौपड़ा की लाड़ली बिटिया नन्ही दिविशा ने 11 दिन तक निराहार रहकर उग्र तपस्या पूर्ण की।

दिविशा के पहले उग्र तप से जहाँ परिवार में उत्साह का माहौल है वही नवयुवक मण्डल, बालिका मण्डल व अणु बाल मण्डल ने दिविशा के निवास स्थान से स्थानक भवन तक गुरु भगवंतों के साथ तपस्वी के जयकारों के गगन भेदी नारे लगाते हुए जयकार यात्रा निकाली। स्थानक भवन पर गुरु भगवंतों के मंगल प्रवचन हुए, जिसमें पूज्य श्री संयतमुनिजी म.सा. ने अन्तराय कर्म के 5 भेद में भोगान्तराय पर विस्तृत विवेचन फरमाते हुए कहा कि हमनें किसी भी जीव के भोग में व्यवधान उत्पन्न किया तो समझना हमने भोगान्तराय कर्म का बंध कर लिया, फिर जिस प्रकार प्रथम तीर्थंकर भगवान को भी संयम मार्ग पर 12 माह से ज्यादा समय तक आहार नहीं मिला वैसी स्थिति हमारी भी हो सकती है।

उन्होंनें दिविशा की तपस्या का उल्लेख करते हुए कहा कि दिविशा ने चोपड़ा परिवार में तपस्या का खाता खोल दिया है, जिससे परिवार बहुत हर्षित है। पूज्य श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने भी मंगल प्रवचन फरमाते हुए जीव को धर्म के सम्मुख

लाने में पाप भीरुता रूप गुण का विस्तृत विवेचन फरमाते हुए कहा कि कोई भी जीव डरना पसंद नही करता उसे पाप से ज्यादा साँप व उसके जहर से डर लगता है लेकिन जहर एक भव का ही हरण करता है जबकि पाप तो अनेक भव बिगाड़ देता है इसलिए पाप भीरुता कायरता नही अपितु साहसिक कार्य होता है। यही जीव को निर्भीक भी बनाता है। संचालन संघ सचिव प्रदीप गादिया ने किया।

प्रेषक : पवन नाहर जैन

पूज्य श्री प्रतापमुनिजी म.सा. की पुण्यतिथि मनाई गई

बैंगलोर (कर्नाटक) : उपाध्याय प्रवर केवल मुनि जैनोदय ट्रस्ट, शूले के दिवाकर दरबार में मौन आत्म साधक पू. श्री बसंतमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में पूज्य श्री प्रतापमुनिजी म.सा. की 39वीं पुण्यतिथि धर्म आराधना और तप-त्याग से आयोजित की गई। दादा गुरुदेव प्रताप मुनि का गुणानुवाद करते हुए श्री बसंतमुनिजी म.सा. ने कहा कि आपका जन्म राजस्थान के देवगढ़ मदारिया में हुआ। बाल्यकाल में ही उनके माता-पिता का देहांत हो गया। 12 साल की उम्र में मध्य प्रदेश के मंदसौर में आपकी दीक्षा हुई। आपने दीक्षा पश्चात प्राकृत भाषा और व्याकरण का गहराई से अध्ययन कर विरासत हासिल की। आपने अनेक शिष्यों और अन्य संप्रदाय के धर्मानुरागियों को इनमें पारंगत किया। आपके शिष्य गौतम मुनि प्रथम ने, आपके सान्निध्य में जैन धर्म एवं दर्शन का गहराई से स्वाध्याय किया। शूले, यलुगुंडापाल्यम, विवेक नगर, अलसूर आदि कई क्षेत्रों से श्रद्धालु उपस्थित रहे। विशेष रूप से साधुमार्गी संघ के पूर्व अध्यक्ष मोहनलाल चोपड़ा, रत्न हितैषी संघ के पूर्व अध्यक्ष यशवंतराज सांखला, शांत क्रांति संघ के अध्यक्ष महेन्द्र चोपड़ा, जैन योग ध्यान साधना केंद्र के डॉ. बी. रमेश गादिया, शूले कल्याण मित्र मंडल के जयंतीलाल चोपड़ा, जैन क्रॉन्फ्रेस के अशोक कोठारी, शूले जैन युवा संगठन के कमलेश चोपड़ा, संस्कार महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती चंचल चोपड़ा, क्रांति बहु मंडल की प्रतिभा चोपड़ा आदि ने संभाग लिया।

प्रेषक : बी. रमेश गादिया जैन

टी. नगर स्थानक में तप त्याग एवं अनेक प्रेरक उपलब्धियों के साथ मनाया गया पर्वाधिराज पर्युषण पर्व

चेन्नई (तमिलनाडु) : युवाचार्यश्रीजी की आज्ञा से उपप्रवर्तिनी साध्वी पूज्या श्री कंचनकंवरजी म.सा. के सान्निध्य में हुआ ऐतिहासिक आयोजन। श्री एस.एस. जैन संघ माम्बलम टी. नगर श्रीसंघ की भावपूर्ण विनती को सम्मान देते हुए श्रमण संघीय युवाचार्य भगवंत परम पूज्य श्री महेंद्रऋषिजी महाराज साहब ने उपप्रवर्तिनी आनंद श्रमणी रत्ना साध्वी पूज्या श्री कंचनकंवरजी म.सा. को पर्वाधिराज पर्युषण पर्व आराधना साधना हेतु चेन्नई महानगर की धर्म नगरी महाविदेह क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध टी. नगर जाने की अनुमति प्रदान की।

31 अगस्त को साध्वी श्री कंचनकंवरजी जी म.सा. साध्वी दिव्यायशाजी म.सा., साध्वी मलैयाश्रीजी म.सा. का युवाचार्य श्रीजी से मांगलिक ग्रहण कर प्रातः AMKM से प्रस्थान कर लगभग 300 के आस-पास माम्बलम संघ के सदस्यों की उपस्थित में जयकारों के साथ टी. नगर स्थानक में मंगल प्रवेश हुआ। महासतीजी की प्रेरणा से महापर्व के आठ ही दिन 24 ही घंटे अखंड नवकार जाप का आयोजन श्रीसंघ की तरफ से रखा गया, जिसमें श्रीसंघ के लगभग सभी परिवारों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

पर्युषण पर्व के प्रथम दिवस ही अष्ट दिवसीय 24 बड़े-बड़े त्याग एवं नियमों का संकल्प पत्र 193 सदस्यों ने भर कर दिया, जिसमें आठ ही दिन सचित पानी का त्याग, हरी का त्याग, बड़ी स्नान का त्याग, जूते चप्पल का त्याग, टी.वी, मोबाईल का त्याग, अब्रह्म सेवन, रात्री भोजन, होटल, सिनेमा त्याग के साथ ही प्रतिदिन स्थानक में आकर 5 सामायिक करना, नवकार जाप में भाग लेना, पौषध, दया, रात्रि संवर, नियम प्रमुख है। संघ के 123 श्रावक-श्राविकाओं ने तो 20 एवं 20 से ऊपर बड़े-बड़े नियम व त्याग पच्चक्खाण साध्वीजी से ग्रहण किये।

पर्युषण पर्व के पहले दिन ही उत्कृष्ट संथारा साधक बारह व्रतधारी सुश्रावक स्व. श्री मदनलालसा गोठी की द्वितीय पुण्य स्मृति प्रसंग पर गोठी परिवार के सौजन्य से श्रावक के 12 व्रत धार्मिक पुस्तक का विमोचन वीर बहन विजयाबाई कोटेचा नासिक द्वारा भगवान महावीर स्वाध्याय पीठ की तरफ से किया गया। इसी श्रृंखला में पाँचवें दिन दैनिक 14 नियम चार्ट का विमोचन एवं संवत्सरी महापर्व को श्री सुमति विशाल जैन एजुकेशनल ट्रस्ट व इंटरनेशनल महावीर मिशन पल्लावरम के सौजन्य से पीठ का 40वाँ प्रकाशन श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र का विमोचन किया गया।

प्रतिदिन साध्वी मलैयाश्री द्वारा अंतगढ़ दशांग सूत्र का वांचन व विवेचन, साध्वीजी कंचनकंवरजी म.सा. व साध्वी दिव्यायशाजी म.सा. द्वारा अलग-अलग विषयों पर सारगर्भित प्रवचन के बाद में सामूहिक जाप, दोपहर में साध्वी मलैयाश्रीजी द्वारा नंदी व कल्पसूत्र वांचन साथ ही अलग-अलग विषयों पर 8 ही दिन अनेक धार्मिक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिसमें महिला वर्ग ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

सभी तपस्यार्थी भाई बहनों, 24 संकल्प पत्र भरने वालों, भक्तामर स्तोत्र, महावीर अष्टकम स्तोत्र, आगम कंठस्थ करने वालों के साथ ही संघ के सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं, सेवकों, धार्मिक अध्यापकों एवं सेवाभावी भाई-बहनों का श्रीसंघ की तरफ से माला व उपहार सहित बहुमान किया गया। भगवान महावीर सेवा समिति की तरफ से अन्नदानम, वृद्धाश्रम में भोजन वितरण, मानव व साधर्मिक सेवा के कार्यक्रम आयोजित किये गए। महासतीजी के मुखारविंद से लगभग 1000 से भी अधिक उपवास, तेला, पचोला, अठाई, 9,11,18 उपवास, प्रतिदिन एकासन, बियासन, दया आदि के प्रत्याख्यान हुए। प्रवचन के तुरंत पश्चात महासतीजी श्री कंचनकंवरजी म.सा. उपस्थित लगभग 400 श्रावक-श्राविकाओं को 12 व्रत, 18 पापस्थान की संवत्सरी संबंधी आलोचना करवाई। आठों ही दिन स्थानक खचाखच भरा रहा। कई श्रावक-श्राविकाओं ने अन्य त्याग प्रत्याख्यान के साथ 14 नियम, जघन्य एक उत्कृष्ट श्रावक के 12 व्रत ग्रहण किये। संवत्सरी महापर्व दिवस पर लगभग 1000 श्रावक-श्राविकाओं ने स्थानक व शासन कॉलेज में संवत्सरी प्रतिक्रमण, लगभग 200 भाई-बहनों से पौषध, रात्रि संवर और 9 सितम्बर को लगभग 250 भाई-बहनों ने सामूहिक पारणा किया।

9 सितंबर को प्रातः 6 बजे प्रार्थना व सामूहिक क्षमापना के पश्चात माम्बलम संघ के लगभग 200 सदस्यों ने साध्वीवृन्द को पुनः AMKM प्रस्थान के लिए विहार यात्रा में भाग लेकर टी.नगर स्थानक से भावपूर्ण विदाई प्रदान की। महासतीजी का यह यादगार अष्ट दिवसीय प्रवास हमारे स्मृति पटल पर सदा अंकित रहेगा। अष्ट दिवसीय महापर्व आरधना में श्रीसंघ के सभी सदस्यों, महिला मंडल, कर्मठ कार्यकर्ताओं व युवा वर्ग का सराहनीय सहयोग रहा।

प्रेषक : संघ अध्यक्ष : एम. उत्तमचन्द गोठी जैन

स्थानकवासी श्रमण संघ, दुबई द्वारा पाँचवें पर्युषण महापर्व का आयोजन

दुबई, (यूएई) : श्री स्थानकवासी श्रमण संघ, दुबई द्वारा आयोजित पाँचवां पर्युषण महापर्व अत्यंत श्रद्धा और धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। यह धार्मिक आयोजन आठ दिनों तक चला, जिसमें श्रावक-श्राविकाएं पूरी निष्ठा से धर्म आराधना में तल्लीन रहे। हर दिन प्रतिक्रमण और अन्य धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जो सभी के लिए विशेष रूप से प्रभावशाली रहा। आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. ने संघ के लिए विशेष वीडियो संदेश शेयर किया।

उपाध्याय प्रवर पू. श्री प्रवीणऋषिजी म. सा. ने भी Zoom के माध्यम से दुबई श्रीसंघ के लिए जीवनोपयोगी प्रवचन दिया। हर दिन के कार्यक्रम में श्रध्द्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और धर्म की भावना को गहराई से अनुभव किया। आयोजन के दौरान धर्म की सेवा और परोपकार का वातावरण बना रहा तथा सभी ने इस अवसर का भरपूर लाभ उठाया। ममताजी जैन और धीरजजी जैन ने नियमित रूप से अंतगढ़ सूत्र वाचन का कार्य किया, जिससे श्रध्द्धालुओं को धर्म के गूढ़ तत्वों को समझने और आत्मसात करने का अवसर मिला। आठ दिनों के इस आयोजन के दौरान, संघ द्वारा प्रतिक्रमण की विशेष व्यवस्था की गई थी।

संवत्सरी प्रतिक्रमण के अवसर पर 200 से अधिक श्रध्द्धालु उपस्थित हुए और पूरी श्रद्धा से इस धार्मिक अनुष्ठान में भाग लिया। संवत्सरी प्रतिक्रमण के वाचन का कार्य ममताजी जैन, धीरजजी जैन, जैनम जैन, जीविका जैन, चिराग ब्रहमेचा और हर्षद लुंकड द्वारा किया गया। इनकी समर्पण भावना और निष्ठा ने इस अवसर को और भी विशेष बना दिया।

धर्म आराधना के साथ-साथ, बच्चों ने भी विभिन्न गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लिया और अपनी धार्मिक निष्ठा का प्रदर्शन किया। उनके उत्साह और भागीदारी ने आयोजन को और भी सार्थक बना दिया। आठ दिनों के चौविहार की व्यवस्था धीरजजी जैन की ओर से की गई थी, जिन्होंने पूरे आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्री स्थानकवासी श्रमण संघ, दुबई ने इस महापर्व को सफल बनाने के लिए सभी का आभार व्यक्त किया और भविष्य में भी ऐसे धार्मिक आयोजनों में अधिक से अधिक भाग लेने का आग्रह किया। **प्रेषक : धीरज जैन**

250 से अधिक साधक-साधिकाओं की आयंबिल तप की आराधना

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : 250 से अधिक साधक-साधिकाओं ने एक साथ मिलकर आयंबिल तप की आराधना की। सकल श्वेतांबर जैन समाज के बैनर तले आयोजित आयंबिल तप की 75वीं वर्षगांठ पर के अवसर पर की। श्रमण संघ, मूर्ति पूजक साधुमार्गी, समरथ, सुधर्म तेरापंथ शांतक्रांत सहित जैन समाज के सदस्य इस आयोजन में शामिल हुए। आज से 75 वर्ष पूर्व ऐसी साधना और आराधना दुर्ग शहर में प्रारंभ हुई थी जो आज तक हर्ष और उल्लास के वातावरण में निर्वात गति से चल रही है। जय-आनंद-मधुकर-रतन भवन के प्रांगण में आयंबिल की। 75वीं वर्षगांठ साध्वी सुमंगलप्रभाजी के मंगल पाठ के साथ प्रारंभ हुआ।

आयम्बिल में सिर्फ अनाज और दालों को पकाकर केवल बिना नमक, काली मिर्च और हींग डालकर सिर्फ उबले पानी के साथ यह लूखा सुखा भोजन दिन मे केवल एक बार मध्यान्ह के करीब किया जाता है। यह भोजन मनुष्य की जीभ की लालसा, जीभ की स्वादिष्ट भोजन करने की आदत को तोड़ने के लिए किया जाता है। कई तपस्वी कई दिनों और महीनों तक आयम्बिल करते है। **प्रेषक : नवीन संचेती जैन**

शोक समाचार

श्रीमती कंचनदेवीजी सुराणा जैन का स्वर्गवास

चेन्नई (तमिलनाडु) : सुश्राविका श्रीमती कंचनदेवीजी सुराणा जैन धर्मपत्नि श्री मिलापचंदजी सुराणा जैन चेन्नई मरुधर में पादुकला का स्वर्गवास 17-09-24, मंगलवार को हो गया। दिवंगत आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि आदरांजलि अर्पित करते हुए आत्मा के उतरोत्तर प्रगति की मंगलमय कामनाएं करते हैं।

अजमेर (राजस्थान) : वरिष्ठ सुश्रावक समाज सेवी श्रीमान मिलापचंदजी चोरड़िया जैन का 90 वर्ष की आयु में 19 सितम्बर को स्वर्गवास हो। हार्दिक श्रद्धांजलि !

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

एक सेर भजन

किसी गांव में एक बूढ़ा और बुढ़िया रहते थें दोनों बिल्कुल अनपढ़ थे मगर भगवान के बड़े भक्त। भगवान का भजन किए बिना न तो वे भोजन करते और न ही सोने जाते। उन्हें गिनती भी नहीं आती थ। तब नाप जप कैसे करे। इसलिए जब भजन करने बैठते थे, तब एक सेर गेहूं या चना तौलकर अपने सामने रख लेते। फिर नाम जपते जाते और एक दाना अलग रखते जाते। जब सब दानों को अलग कर लेते, तो समझते कि एक सेर भजन हो गया। ❖❖

अहिंसा परमो धर्मः
"जैनं जयति शासनम्"

जैन दर्शन में 'क्षमापना' का विशेष महत्व है।
क्षमा यह गुण मन की शांति, आनंद प्राप्ति, रिश्तों की बेहतरी के लिये आवश्यक है।
भारतीय सभ्यता में आत्मोन्नती, आत्मसंतुष्टि और आत्मसम्मान के लिये
क्षमाभाव को अपनाना व्यक्ती के लिये महत्वपूर्ण है।
क्षमा आत्मा की शुद्धी करते हुए मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करती है।

विगत काल में हमारे द्वारा किसी कारणवश आपके दिल को दुःख हुआ होगा तो
सांवत्सरिक महापर्व पर हम करबद्ध क्षमायाचना करते हैं।

दलीचंद जैन • अशोक जैन एवं समस्त जैन (चोरडिया) परिवार,

क्षमा भाव

भवरलालजी आणि कांताई
जैन परिवार
वाकोद-जलगाव

अनुभूति स्कूल
जैन इरिगेशन सिस्टीम्स लि.
कल्पना कणापरी. ब्रह्मांडाचा भेद करी.
जैन फार्मफ्रेश
जैन फार्म फ्रेश फूड्स लि.
A JAIN IRRIGATION COMPANY
गांधी रिसर्च फाऊंडेशन
• सत्य • अहिंसा • शांती

भवरलाल अँण्ड कांताबाई जैन फाऊंडेशन, जळगाव
करुणा.. कल्पना.. कष्ट!
कांताई नेत्रालय
आय केयर फॉर यू
आय केअर
बु टी क
जैन हेल्थ केअर सर्व्हिसेस
गौराई कृषी-तंत्र निकेतन
भाईसाहेब सुंदरलाल मल्हारा पोटेन्शियल डेव्हलपमेन्ट अकॅडमी
बहिणाबाई चौधरी मेमोरियल ट्रस्ट
जैन स्पोर्टस् अकॅडमी

जैन हिल्स्, जलगाव-४२५००१, ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

भारत • युएसए. • मेक्सिको • ब्राझील • चिली • अर्जेंटिना • यूके • आयर्लंड • उत्तर आयर्लंड • फ्रान्स • स्पेन • ग्रीस • तुर्की • रशिया • इस्रायल • चीन • ऑस्ट्रेलिया

ADVT

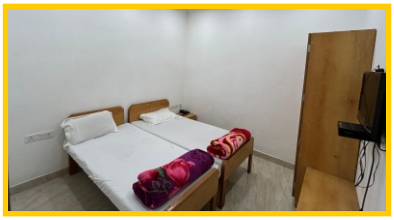

जैन भवन, नई दिल्ली में एक आधुनिक सुविधाजनक अतिथि गृह, शुद्ध–सात्विक जैन भोजनशाला 24/7 उपलब्ध , एवं साधना स्थल/ जैन स्थानक भवन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के
केन्द्रीय कार्यालय जैन भवन, 12 शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110001 में
एक आधुनिक सुविधानक अतिथिगृह ठहरने हेतु 24/7 उपलब्ध है।

यहाँ आप अपने निजी कार्य हेतु आने पर भी आसानी से ठहरकर विश्राम कर सकते हैं। यहाँ पर आपको साफ-सुथरे ए.सी. कमरों के साथ-साथ शुद्ध-सात्विक जैन भोजनशाला मिलेगी, जहां पर आप जैन भोजन के रूप में नाश्ता, दोपहर और शाम के खाने का आनंद उठा सकेंगे। पत्रिका में दिये गये संपर्क सूत्रों पर कॉल करके एडवांस बुकिंग कर आप इन सभी सुविधाओं का लाभ आसानी से उठा सकते हैं।

सभी जैन बंधु अपने परिवार सहित दिल्ली आने पर उपरोक्त वर्णित सुविधाओं का लाभ अवश्य उठायें।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

आनंदमल छल्लाणी जैन	अशोक मेहता जैन	अतुल जैन	पदमचंद कांकरिया जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा
जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 बेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित